गामक सूरत बदैल गेल

गामक सूरत बदैल गेल

जगदीश प्रसाद मण्डल

पल्लवी प्रकाशन

बेरमा/निर्मली

GAMAK SOORAT BADAIL GEL

Collection of Maithili Stories by Shri Jagdish Prasad Mandal

ISBN: 978-93-88811-58-3
दाम: 251/- (भा.रु.)

दोसर संस्करण: 2023 (पहिल संस्करण: 2020)

प्रकाशक: पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं.: 06, निर्मली
जिला- सुपौल, बिहार: 847452
मुद्रक: पल्लवी प्रकाशन (मानव आर्ट)

वेबसाइट: http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल: pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल: 6200635563; 9931654742

फोण्ट सोर्स: https://fonts.google.com/,
https://github.com/virtualvinodh/aksharamukha-fonts
आवरण चित्र: श्रीमती पुनम मण्डल, निर्मली (सुपौल), बिहार: 847452
अक्षर संयोजन: डॉ. उमेश मण्डल

कथाक सत्तैर

गामक सूरत बदैल गेल

कार्यालय बन्न भेला पछाइत बाजार करैत सात बजे घरपर पहुँचलौं। आने दिन जकाँ घरपर पहुँचते कपड़ा बदैल अपन सँझुका नित्यकर्ममे लागि गेलौं। तैबीच झोड़ा खोलि, माने बजारसँ जे चीज-वौस अनने रही, पत्नी सभ समान सैंति चाह बनबए लगली। तइ बीचक समयमे अपनो मुँह-हाथ धोइ कोठरीमे पहुँच गेलौं। साँझक साढ़े सात बजि गेल। टी.वी. खोललौं कि अपने गामक समाचार आबि गेल। शुरूमे तँ तेहेन समाचार नहि आएल जइसँ मनमे कोनो तेहेन अवघात होइत मुदा डेढ़-दू मिनट बीतला पछाइत समाचार आएल जे ललितपुर दहा गेल। टी.वी.क समाचार कानोमे पड़ल आ आँखिक आगूमे तसवीर सेहो आएल। समाचार देखि सुनि मन जेना एकाएक निष्प्राण भऽ गेल। जेना चेतनशक्ति समाप्त भऽ गेल। सोचै-विचारैक कोनो शक्तिये ने मनमे रहल। तैबीच चाह-बिस्कुट आ पानि नेने पत्नी कोठरीमे पहुँच गेली। अपन टकटकी–टी.वी. दिस जे तकैत रही–देखि पत्नी बजली-

“औझुका जे चाहपत्ती अनने छेलौं, सएह छी।”

अपने अर्द्धचेत अवस्थामे पहुँच गेल रही तँए पत्नीक बात कानमे पड़ला पछातियो सुनि नहि सकलौं, जेही अवस्थामे रही तेही अवस्थामे देखि पत्नी दोहरबैत बजली- “चाह सेरा जाएत, पहिने चाह पीब लिअ पछाइत किछु सोचब-विचारब।”

हमर बात पत्नी बुझि नहि पेब सकली, तँए अपन बातपर बात

दोहरा कऽ रखली। गामक रूप, माने टी.वी.मे जे फोटो छल, देखि मन एकाएक तेते आक्रान्त भऽ गेल जे चेतन विहीन भऽ गेलौं। सोचै-विचारैक शक्तिये क्षीण भऽ गेल। ओना, आँखिक ऊपरका भाग पत्नियोंकेँ आगूमे ठाढ़ देखि रहल छल, मुदा भीतुरका नेत्र चेतन विहीन भेने किछु ने देखि रहल छल। किछु समय पत्नी ठाढ़ भेल चेहराकेँ निहारैत रहली, मुदा कोनो सुनगुनी नहि देखि कन्हापर हाथ दए, जेना सुतलकेँ जगौल जाइए, डोलबैत पुन: बजली-

"चाह-बिस्कुट आगूमे पड़ल अछि आ अपने टी.वी.मे भुलल छी।"

कन्हा पकैड़ जे पत्नी डोलौलैन तखन सुतलेहे लोक जकाँ अपनो चेतना जगल। चेतना जगिते मनमे भेल जे पत्नीकेँ सेहो गामक समाचार कहि दिऐन। मुदा अपने मन रोकलक। रोकलक ई जे गामक समाचार सुनि जहिना अपने अचेत जकाँ भऽ गेल छेलौं तहिना जँ पत्नियोँ अखन भऽ जेती तखन हो-ने-हो कोनो तेसरे रूप बिपैतिक आबि जाए, तँए नीक हएत जे अखन कहबे ने करिऐन। ओना, कोनो समाचार केतौ छिपल रहैए जे नहि बुझती, से तँ बुझबे करती मुदा बुझैयो-बुझैमे अन्तर होइते अछि। अपन विचार तहिया कऽ समेट मनेमे रखि, विचारकेँ बहलबैत बजलौं- "तेते ने आइ दौड़-बरहा भऽ गेल जे बैसले बैसल आँखि लगि गेल।"

कहि हाँइ-हाँइ कऽ हाथ बिस्कुट दिस बढ़बैत बजलौं- "नवका कम्पनीक बिस्कुटो आ चाहो-पत्ती आइ कीनि कऽ अनने छेलौं से छी आकि पहिलुके अनलाहा छी। कहब जे एहेन विचार मनमे किए उठल? जखन घरक समान सठि जाइए तखन ने कियो बाजारे वा दोकानेसँ अनैए। ईहो विचार ठीकेँ अछि। मुदा ईहो विचार नहि अछि जे घरमे जखन एक-दू दिनक खर्चक वौस रहल आ तइ बिच्चेमे आढ़ैत भऽ जाइए जे फल्लाँ-फल्लाँ वौस नहि अछि। मुदा से सभ बात अपन नहि अछि, घरमे बिस्कुटो आ चाहोपत्ती सठि गेल छल तँए पत्नी औझुके अनलाहा बिस्कुटो

आ चाहो बनौने छेली। हलसैत पत्नी बजली-

"जहिना चाह-बिस्कुट नवका कम्पनीक छी तहिना बनौनिहारिक हाथ सेहो नवके बुझू।"

पत्नीक दहलाइत मन देखि गामक समाचारकेँ मनेमे दबने बजलौं-

"आइ तेते दौड़-बरहा, कार्यालयक काजसँ सेहो आ बाजारोमे, भऽ गेल जे थकानसँ देह भँसिआइए, तँए सबेर-सकाल भानस करू। सबेरे खाकऽ सुतब, तखन मन हल्लुक हएत।"

ओना, आन दिन जे बजारसँ सामान अनै छेलौं तइमे पत्नी-ले, माने पत्नीक बेकतीगत उपयोगक, सेहो किछु-ने-किछु अनिते छेलौं मुदा औझुका संयोग एहेन भेल जे घरक वस्तुक तँ पुरजा बनौने छेलौं, तँए मन रहल मुदा पत्नीक वस्तु बिसैर गेने, नइ अनने छेलौं। भरिसक तेही दुआरे आ कि की पत्नी बघुआएल ठाढ़े रहली। अपना मनकेँ गामक समाचार तेना पकैड़ नेने छल जे आन सभ किछु हेरा गेल। पत्नीकेँ ठाढ़ देखि बजलौं-

"अनका मनक चोटकेँ चोट नहि बुझै छी।"

पत्नियोँकेँ सुतरलैन, बजली-

"जहिना अपने अनकर मनक चोटकेँ बुझबै तहिना ने आनो बुझत।"

ओना, पत्नी ले जे किछु ने अनने छेलौं, तँए भरिसक बाजल छेली, मुदा अपन मन छाती तानि विचार देलक जे अनके-ले, माने अपन गाम-समाज ले, ने मन एते चोटाएल अछि, आकि कोनो अपना ले। अपने तँ पैंतीस बर्ख पहिनहि गाम छोड़ि चुकल छी, तखन अपन रहल की जे अपना ले चोटाएत। ने अपन घर दहाएल, आ ने खेत-पथारक जजात आ ने माल-जाल। तखन पत्नी एहेन बात किए बजली। जहिना साइकिल वा कोनो गाड़िये तेज गतिये आगू मुहेँ दौड़ल जाइत रहैए आ एकाएक खच्चा

देखने, माने आगूमे कोनो खाधि-खुधिक खच्चा देखने, ब्रेक नेने सवारीक मुँह घुमि जाइए तहिना भेल। मुँह घुमिते मनो घुमि गेल। एक तँ गामक दशा देखि-सुनि मन खसल छेलैहे तैपर पत्नीक व्यंग्य वाणक घाव तेना लगि गेल, जे तुरुछ गेल। बजलौं- “जे कहै छी से किए ने सुनै छी। अपन काजसँ मतलब राखू। मनक कोन विचारकेँ केते महत्व देल जाए, से बुझिये ने रहल छी आ अनेरे बकठाँइ पसारने छी।”

जहिना बजलौं तहिना पत्नियोँ ससैर कऽ अपन भानस घर दिस बढ़ली। गामक समाचार मनकेँ तेना हलचला देने छल जे रंग-रंगक दृश्य सभ सोझामे अपने अबए लगल। खेत-पथारक धन लक्ष्मीक गति की भेल हेतैन, जखन घरक लक्ष्मी पानिमे डुमल छैथ तखन खेत-पथारक के कहए। गामक अन्नेटा थोड़े मराएत, माल-जाल उपटने दूधो-दही तँ मरेबे करत। फल-फलहरीक गाछ तँ तेना सुखिकऽ उपैट जाएत जे व्रतो-उपासमे भेटब कठिन भऽ जाएत...।

जेना-जेना मनमे गामक दृश्य नाचि रहल छल तेना-तेना मनमे ईहो जिज्ञासा जगिये रहल छल जे रेड़ियो-टी.वी.क समाचार स्वच्छ-पवित्र नहियेँ अछि। केतौ झूठकेँ सत बना पसारैए तँ केतौ सतकेँ झूठ बना पसारैए। से नहि तँ गामक तँ अनेको बेकती ऐठाम छथिए। मोबाइलो अछिए, किए ने हुनको सभकेँ पुछि लिऐन। जिनका नहि बुझल हेतैन हुनका कहबैन जे आनो-आनसँ भाँज लगाबैथ। भाय, अपन गाम आब थोड़े रहल। पैंतीस बर्ख पहिने कलकत्तामे आबि बसि गेलौं। धियो-पुतो एतुक्के धिया-पुताक सीख-लिख पकैड़ लेलक अछि अपनो घर-दुआर बनाइये नेने छी, मुदा जे मरदा-मरदी ऐठाम (कोलकातामे) नोकरी करै छैथ, बालो-बच्चा आ घरो-दुआर गामेमे छैन, तिनका सभकेँ की होइत हेतैन।

अपन कोनो सम्बन्ध, माने ने खेती-पथारीक अछि, ने घर-दुआरसँ आ ने दियादवाद-दियादीसँ, माने ने श्राद्धमे नह-केश कटाएब बाँचि गेल

अछि आ ने पुरना कुटुम एकोटा बँचल छैथ। लऽ दऽ कऽ अपन सासुर छैथ, सेहो सभ कोलकत्तेमे रहै छैथ तँए बुझू जे अपन नैहरो आ सासुरो कोलकत्ते अछि।

पान-सातटा गौंआँ भाँजपर चढ़ला जइसँ समाचारो वृहते होइत गेल जे झूठ नहियेँ छल। मनक जिज्ञासा तेते उग्र भऽ गेल जे होइ छल अखन जँ कियो संगबे होथि तँ तुरन्ते गाम विदा भऽ जाएब। संयोग बनल, दिनेश भायसँ जखन सम्पर्क भेल तखन ओ कहलैन-

"छत्तर भाय सबतूर, जयनगर-हाबड़ा गाड़ी पकैड़ नेने छैथ, वएह कहलैन जे कोलकातामे अपने तँ किछु देखल-सुनल नहि अछि, तँए गाड़ी पहुँचैक समय स्टेशनपर रहब।"

दिनेश भाइक गप सुनि मनमे जेते शान्ति जगल तइसँ बेसी अशान्ति जगि गेल। सभ परानी छत्तर भाइक नाओं सुनि जहिना मनमे शान्ति भेल जे बेचारेक जान बँचलैन तहिना गामक दृश्य मनकेँ तेते अशान्ति बना देलक जे किछु नीके ने लागि रहल छल। घुरि-फिर कऽ मनमे गामक बाल-बच्चा, बुढ़-बुढ़ानुसक संग मालो-जाल आ घरो-दुआरक दृश्य नाचै छल जे बिनु घर-दुआरे लोक केतए रहत। केते बाल-बच्चा माए-माए करैत प्राण तियागने हएत। चिन्तासँ मन तेते भरिआ गेल जे सोचै-विचारैक शक्तिये ने रहल। संजोग बनल, भनसा घरसँ पत्नी आबि बजली-

"केहेन बाढ़ि गाममे आबि गेल अछि जे सोगाएल छी।"

मोबाइलसँ जे गौंआँ सभसँ गप-सप्प केलौं, से पत्नियोँ सुनि नेने छेली, तँए बाजल छेली। अपने तँ बाढ़िक गाम, जइ गाममे बेसी बाढ़ि अबैए, देखले-सुनल अछि जे केहेन जीवन मनुक्खक भऽ जाइए। टुटैत जिनगी आ खसैत गाछ देखि जहिना लोकक मन कलेससँ कलहन्त भऽ जाइए तहिना भेल अछि। मुदा उपाइयो तँ ओहन नहियेँ कोनो अछि जे

किछु कऽ सकब।

चारि बजे भोरमे छत्तर भाय पाँचो तूर हावड़ा स्टेशन पहुँचला। दिनेश भाय अपन पितियौत भाए, श्यामक संग स्टेशनेपर रहैथ। जहिना दिनेश भाइक नजैर छत्तर भायपर छेलैन, तेना छत्तर भाइक नहियेँ छेलैन, मुदा सोल्होअना नहियेँ छेलैन सेहो बात नहियेँ अछि। चारि-छहअना छेलैन्हे। दस-बारहअना जे नइ छेलैन तेकर कारण छत्तर भाइक मनमे अनेको छेलैन। पहिल छेलैन, जे बेर-बिपैतमे अपनो परिवारक लोक छोड़ि दइए, दिनेश तँ सहजे गाँआँ छी। तैसंग दोसर विचार ईहो उठै छेलैन जे अपने तँ ओहन नहि भेल अछि मुदा गौंआँ-घरूआ मुहेँ सुनिते आबि रहल छी जे शहर-बजारक रहनिहार, हेराएल-भोथियाएल गौंआँ-घरूआकेँ देखि या तँ अढ़ दबि जाइए वा ठोह फाड़ि मुहेँपर कहैए, तोरा नइ चिन्है छिअ।

एक तँ बाढ़िक बिपैतिक मारल छत्तर भाइक मन, तैपर अनभुआर जगहमे प्रवेश भेने आरो मरियाएले भेल जा रहल छेलैन। मुदा ओही मरणशील विचारमे जीअनशील विचार सेहो जगलैन। जगिते मनमे उठलैन जे जखन मोबाइलसँ दिनेशसँ सम्पर्क भेल आ ओ कहि देलक जे स्टेशनपर रहब तखन सोझा-सोझी एते झूठ केना बाजत। केतबो दुनियाँक आकि समाजेक परिवेश किए ने बदैल गेल अछि मुदा लोको-लाजक तँ अपन महत छइहे।

गाड़ीसँ उतैरते छत्तर भाय चकोना होइत स्टेशनपर तकलैन कि श्यामपर नजैर पड़लैन। श्यामकेँ देखिते छत्तर भाइक विचारक धरतीसँ ओहने सुगन्ध निकललैन जेहेन रौदसँ जरल जमीनमे अकासीय वृष्टिक बून पड़ने सुगन्ध निकलैए। विश्वस्त मन गवाही देलकैन जे दिनेश अपने नहि भेटल तँ नहि भेटल, श्यामो कि कियो आन छी। तैबीच दहिना हाथ उठबैत छत्तर भायकेँ शोर पाड़ैत श्याम बजला- "छत्तर भैया, यो छत्तर भैया, ओतइ रहू। दिनेश भायकेँ बजेने अबै छिऐन।"

दिनेशक नाओं सुनि छत्तर भाय पत्नी दिस ताकि बजला-

“मिथिलाक धरती धरती छी, ओ ने कहियो बाँझ भेल हेन आ ने कहियो बाँझ हएत। ई दीगर बात जे माटिये जरि कऽ पाथर बनि पहाड़ जकाँ ठाढ़ो अछि आ केतौ माटिसँ दोखरा बाउल बनि सेहो चमैकते अछि।”

दिनेशक संग श्याम छत्तर भाय लग पहुँच बाजल-

“भैया, गाम दिस ने अखन अधरतिया कहियौ कि भोर मुदा शहर-बजारमे भिनसर भऽ गेल, नीक हएत जे अहीठाम मुँह-हाथ धोइ किछु खइयो लिअ आ चाहो पीब लिअ।”

छत्तर भाय बजला-

“तोरो बात मानि लइ छिअ। तीनू भाँइ संगे-संग चाहो पीबह आ बच्चा सभकेँ बिस्कुट दऽ दहक।”

केहनो बेर-बिपैत किए ने पड़ल रहए मुदा शब्दोक तँ अपन महत् अछिए। श्याम बाजल-

“भाय साहैब, सबहक हिसाब जोड़ा गेल आ भौजीकेँ किए छोड़ि देलिऐन?”

दिनेशोकेँ सुतरलैन, बजला-

“छत्तर भाय अर्द्धनारीश्वर सेहो छैथ किने; अपनेमे हिसाब जोड़ि बजला अछि।”

स्वाति नक्षत्रक बून जहिना केतौ वंशलोचन तँ केतौ कपूर तँ केतौ मोती गढ़ि लइए तहिना दुनू परानी छत्तर भायकेँ भेलैन। चाह पीला पछाइत दिनेश श्यामकेँ कहलैन- “बौआ, टेम्पूमे सभकेँ बैसा बुधियार भाय ऐठाम चलि जा।”

ओना, छत्तर भाइक मनमे लघुअंश शंका जगबे केलैन। शंकाक

अनेको कारण मनमे उठि रहल छेलैन जे बात दिनेश सेहो बुझलैन। अपन वस्तु-स्थिति स्पष्ट करैत दिनेश बजला-

"छत्तर भाय, परोछक बात छी तँए बेसी नहि कहब मुदा एते कहैमे कनियोँ हिचक नहि अछि जे बुधियार भायमे अखनो बेवहारिक विचार छैन्हे। अपनो कहबे करै छैथ, जेते सेवा करै छी तेते तँ मैथिल छीहे किने। केकरो डिगडिगिया पीटने होइ छै, ओ तँ होइ छै जिनगीक रस्तामे भटकैतकेँ बाँहि पकैड़ रस्तापर आनि स्वतंत्र रूपेँ स्वतंत्र बनैक कामना करैत आगू बढ़ाएबसँ.., मुदा से सभ नहि, अखन सात परानीक परिवार अछि आ तीनियेँटा कोठरी अछि, अहाँक संग परिवार अछि तँए एक-आध घन्टा ठहरैक प्रश्न नहि अछि मुदा ओइठाम सभ बेवस्था बुधियार भाय केने छैथ तँए बेसी नीक हएत।"

एक तँ ओहुना सभ दिन सबेरे उठिते छी तोहूमे आइ आरो सबेरे उठल छेलौं। टेम्पूकेँ आगू बढ़बैत दिनेश मोबाइलसँ कहि देलक जे 'सभ तूर छत्तर भाय छैथ', दिनेशक फोन कानमे पड़िते पत्नीकेँ बजा पुछलयैन-

"खाइ-पीबैक समान की सभ अछि?"

भाय मिथिलाक सभ दिनसँ एहेन चलैन रहल अछि जे बहरबैयाक सेवा कोन रूपेँ हुअए, तँए सेवाक सभ विचारपर नजैर राखब पुरुखक काज छीहे।

चाह-पानक अन्तिम हिसाब जोड़िते रही कि टेम्पू गेटपर लगि गेल। टेम्पूक संग श्यामकेँ विदा करैत बजलौं-

"छत्तर भाय, दुनू भाँइ एक कोठरीमे रहब, धिया-पुता सभ धिया-पुताक संग दोसरमे आ भौजी दुनू दियादिनी एकठाम तेसर कोठरीमे रहती।"

दुनू हाथक इशारा दैत छत्तर भाय बजला-

"कोनो हर्ज नहि।"

सभकेँ अपन-अपन ठौर पकैड़बैत छत्तर भाय बजला- “बड़ सुन्नर घर-दुआर बनौने छह, बुधियार..!”

ओना, गामक सभ किछु बिसैर गेल छी मुदा बाबाक अमलसँ जे चालीस हाथक दलान देखैत एलौं से अखनो ओहिना मनमे जीवित अछिए। अपन कमाईसँ अपने बंगालमे मिथिला बनौने छी। कोलकाता सन शहरमे, जैठाम जनसंख्याक घनत्व बहुत बेसी अछि, लोक सड़कपर सुतैले मजबूर अछि तैठाम अपन मैथिलक लेल ओहन बेवस्था रखने छी जे महीनो दिन जँ कियो रहि कऽ अपन रोजी रोजगारक भाँज लगौता तइले रहै-खाइक कोनो चिन्ता नहि। भगवान जेकरा देने छथिन ओ चरि-चरिटा कन्यादान अपना हाथे करोड़ो गनि करै छैथ। एते तँ भगवान पक्षमे छथिये जे ओ करोड़ अपन अपने रहल, माने कन्यादान नइ रहने। ..मने-मने अपने सोची जे कहू ई की भेल? अखन गामक बाढ़िसँ जान बँचा कऽ छत्तर भाय एला अछि गामक गप-सप्प करता आकि घर-दुआर निहारै छैथ। मुदा लगले अपने मन रोकलक जे लोकक मन फूलोसँ हल्लुक होइए, कखन ओ खुशी हएत आ कखन बगैद जाएत तेकर कोनो ठेकान नहि। बजलौं- “भाय साहैब, पहिने ई कहू जे एते दूरसँ एलौं हेन, हाथ-पएर धोइ बैसब आकि पहिने नहाएब-सोनाएब?”

छत्तर भायकेँ जेना भक्क खुजलैन। तहिना बजला- “अखन भोर भेबे कएल अछि तखन नहाइ-सोनाइक कोन धड़फड़ी अछि। मुहोँ-कानमे पानि लइये नेने छी।”

तैबीच जेठकी बेटी रूक्मिणी चाह-पानि-बिस्कुट नेने पहुँच गेल। एक तँ ओहुना छत्तर भायकेँ दू दिनसँ अन्नक भेँट नहि भेल छेलैन, तैपर अपन डुमैत घर-आँगन मनकेँ तेना मथि रहल छेलैन जे होशे उड़ि गेल रहैन, जइसँ रूक्मिणी हाथसँ बिस्कुट लैत हाँइ-हाँइ खाए लगला। ओना, अपने जीवनानुभव अछिए जे आगूमे अन्न देखि भूखल केना लपकैए आ नाङ्गट केना वस्त्र देखि तरसैए। तँए विचारमे मोड़ दैत बजलौं- “भाय

साहैब, गामक हाल-चाल पछाइत कहब, पहिने अपन आ परिवारक कहू?”

अपन बात सुनैत-सुनैत छत्तर भाय चाह पीब पानो मुँहमे लऽ नेने छला। गालक तरमे पान-जरदाकेँ दाँतसँ घेरि बाजए चाहलैन कि एकाएक दुनू आँखिसँ नोर खसए लगलैन। नोराएल अँखिमने छत्तर भाय बजला-

“बौआ बुधियार, सात घर दुश्मनोकेँ भगवान ओहन गति नहि देथुन जे देलैन।”

छत्तर भाइक मुँहक बात सुनि अपन जिज्ञासा आरो उग्र बढ़ल। बजलौं- “से की छत्तर भाय?”

जहिना गुड़-घाओक मुँह फुटने विकार निकलैकाल सुआस पड़ैत रहैए तहिना छत्तर भायकेँ सेहो अपन मनक भरास निकालैत भेलैन। बजला-

“बौआ, तूँ ते बहुत पहिने गाम छोड़ि चलि एलह तँए बच्चा महक बात बिसैर गेल हेबह मुदा अपने तँ पचहत्तैर बर्ख ओही गाममे जन्मसँ अखन धरि बितेलौं अछि।”

ओना, अपना धुनियेँ छत्तर भाय बाजि रहल छला। मुदा अपना मनमे तरे-तर हुअ लगल जे दुनू हाथे छत्तर भायकेँ उठा माथपर चढ़ा ली। मुदा, मुद्दा तँ मुद्दा छी। बजलौं-

“भाय साहैब, अपने तँ..?”

हमर अधखड़ुआ बातमे छत्तर भायकेँ की भेटलैन से तँ छत्तर भाय बुझलैन मुदा अपन बामा बाँहिपर दहिना हाथ मलैत बजला- “बौआ, जवानी पानिमे नहि फेक देने छी, अपनो ले आ समाजो ले बहुत किछु केने छी।”

छत्तर भाइक बात सुनि अपन जिज्ञासा आरो उग्र भेल। उग्रानु अन्वेशी बनि जिज्ञासाकेँ जगबैत बजलौं- “से की छत्तर भाय?”

छत्तर भाय बजला- “कमलाकातक गाम रहने खेती-पथारीक हालत खराबे छल, सत-सत बेर धान रोपै छेलौं आ तैयो दहाइ छल मुदा बाप-दादाक घराड़ी लोक पेटक खातिर छोड़ि देत, सेहो तँ नीक नहियेँ भेल, तँए गामक बेसी परिवार महींस पोसि गुजर करैत आबि रहल छैथ। जइसँ आन-आन गामक अपनो जाति-बेरादर गामकेँ महिंसवारक गाम आ पोसनिहारकेँ महींसवार कहै छला। जइसँ एकठाम बैस खाएबो-पीब बन्न छल आ कथो-कुटुमैतीमे घटबिये छल। खुलि-खुलि आन गामक लोक बजै छल जे ओइ गाममे बेटी देब गोबरबिछनी, गोबरपथनी बनाएब भेल।”

छत्तर भाइक बात सुनि अपने मने-मन क्षुब्ध हुअ लगलौं जे जीवनक एक-एक क्षणक मोल अछि, मुदा ओ केकरा ले अछि..? बजलौं-

“भाय साहैब, जाबे तक निसचित आशा अपन नइ भऽ जाएत ताबे तक अहाँ ऐठाम रहू। कियो भोज-भातमे अपन कमाइ लुटबैए हम अपन सेवे कर्ममे लुटाएब। दू दिनक थाकल अहूँ छी, पहिने नहा-धो, भोजन करू। खूब मनसँ अराम करू पछाइत गप-सप्प होइत रहत।”

हमर बात सुनि छत्तर भाय बजला-

“बौआ बुधियार मन बौड़ा गेल अछि। जिनगी भरि अही अवस्था ले ने संजोगलौं, मुदा सभ नष्ट भऽ जाएत। केकरो मात्र घरेटा छै, कमा-खा गुजर करैए आ कियो अपन जिनगी गामक मान-प्रतिष्ठासँ लऽ कऽ गामक उन्नति धरि करैए।”

छत्तर भाइक छाती (हृदय) जेना छँहोछित भऽ फुटि गेल होनि तहिना राँइ-बाँइ होइत जा रहल छेलैन। एक संग अनेको प्रश्न तीनू कालक–माने भूत, वर्तमान आ भविष्यक–विचार मनमे दौड़ए लगलैन। जहिना भूतमे मन भुतिआइ छेलैन जे जइ गामकेँ चौबगली गामक लोक

महींसवारक गाम आ पोसनिहारकेँ महींसवार कहै छल, आइ वएह गाम सभ तरहेँ सम्पन्न भऽ अपनाकेँ ठाढ़ केलक अछि, से बात जँ बिनु बुझल लोक (नव पीढ़ीकेँ) केँ नहि कहि देब, तखन पितर-पितराइनिक क्रिया-कलाप केना बुझि पौत। वर्तमान आगूमे ठाढ़ भऽ नाचि रहल छेलैन जे जे बीतल से भूत भेल, आइ केना जीब, तइले परियास करू जे हँसी-खुशीसँ समयक गतिक संग चलि मुक्ति हएत। तेसर दिस मन वौआइ छेलैन जे गामक इतिहासे टा नहि मेटाएत वर्तमानो मेटा जाएत। किए लोक एहेन गाममे रहए चाहत। जे सुतली रातिमे सुतले-सुतल जलप्रवाह भऽ जाएत। जखन जाने नहि तखन जहान की..? तही बीच सुलेखा, माने छत्तर भाइक पत्नी सुधाकेँ संग केने, सुधा, माने पत्नी, पहुँचैत असीरवाद दैत बजली-

"बौआ बुधियार, अहाँ कहुना भेलौं तँ पुरुख पात्र भेलौं। मुदा..?"

सुलेखा भौजीक बात सुनि पत्नीकेँ कहलयैन-

"भौजीकेँ भरि मन जलखै करा देलिऐन कि नहि? अखनो हिनका धन्यवाद दइ छिऐन जे छत्तर भाइक बाँहि पुड़ै छैथ।"

हमर बात सुनि छत्तर भाइक छँहोछित भेल हृदय जेना समटा लगलैन। बजला-

"बौआ बुधियार, भने भौजाइयो सोझेमे छथुन आ भावोओ छथुन। तीनू गोरे कुशल-समाचार करह आ हम कने कुरसियेपर ओङ्गैठ अराम करै छी।"

छत्तर भाइक बात सुनि अपना मनमे उठल जे भने छत्तर भाय, अपन छुट्टी लऽ लेलैन। नइ तँ तेहेन विचलित मन भऽ गेल छैन जे बिपैतिक धार बहा देता। तइसँ नीक जे भौजीक मुहसँ सुनब। बजलौं-

"भौजी, छत्तर भाइक मन बेसी आक्रान्त भऽ गेल छैन, तँए हुनका छोड़ि दियौन। अहाँक अपन जे आँखिक देखल-सुनल अछि, बस तेतबे

अहाँ कहू।"

दू-दिनसँ मारल-मराएल सुलेखाक मन अपन आगूमे अपन परिवारकेँ देखि रसे-रसे फल प्लावित होइत-होइत सुख-दुखक बीच अपनाकेँ ठाढ़ कऽ नेने छेली। हृदय खोलि बजली-

"बुधियार बौआ, अहाँ कहुना भेलौं तँ भाइये-बन्धु भेलौं, अहाँ लग जँ खुलि कऽ नहि बाजब तँ दुनियाँमे दोसरठाम केना बाजि पएब। जे देखल अछि भोगल अछि आ स्मरण अछि तइ बजैमे केतौ धाक नहि अछि।"

बजलौं-

"जखन गाममे छहर टुटल तखन अहाँ की करैत रहिऐ?"

सुलेखा-

"सुतल रहिऐ कि खूब जोरसँ लोक हल्ला केलक। हल्ला सुनि सभकेँ जगेलौं। हल्ला बढ़ले जाइ छल आ पानिक जे खसान (छहरसँ निच्चाँ) छल तैठामसँ सेहो हहाइक आवाज होइ छल। घरसँ सवतूर निकैल सड़कपर एलौं। ताबे गामक लोक सेहो हलचला गेल।"

पड़ले-पड़ल छत्तर भाय बजला-

"बौआ बुधियार, गुण भेल जे पनरह दिन पहिने दुनू महींस बेच नेने छेलौं, नइ ते सभ किछु चलि जइतए।"

बजलौं-

"पछाइत की भेल भौजी?

सुलेखा बजली-

"गामक लोक पच्छिम मुहेँ भागए लगल। ऊँचका जमीन देख-देखि लोक रूकल। कोठाबला सभ ऊपर चढ़ि गेला। ताबे भोर भऽ गेल।"

सुलेखा भौजीक बात सुनि मने-मन विचारए लगलौं जे केतौसँ

केतौ घटना छिड़िया जाइए, से नहि तँ नीक हएत जे सुलेखे भौजीकेँ कहिऐन जे एकहरफी अहाँ बाजि जाउ। तइमे जँ केतौ शंका हएत तँ छत्तर भायकेँ कहबैन जे भाय नीक जकाँ नहि बुझि पेलौं। अपने तँ विचार सोझे चलि जँ केतौसँ नहि औत तँ दुनू परानीमे रगड़ हेतैन, तइ बीचसँ निचोड़ निकैल जाएत। बजलौं-

"भौजी, जेना-जेना अखन तक भेल अछि से सभटा एक दिससँ बाजि चलू।"

जहिना सोगाएल, पीड़ाएलकेँ मनक सोग-पीड़ा सुननिहारक संग बँटनिहार भेट जाइ तखन ने मनमे खुशी उठैए तहिना सुलेखा भौजीकेँ सेहो भेलैन। बिहुसैत बजली-

"बौआ, जे छहर (धारक छहरक) गामक मुराम जगहपर टुटल, से जहिया बनए लगल तइ दिनक बात कहै छी।"

सुलेखा भौजीक बात सुनि चकोना भेलौं। चकोना होइक कारण भेल जे नीक काज तँ सहजे नीक फल देत तँए नीक भेल। एहनो नीक तँ समयक संग नीकसँ अधलो बनियेँ जाइए। सुनै छी जखन बाबा बैशाख मास, चौरी धानक कमठौन करि एगारह-बारह बजेमे घुमैथ तखन मुइलहा खुरचन नेने आबैथ, आ पहिने ओकरा छोट-छोट फोड़ि सिलौट वा जाँतपर गोलाइम कऽ बटन (बुटाम) बनाबैथ आ ओइमे टकुआरीसँ भूर सेहो करैथ, मुदा आजुक परिवेशमे ओहन काज समयोचित थोड़े हएत। समयोचित तँ छहरक ई हेबा चाहिऐ जे जे सुरक्षाक दृष्टिसँ बनौल गेल आ अछियो, तेकरा आरो मजगूत करैत सिमेन्टेड ने हेबा चाहिऐ। मुदा अछि की?

बजलौं-

"पुरान बात छी तँए नीक जकाँ मोन अछि किने?"

सुलेखा भौजी बजली- "बौआ, ओहिना आँखिक आगू चमकैए।

बाढ़िसँ इलाका तबाह होइत रहै छल। देश आजाद (स्वतंत्र) भेने अपन शासन बनल। कोसी, कमला इत्यादि अनेको उपद्रवी धार सभमे बान्ह, छहर बनल। बाढ़िक सुरक्षा भेने गामक कृषिमे उन्नैतिक संग गामक रूपो-रंग बदलल। जहिना इज्जतक दृष्टिसँ छहर बनल तहिना गामक इज्जत बढ़ल। ओना, थोड़-थाड़ बाढ़ि आबिये जाइए।”

बजलौं-

“पहिलुका बातकेँ छोड़ू, अखन जे सोझामे अछि, बस तेतबे अखन बाजू।”

सुलेखा भौजीक आत्मबलमे मिसियो भरि कमी नहि छेलैन किए तँ आन तँ आने भेला जे अपनो पुरुख-पात्र लग महिला (कोनो उमेरक किए ने होथि) बजैमे धकमकेबे करै छैथ मुदा से सुलेखा भौजीक मनमे नहि छेलैन। तेकर कारण छेलैन जे जहिना दू गोरे पुरुख पात्र, माने छत्तर भाय आ हम तहिना सुलेखा सेहो सुधा संग छेली। सुलेखा भौजी बजली-

“जेना-जेना दिन उगैत गेल तेना-तेना बाढ़िसँ गाम डुमैत गेल, चारि बजैत-बजैत जखन घरक चार लग पानि पहुँचल तखन गामक आशा तोड़ि गामसँ विदा भेलौं। अखन एतबे रहए दियौ। खेला-पीला पछाइत फेर गप-सप्प हेतइ।”

❑

शब्द संख्या : 3340, तिथि : 07 सितम्बर 2020

दोसर रस्ता नहि

मास दिन पहिने सुशीलाक बी.ए.क रिजल्ट निकलल। रिजल्ट सुनला पछाइत सुभद्र काका अपन परिवारक संग अपन काजक–भारक काजक–हिसाब मने-मन जोड़ि खुशी भेला। खुशी होइक कारण भेलैन जे जहियेे सुशीलाक जन्म भेल तहिये मनमे रोपि नेने छला जे बेटीकेँ बी.ए. पढ़ाएब। अखन तक गाममे एहेन पाँचो-दस परिवार नहि भेल अछि जे कौलेजक शिक्षा पौलक अछि, तैठाम ऐसँ बेसी तँ वएह ने मनमे रोपि सकैए जेकरा रोपैक लीलसा तँ छै मुदा करै-धरैक हिसाब बुझले ने छइ। अपन बेटी–सुशीलाक बीच अपन सम्बन्धक हिसाब जखन सुभद्र काका जोड़लैथ तँ बुझि पड़लैन जे अपन कर्तव्यमे केतौ कमी अखन तक नहि अछि। एक तँ परिवेश ओहन बनि गेल अछि जे तीन-मसुए बेटी माए-बापक हाथे बलि चढ़ए लगैए आ ता-जिनगी चढ़ैए जा-जिनगी आँखि तकैए। एहेन परिवेशमे सुरक्षित ढंगसँ बेटीकेँ स्नातक बनाएब हँसी-ठट्ठा नहि छी। भलेँ शिक्षाक स्तर नीच-मुहेँ किए ने भेल हुअए मुदा जीवनक गति थोड़े नीच-मुहेँ भेल अछि। नहियोँ चाहने ऊपरे-मुहेँ बढ़ि रहल अछि। भलेँ ओ सु-मुँह हुअए वा कु-मुहेँ किए ने हुअए।

सुभद्र कक्काक मनमे उठलैन, बेटीक जीवनक प्रति जे दायित्व अछि ओ पहिने बेटीए लग अपन विचार किए ने राखी, जे बुच्ची माता-पिताक पुनीत कर्तव्यक श्रेणीमे बेटा-बेटीक बिआह-दान सेहो अछि, पढ़ाइयो (स्कूली) समाप्त भेलह आ उमेरोक हिसाबसँ बिआह करै-जोकर

तँ भइये गेलह अछि...। सुशीलाक आगू विचार रखैसँ पहिने सुभद्र काका अपन विवेक जगौलैन। अनेको प्रश्न मनमे टपैक-टपैक खसए लगलैन। पहिल खसलैन- आइ धरि समाजमे एहेन चलैन नहि रहल जे बेटीकेँ पुछि वैवाहिक यज्ञ शुरू भेल...। सुभद्र कक्काक मन ठमकलैन। ठमकैक कारण भेलैन आजुक परिवेशमे जैठाम बेटीकेँ उमेरेक हिसाबसँ अधिकार बढ़ि रहल अछि तैठाम बी.ए.पास बेटीकेँ ऐसँ बिमुख करब नीक नहि। अखन जे समाज बनि गेल अछि ओ सभक-सभ कुटिचाल करैबला अछि, अपन-अपन कर्तव्य-बोध जेना बुझिये ने रहल अछि...।

एकाएक सुभद्र कक्काक मनमे जगलैन जे किए ने सुशीलासँ पहिने पत्नीसँ विचार लऽ ली। मुदा लगले अपने मन रोकलकैन जे बेटीक संग अपनो तँ सम्बन्ध अछिए। जँ से नहि अछि तँ केना जीवनक सही रस्तापर बेटीकेँ आनि अखन तक निमरजना केलौं हेन। ..दरबज्जापर असगरे बैसल सुभद्र काका सुशीलाकेँ शोर पाड़लैन। केकरो मनमे 'शोर पाड़ैक' शंका किए हएत। अपन बेटी छिऐन, सभ दिनक जे चलैन रहल अछि तही अनुकूल ने भेल।

दरबज्जापर आबि सुशीला ठाढ़ होइत बाजल-

"की कहलौं।"

सुभद्र काका बजला-

"बैसह। तोरासँ किछु गप-सप्प करैक अछि। बी.ए. पास करा अपनासँ ऊपर पहुँचा देलियह। पिताजी मैट्रिक तक पढ़ौलैन। अपने मिडिल पास छेला, जहिना खाढ़ीए-खाढ़ी शिक्षा बढ़ल तहिना जिनगियो ने खाढ़ीए-खाढ़ी बढ़त। बच्चा बनि सभ जन्म लइए, बच्चासँ टेल्हुक बनैए आ टेल्हुकसँ सियान जहिना बनैए तहिना ने तोंहू उन्नैस-बीस बर्खक अवस्था तक पहुँचलह। पढ़ल-लिखल सेहो भेलह। तँए तोरेसँ पुछै छिअ जे समाजक रीति-रिवाज देखिये रहलह हेन, तोहर बिआह तँ करबे

अछि। तइमे तोहर की विचार?”

जहिना सुभद्र काका अपन विचार रखलैन तहिना सुशीला बाजल-

“पिताजी, पाछूसँ अबैत जे बेवहार अछि ओइमे सुधारक जरूरत अछि। बजैक क्रममे सभ बजै छैथ जे अपन रीति-रिवाज सनातनी ढर्रासँ चलि रहल अछि मुदा सनातनी ढर्रा छी की, तैठाम भकुआ जाइ छैथ।”

सुशीलाक बातपर सुभद्र काका ओते धियान नहि देलैन जेते धियान दइबला प्रश्न छेलैन। तेकर कारण भेलैन जे अखन जे समाजक बेवहार लीढ़ियाएल पोखैरमे लीढ़िया कऽ जहिना गजपट भऽ जाइए तइसँ अलग भऽ अपन परिवारकेँ जीवित रखैक प्रश्न सुभद्र कक्काक मनमे छैन। तँए ओम्हरसँ सुशीलाक मुँहकेँ मोड़ैले बजला-

“बेटी, परिवारमे आंगिक सम्बन्धक हिसाबसँ जे विचारधारा चलि रहल अछि ओइमे सुधारक जरूरत अछि।”

सुशीला-

“से की पिताजी?”

सुभद्र काका बजला-

“समयानुसार, माने समयक गतिक अनुसार सभ किछु बदैल रहल अछि। नीकसँ नीको भेल जा रहल अछि आ नीकसँ अधलो तँ भेले जाइए। कहबह जे नीकसँ नीक आ अधला एकाएक केना भऽ जाइए। एकाएक तँ नहि होइए, मुदा नीकसँ अधला बनैक दू रस्ता बनि गेल अछि। पहिल बनल अछि नीकक ठीक विपरीत, माने जइ सीमापर नीक ठाढ़ अछि ओइठामसँ विपरीत दिस मुड़ब आ दोसर भेल अछि सुधरैक विकसित प्रक्रिया।”

सुशीला बाजल-

“नीक जकाँ नहि बुझि पेलौं पिताजी?”

बेटीक विचार सुनि सुभद्र कक्काक मनमे मिसियो भरि नहि एलैन जे अपना डिग्रीसँ, माने पढ़ाइक डिग्रीसँ सुशीलाक डिग्री नमहर अछि तँए ओकरा हुतकारि किछु कहिऐ। ईहो बात तँ सत् अछिए जे सुशीलाक जहिया जन्मो ने भेल छेलै तइसँ पहिनहि मैट्रिक पास केलौं आ जेते सुशीला जन्म लेलाक पछाइत डेगे-डेग आगू बढ़ल तइसँ नमहर डेग तँ अपन भइये गेल छल किने, तखन केना एहेन विचार नीक हएत। किछु अछि तँ सुशीला बाले-बोध अछि, तँए किए ने अपन माइये-मात्रिकक बात कहिऐ जे बुझैमे असान हेतइ। अपन मातृ बोध जँ मातृ भाषामे भेटए तँ ओ उच्च कोटिक भेबे कएल। सुभद्र कक्काक अपन मन मानि गेलैन जे किए ने सुशीलाकेँ अपन माइये-बापक झगड़ा सोझामे राखि निपटबैले कहिऐ। सुभद्र काका बजला-

"बुच्ची, बीस-पचीस दिन भेल हएत, ताबे तोहू गाम आबि गेल छेलह, दुनू परानीमे किए कहा-कही होइत रहए से ते तूँ नइ बुझलह। ओना, तोहूँ पैछला जे धारणा परिवार सभक बनल आबि रहल अछि तइ अनुकूल निर्णय केलह, तँए गलती होइतो एकरा हम गलती नहि मानै छी। मुदा दुनू बेकतीक रक्का-टोकीकेँ तूँ बुझि निष्पक्ष भऽ बजितह तँ अनेरे ने विचारपर भार पड़ैत। से तँ केलह नहि, माए-बापक कहा-कही बुझि मुँह मोड़ि लेलह।"

सुशीला बाजल-

"एते चूक जरूर भेल। शान्तचित तखने शान्त कर्म कऽ सकैए जखन शान्त मन रहतै।"

खाएर जे अछि मुदा दुनू परानीक, माने सुशीलाक माता-पिताक बीच जे रक्का-टोकी भेल सएह किए ने बाजी। सुभद्र काका बजला-

"बेटी, बीसम-पचीसम दिन तोहर माए नैहर जाए चाहलैन, बड़-बढ़ियाँ। नैहर छिऐन, किए ने जेती। बजली जे साल भरिपर नैहर जाएब,

धिया-पुता ले किछु सनेस नेने जेबइ। कहलयैन, तइले मनाही के करैए। लगले मुहेँ बजली जे हाट-बजार करिते छी, तँए झिल्ली आ कुटुर-मुटुर नेने आएब। चारिम दिन जाएब।"

सुभद्र काका बाजियो रहल छला आ सुशीलाक मनो टोबि रहल छला जे हमरा बातकेँ सुशीला कोन रूपेँ बुझि रहल अछि। मुदा बेचारी तँ हेरा गेल छल। एक पीढ़ीक बीच जे बदलाव भेल अछि, तइमे झिल्ली-कुटुर-मुटुर तँ आब म्यूजियममे सुरक्षित ढंगसँ रखैक भइये गेल अछि, सुशीलाक मनकेँ नीक जकाँ सुभद्र काका नहि टोबि सकला। तँए विचारकेँ उनटबैत सुभद्र काका बजला-

"बुच्ची, झिल्ली-कुटुर-मुटुर बुझलहक किने?"

अपन शब्दकोष देखैत सुशीला बाजल-

"नाम सुनने छी मुदा धियानसँ ने खेनहि छी आ ने विचारनहि छी।"

सुशीलाक बात सुनि सुभद्र काका मने-मन विचारलैन जे अनेरे दोसर दिस बहकल जाइ छी। विचारकेँ समटैत बजला-

"बुच्ची, जखन तोहर माए तोरा सभ जकाँ रहैथ तखन, माने तहिया यएह झिल्ली-कुटुर-मुटुर धिया-पुताक सनेस छल। मुदा आजुक परिवेश तँ आगू बढ़ि गेल अछि। हम सएह कहिऐन मुदा ओ अपन नैहरक बात धेने रहली। खाएर जे भेल से भेल, जहिया भेल तहिया भेल। अखन जे परिवेश बनि गेल अछि, आइ तइ अनुकूल चलब ने नीक भेल।"

पिताक बात सुनि सुशीला मानि गेल जे पिताजी समसामयिक विचार देलैन अछि। बाजल-

"नीक तँ सएह हएत।"

सुशीलाक विचारमे निष्पक्षता देखि सुभद्र काका अनुकूल वातावरणक अनुमान केलैन। बजला- "बुच्ची, अखन तक जे परिवार

सभक, माने खाढ़ीक हिसाबसँ, धारणा बनल अछि, जइ अनुकूल बेटा-बेटीक बिआह-दानमे पशुवत बेवहार अछि, माने जहिना बिक्रीक समय पशुक दाम-छाप पोसनिहर करैए तहिना बेटा-बेटीक बिआह-दानमे माता-पिता करै छैथ, तइमे किछु सुधारक जरूरत अछि।"

सुशीलाक जिनगीक, पारिवारिक जिनगीक पहिल काज, माने जीवनक जे प्रमुख काज अछि तइमे पहिल काज, तइसँ पहिने बाल-बोध बुझि पुछबो उचित नहि आ काजो कोनो तेहेन नहियेँ होइए। ओना, आजुक परिवेशमे बिआह-दानसँ पूर्व पढ़बो-लिखबमे जँ बच्चाक आकर्षणक विचार लेल जाए तँ ओहो अनुकूले कहल जा सकैए। ओना, अखन धरिक जे इतिहास रहल, माने पढ़ै-लिखैक जे चलैन रहल अछि, माने नहि पढ़ब-लिखब, तइमे ओते महत नहि रखै छल, मुदा आजुक परिवेश ओहन बनले जा रहल अछि जे पढ़ै-लिखैक क्रममे सेहो बाल-बच्चासँ राय लेबाक चाही। सुशीला बाजल-

"पिताजी जे विचार कहलौं अछि ओ ऐतिहासिक रूपमे ने किए अछि?"

एकाएक सुभद्र कक्काक मनमे अपन चूक नचलैन मुदा अपनो निर्णयमे तँ कोनो मानसिक द्वेष नहियेँ छेलैन। अपन जीवनक सफाइ दैत सुभद्र काका बजला-

"बाउ, आइ तूँ स्नातक भऽ आगूमे बैस गप-सप्प करै छह, मुदा पाछू उनैट ताकह जे तोहर माइयो अहिना पिताक (नानाक) सोझमे बैस गप-सप्प करै छेलखुन। पैछला इतिहास नकारात्मक रहल ऐगला तँ सहजे भविष्य छी। जेकरा दिशा-बोध नहि हएत ओ अनुमानो नहियेँ कऽ सकैए।"

अपन ऐतिहासिक भँमर दिस जखन सुशीलाक मन भरमए लगल तखन अपना अपरिपक्व जकाँ बुझि पड़ए लगलै। तहूमे एहेन विचार

अखन केना मनमे उठैत जे आमजनक बीच शासन सत्ता केना बनल आ ओ कोन रूपेँ परिपक्क होइत गेल आ अखन कोन रूपमे स्थित अछि। केना मनमे उठैत जे पारिवारिक जीवन की छल आ कोन रूपेँ आगू मुहेँ बढ़ल। ई तँ सबहक मनमे अछिए जे सदिकाल अगमुहाँ डेग उठए मुदा बन्ध-बन्धन केना अनुकूल परिस्थिति पेब मजगूतो भेल आ प्रतिकूल परिस्थितिमे टुटबो कएल..!

एक जिज्ञासु राहगीर जकाँ सुशीला बाजल-

“पिताजी, भलेँ कौलेजक अध्ययनसँ डिग्री भेट गेल, मुदा जहियासँ गाममे रहए लगलौं अछि तहियासँ जे गामो आ परिवारोमे रूप-रंग देखैत आबि रहल छी, तइमे अपनाकेँ सोल्होअना अनाड़ियेपन बुझि पड़ैए।”

सुशीलाक बात सुनि सुभद्र कक्काक मन मानि गेलैन जे भलेँ सुशीला उमेरोक हिसाबसँ आ डिग्रीयोक हिसाबसँ ऊपर पहुँच गेल, मुदा पारिवारिक जीवनक लेल अखनो अल्हर अछि। विचारकेँ समैटते मनमे भेलैन जे जेहेन विचार व्यक्त करैक जरूरत अखन सुशीलाक आगूमे अछि तेहने आन-आन पात्र बना कथा गढ़ि सुना दिऐ आ पुछिऐ जे एहेन परिस्थितिमे बेटीक की रौल हेबा चाही। मुदा अपने मन रोकैत कहलकैन, कथा-कहानीक प्रभाव जेते लोकक विचारमे पड़ैए तइसँ बहुत बेसी प्रभाव परिवारो वा व्यक्तिगतो जीवनानुभवमे पड़ैए। व्यक्तिगत भेल कोनो बच्चाकेँ कोनो किताब पढ़ैक मन होइ आ अपना कीनैक साधन नइ होइ तइसँ ओइ बच्चापर जेहेन प्रभाव पड़ैए ओहन प्रभाव कथा-पीहानीसँ थोड़े पड़ैए। जँ से पड़ैत तँ अखन जे पिता-पुत्रक बीच परिस्थिति बनि गेल अछि ओ थोड़े बनैत। श्रवण कुमारक कथा किनका नहि बुझल छैन...। सुभद्र कक्काक मनमे उठलैन- भरिसक जिनगीए बेठेकान भऽ गेल अछि। जइसँ बाटे-घाट अन्हरा गेल अछि। कहब से की? अपन पूर्वज कहने छैथ किने जे मनुक्खक जिनगी साए बर्खक अछि, गाइयक जिनगी अठारह बर्ख आ कुत्ताक बारह बर्ख। तैठाम साठि बर्खक अवस्थामे नोकरीसँ

सेवा-निवृत्त होइ छी, बाँकी चालिस बर्ख जे खाली समय अछि तइमे सोल्होअना बैसारी हएत किने। बुझले अछि जे काँच आम जहिना चटनीक विन्यास भेल आ केरा जहिना फल रहितो तरकारीक, तेहने फल ने भेल सक्षम जिनगीक अधकच्चू फल। खाएर जे भेल जेतए भेल। अपन हृदयक बात खोलनिहार व्यक्ति किए ने दोसरक हृदयक बात छीन सकै छैथ। सुभद्र कक्काक मन सकताए लगलैन। बिच्चेमे दोसर मन जोर मारि कहलकैन, किए ने अपन जीवन-दशा बेटीक आगूमे राखि बेटीए-सँ पुछिऐ जे बौआ, तोहीं कहह जे तोरे सभक उमेरक ने अभिमन्यु (महाभारतक अर्जुनक बेटा) रहैथ, ओ जखन अपन जिनगीक बान्हकेँ एकाएकी सुधारए लगला तखन केना ओझरा कऽ जान गमौलैन। ..मुदा तइ सभ विचारकेँ मनेमे अँटकारि सुभद्र काका बजला-

"बाउ, आठ बीघा जमीनक परिवार अपन अछि। अपन ई आर्थिक ओकाइत भेल। अपन परिवारक जे काज हएत, ओ अही अनुकूल हएत। तइ हिसाबसँ अपन मन असथिर भऽ गेल अछि जे जहिना तोरा पढ़बैमे कोनो ताका-हेरी नइ करए पड़ल, दहाइ बरखो आ लाखो रुपैआक काज भेल, तहिना आगू जे तोहर बिआह करब अछि तहूले विचारि नेने छी। सरकारक नियम जे होइ मुदा बेटा-बेटीक प्रति पिताकेँ अपन नैतिकताक नियम सेहो अछिए। तँए जमीन जे अछि, ओइमे तोहर जेते अंश छह तइसँ काज निपैट लेब। मुदा दूटा प्रश्न उठत। पहिल उठत- भाए-बहिनक सम्बन्धक। जेना भैयारीमे दियादी देखै छहक, मुदा ओइसँ महत्वपूर्ण अछि जेकर जीवन निर्माण करए जा रहलौं अछि, ओकर विचार जानब। जेकरा जीवनक मूल प्रश्न सेहो कहल जाएत।"

पिताक बात सुशीला चुपचाप सुनि रहल छल। सुभद्र काका अपन विचारपर अँटैक गहींर आँखिये सुशीलाक भावोत्तेजनाकेँ आँकए लगला।

ओना, सुशीला अखन ओहन भावुक नहि बनि सकल छल जे

विचार संग अपन भावना व्यक्त करैत। अखन सुशीला सादा कागज सदृश्य अछि, माने प्लेन पेपर जकाँ, जैपर जेहेन रंगक कलमसँ लिखल जाएत तेहने जीवनक रंग-रूप तैयार हएत। सुशीलाकेँ सुभद्र काका सोल्होअना नहि आँकि पेला जे सुशीला अपन जीवनक संग केतेक सुशील अछि। आजुक जे परिवेश बनि गेल अछि जे भाय यौ, जीवनक विचार पछाइत करब, पहिने बिआहक करू..! एहेन विचार बाल-वर्गपर ओहिना नइ पड़ल अछि, प्रवुद्धजन बेसी दीक्षा बाँटि रहल छैथ आ शिक्षाक विचार पछाइत करता। पुन: दोहरबैत सुभद्र काका बजला-

"बाउ! जीवन छी, तँए जीवन जकाँ जीवन केना बनए ई मूल प्रश्न भेल। असथिरसँ विचारह। अइले कोनो बेसी धड़फड़ी नहियेँ अछि।"

पिताक बात सुनि सुशीलाक हृदय ओहिना हारि रहल छल जहिना अनभुआर वा सुनसान जगहपर कियो पुछैत जे भाय, फल्लाँ गामक रस्ता केमहर देने अछि, तहिना होइ छल। मुदा अपने उत्कण्ठित विचार मनमे जगलै जे दुनियाँ दुनियाँ छी, तीत-मीठ दुनू अछि। सेहो कहब जे कम-बेसी अछि ईहो बात नहियेँ अछि। एकरत्ती तरपट बुझि पड़ए, जेना-पड़ैए अयोध्यावासी जे बड़ छोट ओ एकावन हाथ आ लंकाक सभसँ छोट उनचास हाथ। बस एतबे अन्तर अछि। तहूमे देखिते छी जे छीपगरहाकेँ हाथो नमहर होइए आ बौनाकेँ छोट होइते अछि। खाएर जे अछि। सुशीलाक मन सकताए लगल। सकताइक कारण भेल जे अखन पिताजीक सोझमे छी, अखन जे कोनो तरहक बाधा सोझामे आबि रोकत तँ किए ने पितेजी सँ पुछि ओइ बाधाकेँ दूर करी। एहनो तँ सम्भव अछिए जे अपने वौआइते रहि जाइ। दुनियाँमे माता-पिता सिर्फ जन्मदाते नहि पहिल गुरु सेहो छैथ। ओना, दुनियाँ गुरुए-गुरुआइनसँ भरल अछि, से अखन नहि। अपन पूर्वज ऋषियो जेना दत्तात्रेय सभ दहाइक-दहाइ गुरुक शिष्य सेहो भेबे कएल छैथ। एते तक कि कुत्तोकेँ गुरु मानने छैथ। सुशीला बाजल- "पिताजी, जे समस्याक समाधानक बात कहलौं तैपर

अखन तक नजैर नहि गेल छल! तँए कहब जे कौलेजमे एहेन जीवनक, माने एहेन समस्याक सिनेमा नइ देखलौं, से तँ देखबे केलौं। सइयो बिआह, सइयो घटकैती तँ देखबे केलौं अछि, मुदा ओ देखलौं सिनेमाक पर्दापर। मुदा जीवन तँ जीवन छी..?"

सुशीलाक गढ़ित विचार सुनि सुभद्र काका मने-मन प्रसन्न भऽ रहल छला। कहू जे धिया-पुता अपनो परिवारकेँ नहि बुझि-परेख रहल अछि। सुभद्र काका बजला-

"बाउ, जे बात पुछलियह तेकरा आधार बना अपनो विचारह। अपने अनेको विचार भेटतह। अखने आठ दिनक समय दइ छिअ, आठम दिन तोरा ऐ प्रश्नक जवाब देबह। तइ बीचमे जे आनो-आन प्रश्न मनमे जगतह सेहो सभ लिखिकऽ रखियह। सभ प्रश्नक जवाब देबह।"

ऐ काजक, माने सुशीला बिआहक, मुख्य दुआर सुभद्र काका अपना संग सुशीलाकेँ सेहो देखि रहल छला। एक जीवनक प्रश्न तँ अछिए। बिरहाइत-वौआइत सुशीलाक मनकेँ देखि सुभद्र काका पुन: बजला-

"बाउ जहिना जीवन अछि तहिना ने दुनियोँ अछि, सभकेँ अपन-अपन जीवन ओइ दुनियाँमे ताकि-ताकि निकालए पड़ै छै। अखन एतबे बुझह जे आगूक जे काज अछि, माने तोहर बिआह, तइले दुनियाँ बड़ीटा ने अछि। अखन तोरासँ पहिले-पहिल ऐ दुआरे पुछलियह जे अखन तोहूँ कौलेजसँ स्नातक भऽ निकललह अछि, तोरा शोध करैक अधिकार तँ भइये गेल छह, माने कोनो विचार वा काजकेँ शोधन करैक तँए आब तोहूँ ने बाँहि पुरैक संगी परिवारमे भेलह। आब तोरा माएकेँ पुछबैन, ओहो ने जन्मदाते छथुन। तइले तोरो कोनो रोक नहि, हमरा कहला पछाइत तोहूँ माएसँ एकान्तमे परिवारक मुख्य काज सभपर नजैर अँटका विचार करिहह। तेकर पछाइत दूटा भाइयो ने छेथुन। ओकरो सभकेँ कहबै जे

बौआ, सुशीला तोरे बहिन छिअ, तँए जेहेन जीवन सुशीला रहल अछि, तेहने जीवन बिआहक पछातियो बनल रहै, जइसँ बराबरीक सम्बन्ध बनल रहतह। ओना, जँ अपन माता-पिता रहितैथ तँ पहिने हुनका आगूमे तोरा बजा पुछितिऐन मुदा से तँ छैथ नहि। मुदा तोहर नाना-नानी तँ जीवित छथुन, तँए पछाइत हुनको सभसँ विचार करैत काजकेँ सम्पन्न करब।”

पिताक बात सुनि सुशीलाक मन बिनु रंग चढ़ौल ऐनाक शीशा जकाँ चमैक उठल। जहिना समुद्रोमे आ बाढ़िक समय गामो-घरमे पानिक लहैरियो आ बेगो (धारा) चलए लगैए तहिना सुशीलाक मनमे सेहो विचार एकाएक चलए लगल। कौलेजक अपन ओइ संगी-साथीपर नजैर पहुँचल जेकर बिआह भेल छल। मनमे उठल- किए ने ओकरो सभसँ अपन-अपन जीवनानुकूल विचार बुझि ली। आब कि कोनो ओ जुग-जमाना रहल जे सुग्गा-मेना चिट्ठी-पतरी पहुँचौत। आब तँ राड़ी-डबहारीक बीजफूल जकाँ मोबाइलिक समाचार अकासे-अकास चलैए। आठ दिनक समय भेटल अछि। सिर्फ समाचारे नहि, पढ़ल-लिखल लोकक विचार सेहो एबे करत। विचलित मन सुशीलाक सुचलित भेल जइसँ विचारमे हर-हर हरिक दृश्य उभरए लगलै।

आठ दिनक समय देला पछाइत सुभद्र कक्काक मनमे उठलैन, जखन बेटा अपन पक्षक अछि तखन माइयेक पक्षकेँ किए ने अगुआबी। बेटीक प्रति माइये ने श्रद्धन्विति रहै छैथ तँए नीक हएत जे पहिने माइयेकेँ, माने सुशीलाक माए आ अपन पत्नीक, अगुआ नैहर पठा कहि दिऐन जे शुक्र दिन आबि रहलौं हेन। सुशीलाक पढ़ाइ समाप्त भऽ गेल, अट्ठारह बर्खसँ ऊपर उमेरो भऽ गेल, तँए बिआह करब परिवारक ऐगला मुँहरीक काज बनैए। तही सम्बन्धमे विचार करब अछि। सुभद्र कक्काक मन मानि गेलैन जे विचारकेँ क्रियाशील बनबैक सोझ दिशा भेल।

सुशीलाकेँ सुभद्र काका कहलखिन-

“बुच्ची, अखन बाल मन छह, तँए जँ फूलो तोड़ैले जाइ तँ फुलवारीमे देखि लिऐ जे कोन फूल कोन देवताकेँ चढ़ैए आ अपन कोन देवता छैथ, तहीटा ले ने तोड़बह आकि सौंसे फुलवारीक फूल तोड़ैक भार तोरे छह।”

सुशीलाकेँ लगसँ हटला पछाइत सुभद्र काका आँगन गेला। बिआह-पद्धतिक विचार आँगनोमे होइए आ दरबज्जोपर होइए। बेटीक बिआहक विचार आँगनमे नीक भेल। बेटाक दरबज्जे नीक भेल। खाएर जे भेल, जेतए भेल, से तेतए भेल। पूबरिया घरक ओसारपर पीढ़ी खसा बैइसैत सुभद्र काका सोनिया काकीकेँ आँखिक इशारासँ बजौलैन। जखने सुभद्र काका पीढ़िया खसा बैसला कि काकी चौंक गेल छेली। सोनिया काकीकेँ लगमे अबिते सुभद्र काका बजला-

“सुशीला बिआहै-जोकर भऽ गेल, अपना परिवारमे ने अपने सभसँ ऊपर भेलौं, माने सीढ़ीनुमा वा पीढ़ीनुमा, मुदा अहाँकेँ तँ माता-पिता जीबै छैथ। तँए ओत्तै चलू आ सभ विचार कऽ लेब।”

भाय, पत्नी सोल्होअना नोकरनियेटा नइ ने होइ छैथ, विचारक विचारिणी सेहो छथिए किने। सोनिया काकी बजली-

“कहिया जाइक विचार अछि?”

सुभद्र काका बजला-

“अपने शुक्र दिन आएब। अहाँ आगू भऽ कऽ दू दिन पहिने चलि जाउ।”

सोनिया काकी बजली-

“पहिने मोबाइलसँ जानकारी पठा दइ छिऐ, पछाइत जाएब। मुदा जँ पुछि दैथ जे अपन परिवारक की विचार अछि तखन की कहबैन?”

अपन विचार स्पष्ट करैत सुभद्र काका बजला-

“आजुक परिवेशमे किसानक दुरगति भऽ रहल अछि। मुदा से सभ अखन एतबे जे खेत बेचब छोड़ि अपना दोसर कोनो रस्ता नहि अछि, तँए... ।”

❑

शब्द संख्या : 2808, तिथि : 13 सितम्बर 2020

विचारधाराक भथान

बदलैत राजनीतिक परिवेश देखि जीयालाल कक्काक मन छुब्ध भऽ रहल छैन, मने-मन सोचि रहल छैथ जे ई केकर दिनक पइर भऽ गेल। घर केनउ आ दुआरि केनउ सएह भऽ रहल अछि। मुदा कइये की सकै छैथ। अपन साठि बर्खक उमेरमे चालीस बर्ख समाज सेवामे लगेला पछाइत, पैछला साल अपने आपकेँ ओइ लोअर प्राइमरी स्कूलक शिक्षक जकाँ, जे चालीस बर्ख सेवा केलापर जहिना सेवा-निवृत्त होइ छैथ तहिना अपनाकेँ एक जीवनसँ दोसर जीवनक बाटपर ठाढ़ भेल जीयालाल काका मने-मन सोचि रहल छैथ जे दू जीवनक जोड़क बीच ठाढ़ भेल छी, तँए उनटबो तँ असान नहियेँ अछि। ओना, सुनैट कऽ चलबो ओते असान नहि, मुदा कोनो गाममे पाँच हाथक घर बना बसिते ने कियो ओइ गामक अधिकार लइए जे हमहूँ अही गामक बशिन्दा छी। जाति कोनो किए ने होइ मुदा गौंआँ तँ भेबे केलौं किने।

जेते पाछू उनैट-उनैट जीयालाल काका तकै छला तेते रंग-रंगक विचार सेहो मनमे जगिये रहल छेलैन। मोन पड़लैन अपन जीवनक ओ दिन जहिया 'इमानदारीसँ सेवा'क व्रत लेलैन। ओना, इमानदारीक सेवा व्रतक अनेको विचार अछि मुदा से सभ अखन नहि छेलैन, अखन एतबे छेलैन जे अपन विचारधारानुकूल अपन जिनगी बनबैत चलब। यएह गाम छी जइ गाममे समाजक ओहन विचारधारा जोड़ पकड़लक जे आइ ओ गाम केतौ-सँ-केतौ पहुँच गेल रहैत, मुदा से विचारधाराक द्वन्द्वमे तेना

ओझरा गँड़ि-मुराह बनि गेल अछि जे मुँह केनउ आ नाङ्गैर केनउ भऽ गेल छै, जइसँ बेठेकान भइये गेल अछि। तहीकाल तीस बर्खक जीवन-संगी, माने जखन जीयालाल काका राति-दिन समाजक बीच एकबट्ट केने सेवामे लागल छला तखन शुभलालसँ भेँट भेलैन। भेँट भेला पछाइत शुभलाल अखनो ओहिना शुभलाल अछि जे भेँट भेल दिनमे रहैन। शुभलालकेँ देखिते जीयालाल काका बजला-

"शुभलाल, आब तँ हम सभ पुरान घर भेलौं तँए एकटा कोण झड़ले रहैए, मुदा अपन गाम की छल आ आइ की भेल अछि। जेना नव दिशाक विचारधारा जन्म लेलक तेना आइ प्रौढ़-जवान भेल रहैत, से भऽ गेल अछि गँड़िबहू।"

शुभलाल शुरूहेसँ ठाँइ-पठाँहि बजैबला लोक, मुदा बुझैक जेते विचारक ओकाइत रहतै आ तइ बीच जे विचार रहतै, सएह ने बाजत। शुभलाल बाजल-

"काका, जेतबो दिन अपना सभ धोइ-माँजि कऽ जिनगी रखलौं तेतबो दिन लोक निमाहि कऽ देखा दिअ ने।"

शुभलालकेँ दोसर दिस भँसैत देखि जीयालाल काका जहिना महाभारतक रणभूमिमे, अर्जुनक रथक छोर अपना हाथसँ तानि रोकि कृष्ण कहै छेलखिन तहिना विचारकेँ रोकि बजला-

"शुभलाल, हम गामक बात कहने छेलियह।"

सोझमतिया शुभलाल बाजल-

"काका, पैछला तँ नइ बुझल अछि मुदा ऐगला तँ बुझल अछिए। तइ हिसाबे अपन पुरुखक गाम बनि गेल छल आ आइ मौगीक गाम भऽ गेल।"

जीयालाल काका बजला-

"तइले तोरा तामस किए उठै छह, कियो करत अपन आकि

अनकर?”

तीस बर्खक संगी शुभलाल अपन सम्हार करैत बाजल- “काका, मोन अछि कि नहि जे गामक पँच-पँच साए नौजवान अपन दुखनामा सुनबैले सरकारी कार्यालय जाइ छल, आ अपन हक-हिस्सा ले जहलो जाइले तैयार रहै छल।”

ओना, शुभलालक मुहेँ रंग-रंगक विचार ओहिना निकलल छल जेना बोन-झाड़क फुलवारीमे अनेको रंगक फूल एकोठाम फुला अपन परिचयो दइए आ संग मीलि मालो बनिते अछि। जैठाम सुव्यवस्थित ढंगसँ एक रंगक फूलकेँ माला बनौल जाइए, तैठाम भलेँ रूप बदैल जाइत होइ मुदा तँए ईहो तँ नहियेँ कहल जा सकैए जे सहरगंजा–अनेको रंगोक आ रूपोक–फूलक माला नइ बनि सकैए। सेहो तँ बनियेँ सकैए आ बनितो तँ अछिए। शुभलालक मुहसँ निकलल तीनू विचारक फूलकेँ समेट माला बनबैत जीयालाल काका बजला-

“शुभलाल, ओना उमेरमे तूँ हमरासँ कमसँ कम बीस बर्खक छोट हेबह मुदा जहियासँ दुनू गोरेक बीच सम्बन्ध बनल तहियासँ केहेन बुझि पड़ै छह?”

अपना जनैत जीयालाल काका शुभलालकेँ दिनानुदिनक विचार मनमे राखि बाजल छला जे शुभलाल नहि पकैड़ पौलक। मुदा सोल्होअना किछु ने पकैड़ पौलक सेहो बात नहियेँ अछि। मछवार जकाँ किलो भरिक रौह तँ नहि पकड़ाएल, पकड़ा गेल किलो भरिक भाकूर। दुनू संग मिलि रहैबला, माने पोखैरमे रौह-भाकुरक थड़ संगे देल जाइए, मुदा एकटा जहिना सुअदगर अछि तहिना दोसर बढ़नमा, माने वजनक हिसाबसँ बेसी बढ़ब, सएह भेल शुभलालकेँ। बाजल-

“काका, मोन अछि कि बिसैर गेलिऐ जे भरि दिन टाउन-थानामे अराड़ि करिकऽ बैसलौं तँ साँझमे बदामक भूजा खुअबैत आश्वासन भेटल

जे अहाँक कहब उचित अछि, ऐ विचारकेँ हम आगू बढ़बै छी।"

ओना, जीयालाल काका शुभलालक बीतल दिनक घटनाक बात सुनि थोड़ेक चौंकला मुदा लगले मन कहलकैन, ओ बीतल दिनक भेल। अखन जे परिवेश बनि गेल अछि ओ एहेन बनि गेल अछि जे जेहने हल्लुक अछि तेहने भारी अछि। एहेन परिवेशमे अपनाकेँ केना ठाढ़ केने रहब तइ दिस शुभलालकेँ झुकबैक मूल बिन्दू जीयालाल कक्काक मनमे छेलैन। एक तँ शुभलाल तखनहि समाजक बीच पहुँच गेल छल जखन ओ मात्र सोलहे बर्खक रहए। गामक लोको जेना अखन गाम छोड़ि बाहर जा रहल छैथ तेना तइ दिनमे नहि जाइ छला। नव-नव देश स्वतंत्र भेल छल। स्वतंत्रताक सेहो अनेको रूप अछि मुदा से अखन नहि, अखन एतबे जे जे पीढ़ी स्वतंत्रताक दिन देखलैन ओ अखन केहेन छैथ। मनुखक जिनगीक जे गति अछि तइ गतिक अनुकूल जीवन चलै, यएह ने भेल स्वतंत्र जीवन। आइ जइ वृद्धक बुढ़ापा कष्टमय छैन तइमे, माने ओइ तरहक जिनगीमे अधिकांश पढ़ल-लिखल समाजक ओ वर्ग छैथ जे उच्च कोटिक रहला अछि। शुभलालक तीनू विचारकेँ, माने 'अपना सभ जकाँ धोइ-माँजि चलब', 'पुरुखक गाम मौगीक गाम बनि गेल अछि' आ 'विचारधाराक भथान केतए भऽ रहल अछि', केँ एकसंग माला बना शुभलालक गरदैनमे पहिरबैत जीयालाल काका बजला- "शुभलाल, अखन अगुताइमे नइ ने छह?"

शुभलाल अपन जिनगी शान्तमय बना जीब रहल अछि। तँए अगुताइ कथीक। भेल तँ बारह घन्टापर भोजन आ तीन घन्टापर चाह, तेतबे ने। अपन टेरही देखबैत शुभलाल बाजल- "अपन राजमे जखन बसल छी तखन अपना मने-विचारे ने चलब, तइमे अगुताइ कथीक रहत।"

शुभलालक ओजपूर्ण विचार सुनि जीयालाल काका मने-मन विचारलैन जँ टेढ़-टूढ़ भऽ चलब तखन अहिना शुभलाल सेहो वौआइत-

विरहाइत रहत, से नहि तँ एक-एक विचारकेँ खरिआरि-खरिआरि शुभलालसँ पुछब तखन ओ सोझ डारिये बाजत। ओना, शुभलालक विचारमे निरविचारीपन एने आत्मा-परमात्माक भेद मनक मेटा गेल छेलै मुदा से शुभलाल अपने बुझिये ने पेब रहल छल। बुझियो केना पबैत। जहिया समाजमे जागरण बेलाक उदय भेल तहिया शुभलाल बिनु पढ़ल-लिखल सोलह बर्खक अनाड़ी नौजवान छल। अनाड़ी ऐ दुआरे जे महाभारतक अभिमन्यु जखन शुभलालेक उमेरक रहैथ तखने जीवनक आठो फाटक तोड़ैक मनसूबा बना नेने छला। मनसूबाक पाछू अर्जुन सन पिता आ कृष्ण सन मामा पीठपोहू छेलैन, मुदा शुभलालकेँ से सभ किछु नहि, मनमे एतबे छल जे दस मिलि करी काज हारने-जीतने कोनो ने लाज। भाय, जखने दस मिलि समाजक कोनो काजकेँ नीक अधलाक विचार करए बैसब तखने ने एगारहम विचार आबि ऊपर मुहेँ बढ़त।

शुभलाल जहिया समाजक बीच अपन उपस्थिति दर्ज करौलक, तहियाक प्राते भने मनमे उपैक गेलै जे समाजक जे काज अछि, माने सामाजिक काज, ओइ काजसँ तँ अपनो ने जोड़ाएल छी, रूप चाहे जे होउ, मुदा जोड़ाएल तँ छीहे, तखन ओ अनकर काज केना भेल? अनको भेल मुदा अपनो तँ भेबे कएल। जखन अपन काज भेल तखन कियो अपन साती काज करह आकि नहि करह मुदा अपन तँ भार सभकेँ अपना ऊपर छइहे। तँए अपन काज बुझि शुभलाल समाजक बीच सेवा करए लगल। एक तँ बेचारा पढ़ल-लिखल नहि, तैपर पिताकेँ मुइने परिवारक भारो बेसी, मुदा अपन आ समाजक बीचक भेद शक्ति भरि अखन तक जीवनक पाछू लगले अछि। केना बेचारा बुझि पबैत जे आत्मा जखन अपन उच्च कोटिक रूपमे संचरण होइए तखन आत्मा-परमात्माक मिलन स्वत: भऽ जाइ छइ।

जीयालाल काका बजला-

“शुभलाल, लोकक तेहेन चालि-ढालि देखै छी जे मनमे होइए जे

ऐसँ नीक सतलोके चलि जाइ।"

अखन तक शुभलालक यएह रहल जे समाजक बीच जे सामाजिक काज होइत रहल तइमे जे भार शुभलालकेँ देल जाइए ओ अखनो ओहिना करैए जेना शुरूमे करै छल। ओना, करवनो-काल लोकक बेवहार देखि बमछबे करैए जे गामक की हम कोनो तिल खेने छिऐ जे जिनगी भरि बहैत रहब। बहैबला सभ समाज (गाम) छोड़ि पड़ा गेल अछि आ मौगी-मेहरीक मुँहपुरखी हमरा बरदास हएत।

जीयालाल कक्काक मुँहक शब्द 'सतलोक' केँ शुभलाल मृत्युक पछातिक, माने शरीर त्यागक पछातिक जीवनकेँ सतलोक बुझैए। किए तँ कबीरपंथी भजनमे कहियो काल सुनि अपन मनक, माने बुझि अपना मनमे रखने अछि। अपन बुझैत मानेक अनुसार शुभलाल बाजल-

"एहनो अखन हुअ देब काका.! एक तँ गामक गमबैया सभ पड़ा कऽ कियो बम्बैया खोली तँ कियो दिल्लीक झुग्गी धेलक, लऽ दऽ कऽ एकटा अहाँ भेलौं, सेहो जँ चलिये जाएब तखन हम रहब असगरे। अहीं कहूँ जे असगरमे राकसक बास होइए आकि लोकक।"

शुभलालक बे-सुराह विचार सुनि जीयालाल काकाकेँ मनमे हँसी उठलैन। मुदा हँसबोक तँ अपन जगह होइए। केकरो विचारपर हँसबक दुनू धार अछि। तँए अपन विचारकेँ ओहिना, माने नुरिया-सुरिया कऽ अपना मनमे रखि जीयालाल काका बजला-

"शुभलाल, जहिना तोरा करवनो काल-के मौगमेहरा सभपर दुखो होइ छह आ तामसो उठै छह, तहिना अपनो होइए। तँए मन अकैछ गेल। होइए जे हेहरा भागए तँ भागए नइ ते अपने भागि जाइ।"

जीयालाल काका अपना मने बजला आ शुभलाल अपना मने बुझि बाजल-

"काका, गामसँ जँ भागि जाएब, तखन रहब केतए। सभ गामक

एक्केरंग चालि अछि। ऊपर चढ़ि-चढ़ि देखा, सभ गामक एक्के लेखा। अधला छोड़ि-छोड़ि जँ पड़ाएब तँ सोल्होअना नीक केतए भेटत जे रहब।”

ओना, शुभलाल अपना विचारे, माने अपन वौद्धिक स्तरक विचारे बाजल, मुदा जीयालाल काका अपना विचारे बुझलैन जे नीक कि अधला दुनियाँमे की केतौ छिड़ियाएल अछि। ओ तँ एक्केरंग अछि। हँ, एते जरूर अछि जे वएह चीज केकरो ले नीक अछि तँ केकरो ले अधला अछि। मुदा सोझामे तँ शुभलाल छेलैन जेकरा बुझाएब छेलैन। बजला-

“शुभलाल, तोहीं कहह ते तोरा अपन गाम नीक लगै छह?”

जीयालाल कक्काक बात सुनि शुभलाल विचारए लगल। मुदा पढ़ल-लिखल तँ छल नहि, किछु सुनल-बुझल छल आ किछु अपने विचारसँ बजै छल। पढ़ल-लिखल रहैत तखन ने प्रह्लाद, ध्रुव आकि एकलव्यक बात बुझल रहितै से तँ छल नहि, मुदा एते तँ कएलो छेलै आ देखलो छेलैहे जे गामक अधिकांश परिवार विचारक दौड़मे एकत्रित भेल आ जमीन्दारक जमीन छीनि, गामक घराड़ीक समस्याकेँ निर्मूल केलक। अपन मेहनतसँ कृषिमे जान फूकलक। अखन तक गामक जे सम्पदा बहरबैयाक हाथमे छल, केतौ-केतौ अखनो अछि, ओकरा पकैड़ खेती-बाड़ी ढर्रामे बदलाव अनलक। वैज्ञानिक सोच पैदा केलक। जइ गामक लोक अन्न-पानिक कर्ज लऽ जीवन गुदस करै छल ओ अपन-अपन चासो-बास आ बाँहुओ-बलसँ गुजर करए लगल। तैसंग अन्धविश्वासकेँ पकैड़ अखन तक जे साँप कटलाहाकेँ लोक झाड़-फूकक पल्ला पड़ि जान गमबै छल, ओकरा डॉक्टरी इलाजसँ सोल्होअना जीयाबए लगल अछि। जीवनक काजमे शुभलाल तेना ओझरा गेल अछि जेकरा करैत-करैत जखन मन अकछा जाइ छै तखन अकछाइत बजैए जे कोन माया-मोहमे पड़ि जीवनकेँ बर्बाद केने जाइ छी। मुदा ई बुझबे ने करैए जे यएह माया-मोहकेँ पहिने विचारब अछि। शुभलाल बाजल- “काका, अहाँकेँ अपना

मने गाम जेहेन लगैत हुअए मुदा हमरा नीक लगैए।"

शुभलालक बात सुनि जीयालाल काका थकमका गेला। थकमकाइक कारण भेलैन जे केकरो कोनो विचार पुछैसँ पहिने ओकर हाव-भाव देखि लिऐ, से भेलैन नहि। अपना विचारे जीयालाल काका जहिना गामकेँ दुसैक खियालसँ बाजल छला तहिना शुभलाल गामक प्रशंसा करैत बाजल।

विचित्र स्थिति तँ जीयालाल काकाकेँ भइये गेलैन मुदा ओ तँ एहेन घटवार छैथ जे घट-घटकेँ के कहए जे घाट-घाटक हालो बुझै छैथ आ चालो तँ देखिते छैथ। शुभलालक टोहियाएल विचारकेँ पकैड़ जीयालाल काका बजला-

"शुभलाल, गामक धियो-पुता आ मौगियो-मेहैरिक जे चालि-ढालि देखै छी, तइसँ बुझि पड़ैए जे गाम आब रहै-जोकर नहि रहल, तँए पहिनहि किए ने डेरा-डन्टा तोड़ि ली।"

धियो-पुता आ मौगियो-मेहैरिक सुनि शुभलाल बनरफाँसमे (ब्रह्मफाँस) पड़ि गेल। बनरफाँस लगैक कारण भेलै जे मौगी-मेहैरिपर तामस मनमे रहबे करै मुदा धिया-पुताक विचारपर अपन परिवारक काज मनकेँ पकैड़ लेलकै। पकैड़ ई लेलकै जे अपने स्कूल नइ देखलौं मुदा परिवारक बाल-बच्चा तँ देखबे नइ केलक, बी.ए;एम.ए. सेहो पास केलक अछि। सकपकाइत शुभलाल बाजल-

"काका, गाममे कोइ दुइर होइए तँ हुअ, तइसँ हमरा कोन मतलब अछि।"

शुभलालकेँ एकचलिया लोक जीयालाल काका बुझै छैथ, तखन अपन चाइलिक समझौता केना कऽ रहल अछि, तइ पाछू जरूर किछु कारण अछि। ई बात जीयालाल काकाकेँ बुझले छेलैन जे गामक मौगी-मेहैरिक चालि-ढालि देखि शुभलालकेँ तामस उठले छै, तेकर कारणो

बुझल रहबे करैन जे गामसँ परदेश तक पुरुख जी-तोड़ि मेहनत करै छैथ आ स्त्रीगण सभ मेहनतसँ (श्रमसँ) एते दूर हटि रहल छैथ जे मनुक्खक जीवनकेँ दूषित केने जा रहल अछि। जहिना सबकोइ स्वतंत्र भऽ जीबए चाहै छी तहिना स्वतंत्र जीवनक दायित्वो तँ बुझए पड़त। बुझैये टा नहि पड़त, निमाहौ पड़त। शुभलालक विचारक समझौताक एक पक्ष जीयालाल कक्काक सोझामे आबि गेलैन। दोसर पक्ष दिस जखन बढ़ला तँ देखै छला जे शुभलालक बेटा-बेटी डॉक्टरी पढ़ि रहल अछि, परीक्षा पछुआएल छै तँए भरिसक गामसँ बिमुख नहि हुअ चाहैए। ऐठाम एकटा बात आरो अछि, ओ अछि गाममे केते चिकित्सकक खगता अछि? सभ कथूले चिकित्सक चाही। मनुक्खक रोग, माल-जालक रोग, खेती-पथारीक रोग, गाछ-बिरीछक रोग इत्यादि केते कहब, एकेबेर बुझू जे जीवन जीबैले अपनो डॉक्टरी पढ़ए पड़त। माने चिकित्सक बनए पड़त।

विचारक दौड़मे दौड़ैत जीयालाल काकाकेँ शुभलालक परिस्थितिक आँक भऽ गेलैन। मनमे उठलैन जे जँ बजैक क्रममे शुभलाल मौगी-मेहैर दिससँ शुरू करैत तँ ओही तामसक धारामे अपन बेटा-बेटीक प्रति प्रेम सेहो जरि जइतै, आ जँ अपन बेटा-बेटीक प्रेमाश्रुक धारामे मौगी-मेहैरिक विचार मनमे रखैत तँ बेदाग अपराधी बनैत।

विचारक सामंजस करैत जीयालाल काका बजला-

"शुभलाल, गाम जखन तोरा नीक लगै छह तखन हमरे अधला लगने की हएत। विचारविहीन गाम तँ बनियेँ गेल अछि, जेकर फलाफल भइये रहल अछि जे काजे काजक बाधक बनि गेल अछि। शुभलाल, एहेन विचारधाराक गाममे जँ दुइयो परिवार अपन विचारधारानुकूल बनल ठाढ़ रहब तैयो कम नइ भेल।"

जीयालाल कक्काक विचार बुझैत-बुझैत शुभलाल सेहो विचारकर्त्ता जकाँ बाजल- "काका, अहाँक अपन मन की कहैए?"

शुभलालक बात सुनि जीयालाल काका मने-मन टोहियाबए लगला

जे शुभलाल एना किए उनटा कऽ बाजल। मुदा अपने मन कहलकैन, रामक नाओं उनटा ली कि सुनटा, बात बरबैरिये भेल। जीयालाल काका बजला-

"शुभलाल, एतेटा जिनगी जइ माटि-पानिमे बीतल ओ नान्हि-नान्हिटा घटनामे भँसिया जाएत।"

जीयालाल कक्काक मुँहलगुआ शुभलाल अछिए। ओना, शुभलालो ई बुझि रहल अछि जे जेहने गाछी रहत तेहने ने तेकर बगवारो हएत। गाम छोड़ि लोककेँ बाहर चलि गेने, गामो तँ एते हल्लुके भेल अछि। बाजल-

"काका, जहियासँ ई दुनियाँ अछि तहियेसँ ने मनुखो अछि। ओही मनुखक धारमे वंशगत बढ़ैत ने आइ अपनो सभ छिऐ।"

शुभलालक मुहसँ सुनल विचार सुनि जीयालाल कक्काक मन बिहुसलैन। बिहुसैक कारण भेलैन जे शुभलालो सन लोक जँ एहेन विचारक प्रवाहमे आबि जाए, तँ गामक संग समाजो आ परिवारक संग बेकतियोक काया-कल्प हेबे करत। विचारमे विचरण करिते जीयालाल कक्काक मन भरि गेलैन। भरियाएल मने जीयालाल काका बजला-

"शुभलाल, एतेटा नमहर इतिहासक फेरमे पड़बह ते अपन भार[1] हेरा जेतह।"

जीयालाल कक्काक बात सुनि शुभलाल मने-मन विचारलक तँ बुझि पड़लै जे जीयालाल काकाकेँ एकहरफी मानि लेब धड़फड़ाएब हएत। बाजल-

"काका, ई तँ ठीके कहलिऐ जे तेते नमहर मनुक्खक वंशक इतिहास अछि जे देखिते छिऐ अखन सात अरब लोक अछि, ऐ सातो अरबक पीढ़ीक हजारो-लाखो बर्खक इतिहास बुझब भरिगर अछिए मुदा अपन-अपन[2] इतिहास तँ ओइसँ–सात अरबसँ–हल्लुक अछिए। तहूमे

आधासँ बेसी अपनो उमेर बीतिये गेल, तहू आधामे आधा सुतैयेमे चलि जाएत, तँए ओते पार नहि लागत। अपन भार बुझि अपने करैक अछि।"

शुभलालक विचार सुनि जीयालाल कक्काक मनमे खुशी भेलैन। खुशी होइक कारण भेलैन जे जखने मनुख अपन ओकाइत (शक्ति)केँ इमानदारीसँ आँकि अपन जिनगीक डेग उठौत तँ सफलताक अधिकांश हिस्सा हाथ लगबे करतै। ओना, गाम-समाजमे अखनो शंख[3] तँ कमो-सम्म अछि मुदा डपोरशंखक संख्या बेसी अछिए। जेकरा कहबै जे फल्लाँ काज करह तँ कहत जे एहेन बुढ़िया फुसि काजमे हमरा लगबै छी, हमरा तँ भारी काजक भार दिअ। एकर माने ई नइ बुझब जे रामायणिक सुरसा- हनुमान संवाद कहै छी। जीयालाल काका आ शुभलालक बीच जे संवाद चलि रहल छैन, से कहि रहल छी।

जीयालाल काका बजला-

"शुभलाल, अखन इतिहास-पुराणक बात छोड़ह, वर्तमानमे जे समाजक रूप-रंग बनि गेल अछि जे जेकरा ले चोरि करी, सएह कहै चोरा।"

जीयालाल काका की सोचि बजला, से तँ जीयालाले काका जनता मुदा शुभलाल अपना सोचे बुझलक जे केकरो कहने थोड़े होइ छै, ओ तँ अपन करनीमे निहीत अछि। शुभलाल बाजल-

"काका, गामक समाजमे तँ अपने दुइये बापूत छी, देखिते छिऐ जेकरा ले जहल गेलौं, मारि केलौं, मारलौं, मारि खेलौं तहू सभ परिवारमे मौगपन जुति एने लोकक विचारे उनैट गेल अछि।"

शुभलालक समझकेँ अपन समझमे समिश्र करैत जीयालाल काका बजला-

"शुभलाल, विचारधाराक भथान भऽ रहल अछि, ओकरा पुन: प्रवाहित करैक अछि।"

शुभलाल बाजल-

“से केना हएत?”

जीयालाल काका बजला-

“ओकरा प्रवाहित करैक अनेको रास्ता अछि मुदा से अखन नहि। अखन एतबे जे ओइ भथानक माटि निकालि साफ बना दिऐ वा पाछूसँ धाराकेँ तेज गतिये प्रवाहित करैत ओइ माटिकेँ भँसिया दिऐ।”

जीयालाल कक्काक बात सुनि शुभलालक मन भरि गेल। मन भरिते ऐगला सालक चुनाव (एम.एल.ए.बला)पर धियान गेलइ। बाजल-

“काका, जखन दुइये बापूत गाममे छी, आ हजारो भोँट अछि, तइमे अपना सभ की करब?”

शुभलालक बात सुनि जीयालाल काका बजला-

“तूँ की विचारै छह शुभ?”

शुभलाल बाजल-

“काका, एते भारी काज अछि, तखन अहाँ ने विचार देब, कि हमरेसँ पुछै छी।”

मुस्कुराइत जीयालाल काका बजला-

“अपन जे घटवारि अछि तेकरा निष्ठाक संग निमाहैक अछि। बस एतबे।”

❑

शब्द संख्या : 2659, तिथि : 19 सितम्बर 2020

परिवार बिलैट गेल

रबि दिन। कोलकाताक उत्तरपाड़ाक अपन तीन-कोठली मकानक ओसारक कोठरीमे चाहक खाली कप चौकीक निच्चाँमे रखि अग्निदेव बाबा सोझ भऽ नीक जकाँ बैसलो ने रहैथ कि धक-दे मनमे उठलैन अपन जुआनीक बीस बर्खक स्वतंत्रता आन्दोलनक राघोपुरक संगी राजाराम। राजारामक पहिल भेँट अग्निदेव बाबाकेँ मोन पड़िते रहैन कि तहीकाल कुमुदनाथ कोठरीमे पहुँचला। कुमुदनाथ जखन डेरामे रहै छैथ तखन बेर-बेर पिता–अग्निदेव–क लग बैस गपो-सप्प करै छैथ आ कोनो जँ समस्या रहल सेहो बुझै छैथ। कुमुदनाथकेँ देखिते अग्निदेव बाबा बजला-

“बौआ, आइ हम गाम जेबह। जखन लौहकीए वयस छल तही दिनक राघोपुरक एकटा संगी छला राजाराम, हुनकर परिवारक की स्थिति छैन से देखैले मन उबिया रहल अछि।”

पिताक आदेशपूर्ण विचार सुनि कुमुदनाथक मनमे अनेको प्रश्न उठि-उठि ठाढ़ हुअ लगल। कहू जे साए बर्खसँ ऊपर अपन उमेर छैन आ चिन्ता छैन अनकर परिवारक, खाएर जे छैन नीके छैन। आब कहू जे अपनो एहेन शरीर नहि रहलैन जे पएरे दू किलोमीटर चलता, मुदा जेता सइयो किलो मीटर टपि गाम। जँ सोझे कहितैथ जे बौआ, अपन एकटा पुरान ओहन संगी जेकरा संग जिनगी-मृत्युक बीच नचैत बीस बर्ख संगे रहलौं, ओइ परिवारक आइ की दिन-दुनियाँ अछि से देखबोक अछि आ बुझबोक अछि। परिवारक सबकोइ गाम सेहो जाएब, हिनको नेने

चलबैन आ राघोपुर धरि संगे सभ किछु देखा-सुना देबैन। अग्निदेवक जिदियाह सोभाव कुमुदनाथकेँ बुझल, जे बाजि देलैन ओ गाछ परक घोरन जकाँ अपने टुटिकऽ मरि जाएत मुदा छोड़त नहि, से करबे करता। आगूक कोनो समुचित रस्ता नहि देखि कुमुदनाथ चुपचाप ठाढ़ छल। कुमुदनाथकेँ अवाक भेल ठाढ़ देखि अग्निदेव बाबा बजला-

"बौआ, आजादीक आन्दोलन[4] मनमे नाचि रहल अछि। जखन अपना इलाकामे अंगरेज-विरोधी आन्दोलनक लहैर तेज भेल छल तइ दिनक बात मोन पड़ि गेल।"

अग्निदेव बाबाक विचार सुनि कुमुदनाथ मने-मन खुशी भेल। खुशी होइक कारण भेल जे 'बड़ रे बालक एक समाना' होइते अछि। अपन पिपाशु मनकेँ खोलैत कुमुदनाथ बजला-

"बाबू, ई तँ संयोग बुझू जे हमरे सभ दुआरे अहाँ जीबैत रहलौं अछि, नइ तँ एहेन-एहेन विचारक इतिहासो केतौ भेटत।"

बेटाक मधुर चाह देखि अग्निदेव बाबा बजला-

"चाह पीलह कि पछुआएल छह?"

पिताक बात सुनि कुमुदनाथ सकपका गेला। सकपकाइक कारण भेलैन जे चाह पीबकऽ आएले छी। जँ से कहि देबैन तखन ओ बुझता जे राड़-रोहिया जकाँ अपनो धिया-पुता बुझैए। मुदा झूठो बाजब तँ उचित नहियेँ हएत। जेना किछु कुमुदनाथकेँ मोन पड़ल होनि तहिना नाकपर हाथ नेने धड़फड़ा कऽ कोठरीसँ बाहर निकलला। चाह पीबैक हिसाबसँ, माने चाह पीबैमे जेते समय लगैए तेते समय पछुआ, कुमुदनाथ पुन: कोठरी आबि पिता लग पहुँच बजला-

"एकटा बिसरल बात मोन पड़ल तँए ओकरा पकैड़ टिपैन करए गेल छेलौं।"

लगले सुरे अग्निदेव बाबा बजला-

"भऽ गेलह किने?"

"हँ।"

ओना, कुमुदनाथकेँ नाकपर हाथ नेने कोठरीसँ निकलैत देखि अग्निदेव बाबाक मनमे छोभ जागि गेल रहैन जे अपनो धिया-पुता जखन अपन बात-कथा नहि सुनए चाहैए तखन आन के सुनत। तहूमे लोकक मनमे तेहेन आगि लगि गेल अछि जे सर-समाज, कुटुम-परिवारक कोन गप जे अपनो बेटा-बेटी अपन सम्बन्धोक अनुकूल समय दऽ पौत तेतबो समय ने छइ। मुदा लगले दोसर मन कहलकैन जे दुनियाँमे करोड़ो-अरबो लोक अछि, सबहक चालि-ढालि एक्के रंग अछि सेहो तँ नहियेँ कहल जा सकैए। पुरान कहबी छै- 'मुण्डे-मुण्डे मतिर्भिना', जेहेन जेकर मति[5] रहै छै तही अनुकूल ने से अपन जीवन गढ़ैए। जँ से नहि रहैत तखन दुनियाँमे रंग-बिरंगक एते खगते किए रहैत। सभ एकेरंग रहैत, एक्केरंग जीवन जीबैत आ एकरंग उपैत करैत एक्केरंग खाइत-पीबैत...। निर्णय तक अग्निदेव बाबा पहुँचलो ने छला कि तही बीच कुमुदनाथ कोठरीमे पहुँच बाजल छल।

ओना, आन पिता जकाँ अग्निदेव बाबाक मनमे मरैक विचार नहियेँ जगल छेलैन, किए तँ जेना आन पिता सभक दशा बेटा-पुतोहुक किरतबे होइ छैन तेना अपन बेटा-पुतोहुक संग अग्निदेव बाबाकेँ नहियेँ छैन। पिता-पुत्रक बीच जे प्रिय सम्बन्ध हेबा चाही से अग्निदेव बाबा आ कुमुदनाथक बीच छैन्हे। कियो पिता चापाकल वा आँगनमे पिछैड़ कऽ खसि हाड़-पाँजर तोड़ि लेता, तेकर तँ बेटा-पुतोहु डॉक्टरीए उपाय आ ओकर बीच अपन तरद्दुते ने कऽ सकै छैथ, तैठाम जँ पिता अर्ड़ाहैट मारि-मारि कानि-कानि जँ बजबे करता जे कष्टमे पड़ल छी, आनक कोन बात जे अपनो बेटा-पुतोहु देखैबला नहि अछि, सेहो तँ उचित नहियेँ हएत। सभकेँ अपन-अपन तनो अछि आ मनो तँ अछिए। जहिना तनक अपन दुनियाँ अछि तहिना मनोक तँ अपन अछिए। अपन-अपन दुनियाँमे

जहिना नीको अछि तहिना ने अधलो अछिए। ओही बीच ने कियो अपन जिनगियो आ दुनियोँ गढ़ि लइए।

अग्निदेव बाबा बजला-

“आइ दिन कोन छी, कुमुद?”

कुमुदनाथ-

“आइ रबि छी। ऑफिसो बन्न अछि।”

अपन जनैत कुमुदनाथ अपन निसचिन्ती देखौलैन, जइसँ अग्निदेव बाबाक मन सेहो पनिया गेलैन। बजला-

“बौआ, चाह तँ सभ पीबे केलह। आब तँ बिसैर गेलौं मुदा एते मोन अछि जे अपन जुआनीमे सहैक[6] अभ्यास लगौने छेलौं..।”

बिच्चेमे कुमुदनाथ बजला-

“सहैक अभियास किए लगौने छेलिऐ?”

बेटाक प्रश्न सुनि अग्निदेव बाबाक मन ओहिना पसीझ गेलैन जेना पसिझल आकक वा पसिदक पात पीड़ा ऊपर सटिते पीड़ाहरण करए लगैए। जइसँ कोनो पीड़ितपन पातकेँ रस भेटिते जहिना हरितपन अबए लगैए तहिना अग्निदेव बाबाक मनमे सेहो भेलैन। बजला-

“बौआ, मन रखियह जे सहबक अभ्यासक की महत अछि। मुदा से पछाइत कहबह, पहिने बाल-बच्चा सभकेँ बजा, एकठाम सबकोइ बैसह सबहक बीचमे किछु बजैक अछि।”

पिताक विचार सुनि कुमुदनाथ मने-मन चपचपाइते छला जे भने गप-सप्पमे ओझरा रहल छैथ। नहि तँ अनेरे बखेड़ा ठाढ़ करता। जहिना अग्निदेव बाबाक मुहसँ खसलैन तहिना कुमुदनाथो कोठरीसँ निकैल दुनू बेटो आ पत्नियोकेँ संग केने पहुँचला।

परिवार छी, पीढ़ीपर बैसल सबकोइ छी, मुदा छी तँ सभ एक्के

परिवारक, अग्निदेव बाबाक मनमे बेर-बेर उठए लगलैन। बजला-

"बाउ, ओसारेपर ओछाइन बिछाबह। सबकोइ एकठाम बैस गप-सप्प करब।"

जहिना अग्निदेव बाबा बजला तहिना कुमुदनाथक दुनू बेटा– प्रकाशो आ किरणो–ओसारकेँ झाड़ूसँ झाड़ि ओछाइन ओछौलक। अग्निदेव बाबा सेहो कोठरीक केबाड़ लग ठाढ़ भऽ सभ किछु देखिये रहल छला। ओछाइन ओछाएल देखि अग्निदेव बाबा जा कऽ बैस गेला। भाय, परिवार छी, जे अपना धुरिये-धुरकिलिये चलैए। जहिना सभ रंगक जीवन होइत अछि तहिना सभ रंगक धारो होइए आ घाटो होइते अछि। से तँ परिवारजनकेँ बुझए पड़त किने। एहेन जँ तितम्हा ठाढ़ करी जे पोता ओछाइन ओछौलक आ बाबा बुझि ओ बइसैले आग्रह करत तखन जा कऽ ओइपर बैसब, समयक हिसाबसँ, माने परिवेशक हिसाबसँ ई उचित नहि।

अग्निदेव बाबाकेँ बैसते कुमुदनाथ सेहो बैसला। संगे, दुनू पोता आ पुतोहु सेहो आबि बैसलैन। पाँचो गोरे एकठाम बैसला। अग्निदेव बाबाक पत्नी वा कुमुदनाथकेँ माए, नहि छैन। ओ अपना औरुदे अस्सिये बर्खमे मरि गेली, मुदा साए बर्ख टपला पछातियो अग्निदेव बाबा चानीक पुरना रुपैआ जकाँ टना-टन करिते छैथ। ओना, जैठाम सोलहअनाक रुपैआ चानीक छल तैठाम आइ अल्मुनियम आ कागजपर पहुँच गेल, से मुदा अग्निदेव बाबाक विचारमे अखनो धरि नहि एलैन अछि।

कुमुदनाथ परिवारक बीच अपन सीमा आँकि लेलैन। जहिना कोनो सरोवर, झील वा पोखैर-नदीक बीच सीढ़ी बना धरती जलक बीच सम्बन्ध बनौल जाइए तहिना अपन सीढ़ी बुझि कुमुदनाथ बजला-

"बाबू, की कहने छेलिऐ सहैक अभियास..?"

कुमुदनाथक प्रश्न सुनि अग्निदेव बाबाक मनमे खुशी भेलैन। खुशी

होइक कारण भेलैन जे मिसियो भरि वा मड़ुओ भरि बात कुमुदनाथ बाल-बच्चाक संग नहि छिपौलक। जइसँ मरै बेरमे आन-आन पिता सभक जे दशा, माने कण्ठपर हाथ दैत मोकि-मोकि जहिना बेटो तहिना पुतोहुओ पुछै छैन जे बाजू चानीक रुपैआबला घैल केतए रखने छी, से सभ अग्निदेव बाबाक संग नहि छैन। अग्निदेव बाबा बजला-

"बौआ कुमुद, आन जीवनक आन कथा अछि मुदा से नहि, अखन जहलक एकटा कथा सुनह। मधुबनी जहलमे करीब डेढ़ हजार कैदी रही। पैखानाक मात्र तीनटा कोठरी रहइ। बच्चेसँ सभ बुझै छी जे सुति-उठि कऽ पहिने अपन नित्यकर्म करी, माने कौल्हुका असौच जीवनसँ आजुक सौच जीवनमे प्रवेश करी। ऐ लेल पैखाना सभसँ महत्वपूर्ण काज अछि। आन काज, मुँह धोब, दतमैन करब आदि अपन बशक भेल मुदा पैखाना बशो आ बेवशोक तँ छीहे। ओ तँ मनसँ नहि, तनसँ चलैबला छी।"

तैबीच किरण जे हाइ स्कूलमे पढ़ैए, बाजल-

"बाबा यौ, ई तँ जहलक बात भेल। परिवारक बात कहियौ।"

पोताक बात सुनि अग्निदेव बाबाकेँ अपन जहलक संगी- राजाराम मोन पड़ि गेलैन। कुमुदकेँ तगेदा करैत अग्निदेव बाबा बजला-

"बौआ जे कहने छेलियह से मोन छह किने?"

इशारेमे कुमुद सेहो बजला-

"हँ।"

दुनू बापूत, माने अग्निदेव बाबा आ कुमुदनाथक बीच गप-सप्प तँ भऽ गेलैन मुदा परिवारक अन्य सदस्यक बीच तँ विचार छिपले रहि गेल। ऐसँ किछु-ने-किछु शंका उठबे करत। ओना, कुमुदनाथ मने-मन ऐ ताकमे छला जे कहुना पिता गप-सप्पमे बोहिया कऽ गामक बात बिसैर जाइथ। जखने ठेका डोरी जकाँ एको मिसिया आगू बढ़ता कि पाछूसँ

ओकरा कनी सह दऽ कऽ आरो अगुआ देब। जनिते तँ छी जे शरीरक कोनो ठेकान नहियेँ अछि, तहूमे साए बर्खसँ ऊपर उमेरबलाक, जँ कहीं बिमारे-तिमारे पड़ला तैयो समय आगू बढ़त, नहि जँ बिसैर गेला तैयो नीके। तैबीच प्रकाश जे कौलेजमे पढ़ैए, बाजल- “जखन सबकोइ एकठाम बैसल छी तखन सभ बात ने सभ बुझब।”

जखने प्रकाशक मुहसँ खसल, माने परिवारक सभ बात सभकेँ बुझब, तखने अग्निदेव बाबा आँकि लेलैन। आँकमे अबिते बजला-

“बौआ, तोहर कहब नीके भेलह।”

ओना, कुमुदनाथ अकबका गेला। अकबकाइक कारण भेलैन जे आँखिक सोझमे जे आन-आन परिवार सभमे देखै छैथ जे परिवारमे किछु बात सबहक बिच्चो होइए, माने परिवारजनक बीच, आ किछु बात नहियोँ होइए। ओना, दुनूमे अन्तर रहने जँ ऐ अन्तरकेँ नजैरमे नहि राखब जे कोन विचार सामूहिक छी आ कोन विचार बेकतीगत, तँ एहेन गलतीक सम्भावना बनियेँ जाइए जे किछु सामूहिको विचार समूहसँ छीप जाइए, नुका जाइए आ किछु बेकतीगत विचार सेहो समूहमे पहुँचबे करैए। पिता-पुत्र आ पुत्र-पिताक बीच परिवारमे समरस आ समत्व बना राखब जरूरी अछिए। मुदा जीवनक लीलाक संग मनमे सेहो आवेग-उद्वेग अबिते अछि जइ विचलनसँ धोखामे सेहो लोक पड़िते अछि...। कुमुदनाथक मनमे जेना एकटा नव दुनियाँ ठाढ़ हुअ लगलैन जइसँ दुनियाँक सघनपन देखि अपन विचारकेँ असथिर करैत विचारलैन जे बीचमे अपने छी, माने पिता आगू पुत्र छी आ पुत्रक आगू पिता छी, मुदा पिताजी तँ से नहि छैथ, मात्र पिते छैथ। तहिना पुत्रो अछि, ओहो तँ सोल्होअना पुत्रे अछि, पिता तँ नहि भेल अछि, तइ बीचक बात छी, तइमे नीक यएह ने हएत जे एक पक्ष पिता भेला आ दोसर पक्ष पुत्र भेल, तइ बीचक ने बात भेल, तखन अनेरे बीचमे किछु बाजब नीक नहि। भेल तँ बाध-बोनमे जहिना अड़िया-पटिया सभ अपन-अपन खेतक आड़ि

दुरुस करै छैथ, बीचमे जे अपन खेत रहैए ओकर आड़ि बिनु दुरुस केनौं दुरुस्त बनियेँ जाइए, तहिना कुमुदनाथ अपन मन मारि चुपे रहला। मुदा अग्निदेव बाबा तँ से नहि छैथ, नामक हिसाबक काजो रहलैन। माता-पिताक राखल नाम सिंहेश्वर छेलैन, मुदा आजादीक आन्दोलनमे अपन करतब देखबैत 'अग्निदेव' नाम हाँसिल केलैन। जहलक छहरदेवाली टपब ओ अपन एकटा काजक श्रेणीमे रखने छला...। अग्निदेव बाबा बजला-

"बौआ प्रकाश, जे बात तूँ उठबए चाहलह ओ दुनू बापूतक बीचक विचारक एक अंश छी, तँए ओइ अंशक आधारपर गप-सप्प भेल। बुझिते छह जे तुलसियो बाबा कहने छैथ- 'ईश्वर अंश जीव अविनाशी', मुदा तेकरा जीवनमे उतारि बुझब खेल थोड़े छी। खाएर जे छी मुदा तोहूँ सुनि लएह जे आइ हम गाम जेबह।"

जाबे धरि कुमुदनाथ आ अग्निदेवक बीच विचार छल ताबे धरि शान्त छल, मुदा परिवारक बीच अबिते समुद्रक लहैर जकाँ विचारक लहैर उठल। पुतोहु चन्दा, कुमुदनाथक पत्नी, घुनघुना कऽ बजली-

"एते दिन बुढ़हा[7]क मति सोल्होअना ठीक छेलैन मुदा आब जेना घुसैक रहलैन अछि.!"

ओना, तेना कऽ धीम स्वरमे चन्दा बाजल छेली जे कुमुदनाथो आ अग्निदेव बाबा सेहो मात्र ठोरे पटपटबैतटा देखलैन। मुदा लगमे रहने प्रकाश सुनलक। कौलेजमे पढ़ैत प्रकाश, माइक सभ बात सुनि गेल। प्रकाश बाजल-

"गाम केना जेबइ?"

ओना, प्रकाश सवारीक खियालसँ बाजल छल, मुदा अग्निदेव बाबा अपन मनक विचारे बजला-

"अपन गाम छी तरखन किए ने जाएब।"

पोता-बाबाक बीच बढ़ैत बातकेँ देखि चन्दा बजली- "सभ परानी

ऐठाम छी आ ई गाम जेथिन। किए जेथिन पहिने से ने बजौथ।"

पटरीपर ठेला गाड़ी जहिना किछु दूर ठेलला पछाइत अपने दौड़ैत आगू बढ़ैए तहिना अग्निदेव बाबाक मनमे सेहो भेलैन। बजला-

"कनियाँ! अपन परिवारमे तँ छीहे मुदा बीस बर्ख संगे, बोन-झाड़सँ जहल धरि रहनिहार राघोपुरक राजाराम छैथ, हुनकर परिवारक की स्थिति छैन से बुझैक उत्कण्ठा मनमे जगि गेल अछि।"

'राघोपुरक राजाराम' सुनि चन्दा अपन यादास्तपर जोर दैत मोन पाड़ए लगली, राघोपुरक राजाराम..! मोन पाड़ैत-पाड़ैत चन्दाकेँ आधा तँ मोन पड़ि गेलैन मुदा आधा नहि बुझि पेली। एक रुपैआक काज जहिना आठअना पाइ रहने काजक आधा हूबा बनले रहैए तहिना चन्दाकेँ आधा हूबा ऐ दुआरे जगल छेलैन जे अपन बहिन-धीक सासुर राघोएपुर अछि। तहूमे दुनू परानी कोलकातेमे रहबो करै छैथ। पूर्ण तुष्टिक संग चन्दा बजली-

"जखन मन हेतैन तखन हम जोगार लगा देबैन। अखन जे राघोपुरक राजारामक गप-सप्प कहै छेलखिन तेकरा पहिने सठा लौथ।"

ओना, गाम जेबाक जिज्ञासा अग्निदेव बाबाक मनमे ज्वलित छेलैन्हे मुदा दोसर प्रश्न जे 'राघोपुरक राजाराम' मनमे छेलैन ओ बेसी प्रज्वलित भऽ गेलैन। बजला-

"कनियाँ, 1953-54 इस्वीक बात छी। भूदानी आन्दोलन जगि चुकल छल। तइसँ पहिने गाँधीजीक आवाजपर दुनू गोरे, माने हमहूँ आ राजारामो हाइ स्कूलक दसमा क्लास छोड़ि गाँधीजीक संग पकैड़ लेलौं। की कहब आ केते कहब..! एतबे बुझू जे अपन जानक तियाग कऽ देलौं।"

गाँधीजीक नाओं सुनि किरण बाजल-

"गाँधी बाबाकेँ अहाँ देखने छिऐन?"

देहमे कोनो पाकल घावक पीज जहिना चमड़ाक भीतर टनक मारैत रहैए तहिना अग्निदेव बाबाक मनमे गाँधीजी पीजौल हथियार खनैक उठलैन। मुस्कुराइत अग्निदेव बाबा बजला-

"बौआ, जेना गाँधी बाबाक नाओं सुनै छहुन, तेना मनमे होइत हेतह जे ओ खूब मोटगर-डटगर शरीरबला जकाँ छल हेता, मुदा से नहि छेला। अध्ययन आ चिन्तन-मननसँ मोटगर-डटगर ओ जरूर छेला मुदा देहसँ पाबो भरि खून-मासुबला नहि छेला।"

गाँधीजीक बात सुनि किरण मने-मन विचारए लगल जइसँ मुँह बन्न भऽ गेलइ। तैबीच चन्दा बजली-

"दुनू गोरे, माने अग्निदेवो आ राजोराम, हाइये स्कूलमे जखन पढ़ैत रही तहियेक संगी छैथ?"

अग्निदेव बजला-

"कनियाँ, अपना तँ बेसी खेत-पथार नहि छल तँए पाँचे कट्ठा भूदानमे देलिऐ, मुदा राजाराम तँ अपन सोल्होअना घराड़ी धरि भूदानमे दऽ देलखिन, सएह पुरुख छैथ राजाराम। अखन देखै छी जे एक पाइले लोक नियम-निष्ठा सभ तियागि दइए जखन कि राजाराम अपन लाखोक सम्पैत बाँटि देलैन। केना खजूरबोनीमे राति-बिराति खलिये पएर रहबो करै छेलौं आ दौड़-दौड़ सड़कोपर जा-जा देखै छेलिऐ जे केम्हरोसँ पुलिसक तँ ने आवाहन भऽ रहल अछि।"

बिच्चेमे प्रकाश बाजल-

"पुलिस सभसँ मारियो करै छेलिऐ?"

प्रकाशक बात सुनि अग्निदेव बाबाक मनमे हँसी उठलैन मुदा अबोध पोताक विचार बुझि अपनाकेँ संयमित राखि अग्निदेव बाबा बजला-

"बौआ, कोनो कि पाँच गोरे एकठाम बैस पनचैती केलौं जइसँ

अंगरेज भागल, आकि ओकर शक्तिक संग शक्ति-परीक्षण भेला पछाइत भागल। अखन कौलेजमे पढ़ै छह, पहिने कौलेजक डिग्री लऽ कऽ निकलह, पछाइत अपन जीवन ले पढ़िहह। जीवनसँ जीवन भेटै छै।"

चन्दा बजली- "जे समाचार बुझैले गाम जाए चाहै छैथ, से जँ अहिठाम भऽ जेतैन तँ कोनो अधला?"

विचारक प्रवाहमे अग्निदेव बाबाक अपन अन्तर्मनक विचार गहींर धारक पानि जकाँ तरेमे असथिर रहि गेलैन आ मुहसँ निकैल गेलैन-

"कोनो अधला नहि।"

परिवारक विचारमे समगमता देखि कुमुदनाथ बाजल-

"पिताजी, जखन राजाराम कक्काक परिवारेक स्थिति बुझैक अछि आ से जँ अहीठाम भऽ जाए, तइमे कोनो हर्ज?"

अग्निदेव बाबा बजला-

"कोनो हर्ज नहि, मुदा बेवस्थित लोकक मुहेँ बेवस्थित बात सुनी, बस एतबे।"

कुमुदनाथ-

"अखने हम हुनका सभकेँ, माने राधोपुरबला सभकेँ फोनसँ कहि काल्हिये बजा लइ छिऐन, सभ समाचार–बात–बुझि लेब।"

ओना, अग्निदेव बाबाक मनमे ईहो रहैन जे तीस बर्ख ऊपरेसँ गामो छुटि गेल अछि, तँए एक्के काजे दुनू भऽ जाएत। मुदा से विचार तर पड़ि गेलैन आ मुहसँ निकैल गेलैन जे 'कोनो हर्ज नहि', तँए चुपे रहला।

दोसर दिन भोरे चन्दाक बहिन-बेटीक संग बहिन-जमाए राजकिशोरो आ आरो दू गोरे- सजनलाल आ हितलाल, चारू गोरे टेम्पूसँ पहुँचला। चारू गोरे पहुँचते पहिने अग्निदेव बाबाकेँ गोड़ लगलकैन। ओना, चारूमे सँ कियो तेहेन परिचित अग्निदेव बाबाक नहियेँ रहैन तइसँ

तेहेन असीरवादो देबक खगता नहियेँ भेलैन मुदा बेवहारिक रीति-रेबाजमे जे असीरवाद सहरगंजा अछि, सएह असीरवाद दैत अग्निदेव बाबा बजला-

"चारू गोरे बैसू। अहीठाम चाह-पान सेहो हेतै आ गाम-घरक कुशल-क्षेम सेहो हेतइ।"

तैबीच प्रकाश जगमे पानि आ गिलास नेने पहुँच गेल। खाली पानि देखि अग्निदेव बाबा बजला-

"गाम-घरमे हम सभ बजै छेलौं जे कने पानि पीब लीअ। जेकर माने होइ छल किछु खा कऽ पानि पीब। मुदा आब तँ बजरूआ हवामे बहिकऽ बजरूआ भऽ गेलौं, तँए बेवहारक संग विचारो बदलिये गेल।"

अपन रोगकेँ रोगमुक्त करैत हितलाल प्रकाश दिस मुँह घुमा बजला-

"बौआ, आब तँ देखिते छिऐ जे ब्लडप्रेशर, डयविटीज आ अरबा चाउरक भात खेने गैस्टिक, बेमारी थोड़े रहल ओ तँ राजरोग भऽ गेल। राज रोग ऐ दुआरे जे आधासँ बेसी जनसंख्यामे पसैर गेल अछि। बिनु चीनीक चाह हमरा ले आनब।"

ओना, हितलालक विचारपर अग्निदेव बाबाकेँ मने-मन तामसो उठलैन, मुदा बहुसंख्य देख, माने बहुसंख्यक आँकड़ा देखि मन मारि लेलैन। तही बीच चाह सेहो आएल। छअ कप चाहमे एक कप बिनु चीनीक छल, तँए कपकेँ चिन्है दुआरे प्रकाश पहिने हितलाले दिस चाह बढ़ौलक। अपनाकेँ नवकवरिया देखि हितलाल बाजल-

"पहिने बाबाकेँ चाह देबैन किने.!"

अग्निदेव बाबा विचारमे सामंजस करैत बजला-

"अहाँ सभ बहरबैया छी तँए एतबो आदर नहि करी से उचित हएत। तहूमे अहाँले फुट चाह, बिनु चीनीक बनल अछि। अच्छा ई कहू जे सभक घर राघोएपुर अछि?"

हितलाल-

“हँ।”

अग्निदेव बाबा-

“राजारामकेँ चिन्है छिऐन?”

ओना, हालेमे, माने पनरह बर्ख पूर्व राजाराम मुइला, जे जानकारी अग्निदेव बाबाकेँ नहि छेलैन। हितलाल बजला-

“ओ तँ दियादियेमे छैथ। करीब पनरह बर्ख मुइना भऽ गेलैन।”

ओना, राजारामक मृत्युक चर्च उठिते हितलालक मन दहैल गेलैन। दहलैक कारण भेलैन जे जेहेन नामी-गामी राजाराम काका छला, आर्थिक तंगीक चलैत तेहेन श्राद्ध-कर्म नहि भेलैन, मुदा तेकरा मनेमे दाबि हितलाल बजला-

“राजाराम कक्काक बाबू आ हमर बाबू सहोदरे भाए छेला।”

हितलालक बात सुनि अग्निदेव बाबाक मन जेना शान्त भेलैन। शान्तिक साँस छोड़ैत बजला-

“दुनू गोरे संगे हाइ स्कूलमे पढ़ैत रही, गाँधीजीक आह्वान भेलैन, स्कूल छोड़ि आन्दोलनमे जुड़ि गेलौं।”

जहिना कोनो घटना लोकक बीच दूरी बढ़बैए तहिना लोककेँ लग सेहो अनिते अछि। अपनाकेँ हितलाल राजारामक भातीजक रूपमे बजला-

“अपने तँ कक्काक बचपनक संगी छिऐन, तँए घरक कोनो बात, माने नीकसँ नीक आ अधलासँ अधला बजैमे संकोच करब नीक नहि।”

अपन मनक मूल विचार हितलालक मनेमे रहैन, तइसँ पहिने परिवेश तैयार करैत बाजल छला। जइ परिवेशकेँ पकैड़ अग्निदेव बाबा जिज्ञासु बनि जिज्ञासा करैत बजला- “से की, से की बाउ?”

हितलाल बजला-

“अपने जखन कक्काक संगी छिऐन तखन कक्के भेलिऐ, काका आ पितामे अन्तरे की अछि, दुनू सहोदरे भेलौं किने। तँए परिवारक बीच जे किछु भेलैन सभ बात... ।”

पूर्ण जिज्ञासु होइत अग्निदेव बाबा बजला-

“बौआ, राजाराम कियो आन नहि छैथ, आइ जीबै छी तँए ने कुशलो-क्षेम बुझै छी, नहि जँ जेना गाम-गामक लोक अंगरेजक गोलीसँ मारल गेला, तहिना हमहूँ सभ ने मरि गेल रहितौं। जखन मरि गेल रहितौं तखन थोड़े औझुका जकाँ अपन कएल कृत्यक श्रद्धाक संग स्मरण करितौं।”

हितलाल बजला- “देश स्वतंत्र भेला पछाइत अपन सभ सम्पैत भूदानमे दऽ गौंआँक बीच बाँटि देलैन। तीनटा कन्या आ एकटा बेटो छेलैन आ माइयो जीविते रहथिन।”

कहि हितलाल चुप भऽ गेला। चुल्हिक खोंरनी जकाँ विचारक खोंरनीसँ खोरैत अग्निदेव बाबा बजला-

“बीचमे रूकलौं किए। जहिना सुखिया गीत राजा-रानीक होइए तहिना दुखिया गीत सेहो स्वतंत्र दीवानगीक होइते अछि। तँए दुखेमे सुखो छिपल रहैए, बजैमे हिचकिचाइ किए छी।”

हितलाल बजला-

“अपन कोनो आर्थिक अबलम्ब नहि रहने कठिन समयसँ पाला पड़ि गेलैन। कहुना-कहुना बेटीक बिआह तँ निमाहि लेलैन मुदा परिवार चलब कठिन भऽ गेलैन।”

अग्निदेव बाबा बजला- “अपने तँ सभ दिन लोकक बीच रहला तँए कमाइ-खटाइक लूरि नहि भेलैन, मुदा बेटा तँ छैन।”

बेटाक नाओं सुनिते हितलाल थकथका कऽ अवाक भऽ गेला।

सजनलाल बजला-

"चाचाजी, बी.ए. पास केलाक पछाइत बेटाकेँ बैंकमे नोकरी भेलैन। साले भरिक पछाइत कैसियर बनला। कोन दुरमतिया कपार चढ़ि गेलैन कोन नहि..!"

आगू शब्द सजनलालक मुहसँ निकलैक साहसे ने करै छेलैन। मुदा जीवनक घटना तँ घटना छी। जे जिनगीए नहि परिवारोकेँ उजारि दुनियाँकेँ बीरान बना दइए। ओना, अनुमानसँ अग्निदेव बाबा मने-मन बुझि गेला जे भरिसक पाइक गबन केने हएत। अग्निदेव बाबा बजला-

"अखन की स्थित छैन?"

सजनलाल बजला-

"कानूनक नजैरमे अपनाकेँ दोषी बुझि बेटा पड़ाएल अछि। परिवार बिलैट गेल।"

राजारामक परिवारक समाचार सुनि अग्निदेव बाबा अवाक भऽ गेला। मनमे अनेको प्रश्न उठि गेलैन मुदा तेकरा मनेमे दाबि लेलैन।

❑

शब्द संख्या : 3132, तिथि : 26 सितम्बर 2020

अनचोकक इजोत

समिया एकटा गाम। गाम ने ओते नमहर आ ने ओते छोट। तँए कहब जे गामक जनसंख्या कम अछि आकि रकबा कम अछि, सेहो बात नहियेँ अछि। पाँच हजार जनसंख्याबला गाम छी तँए पंचायत सेहो छीहे। तहिना रकबाक हिसाबसँ पाँच साए बीघाक गाम सेहो छी। आने गाम जकाँ समियामे अनेको रंगक जाति, अनेको रंगक सम्प्रदायिक संग अनेको रंगक रीति-रिवाज, काज-बेवहार सेहो अछिए। मुदा अखन से सभ नहि, अखन एतबे जे जेकरा नमहर गाम बुझै छी, ने से नमहर अछि आ ने जेकरा छोट बुझै छी से छोट अछि। कहब जे ई की भेल? ई भेल जे ढीमका छुनिहार ने एकोटा बेकती गाममे छैथ आने ढीमकासँ डेराइबला कियो छैथ, तँए, ने गाम ओते नमहर आ ने ओते छोट।

आचार्यजी आ मनोहरक घर एकठाम। ओना, दुनू गोरेक घर गामक टोलेमे छैन मुदा पातर टोल रहने, दुनू गोरेक घर एकठाम आ बाँकी टोलबैयाक कने हटि-हटि। आचार्यजीक सर्टिफिकेटोक नाम आ मातो-पिताक देल नाम 'समरदेव' छिऐन। ओना, से नाम अखनो नहियेँ मेटेलैन अछि, किए तँ कागजमे लिखल ओहिना चकचकाइ छैन, तहिना अपनो मन मानिते छैन जे मृत्युकाल धरि माता-पिता 'समरदेव' कहैत मरलैथ। पड़ोसी किछु होथि, चाहे जाति-सम्प्रदायिक होथि वा नहि होथि, मुदा साँझ-भोर टहलैकाल, आफत-असमानीक समयमे आ कोनो बेर-बेगरतामे दुनू गोरे एकठाम बैस नीक-अधलाक गप-सप्प सेहो करिते छैथ

आ मने-मन सेहो मानिते छैथ जे पड़ोसियेक आशा पड़ोसियाकेँ होइ छै।

आचार्यजीक आचार-विचार गाममे सभसँ भिन्न, सभ दिन रहलैन। सभ दिनक माने भेल जहियासँ आचार्यजी अपना बुधिये-बले जिनगी शुरू केलैन तहियासँ। ओना, एहनो प्रश्न उठिये सकैए जे जखन सभसँ भिन्न छेलैन तखन तँ एक-दोसराक विपरीतो रहले हेतैन। मुदा से नहि छेलैन। छेलैन ई जे जहिना अपना सबहक पूर्वज पहिने कुशियारक रस चुसलैन, पछाइत रस पीलैन, तेकर पछाइत गुड़ खेलैन, चीनी खेलैन मिसरी खेलैन आ आइ सभ किछु उपलब्धक संग रंग-रंगक मिठाइ सेहो भइये गेल अछि। तँए कहब जे दुरागमनिया भुसवा आ हाट परक कुटुर-मुटुर बिसैर गेला सेहो बात नहियेँ अछि। तहिना, तेल बनैसँ पहिने लोक भुजुए तरकारी तक रहैथ, तड़ुआमे नहियेँ पहुँचल छला, भलेँ भरता, सन्ना, चटनीक अनुभव किए ने भऽ गेल होनि, तहिना आचार्यजीक बेवहार छैन। कखन केते पानि पीब आ कखन केते खाएब, तेते तकक ठेकान आचार्यजी रखने छैथ।

मनोहरसँ आचार्यजी बीस बर्ख जेठ छथिन। जखन मनोहर आठे-नअ बर्खक छल तखन आचार्यजीक चालि-प्रकृतिसँ मनोहर प्रभावित हुअ लगल। मुदा प्रभाव तँ छायाकारी छल, वस्तुकारी नहि छल। उर्वर खेतमे जहिना जेठुआ बुन्न पड़िते घास-पातक संग नुकाएल (धरतीमे छीपल) फूलो-पत्र आ अन्नो-फल-बीज अंकुरित-अकुरि जनैमिते अछि, तहिना मनोहर सेहो आचार्यजीक भेद लगबए लगल जे कोनो एहेन भेद अछि कि नहि जे आचार्यजीक संग अपनत्व बनत। जाधैर अपनत्व नहि बनत ताधैर समत्व केना बनि पौत..? जिनगीक लम्बाइ-चौड़ाइ की बाँसक धुजा जकाँ तिरछियाएल उड़ैत चलैए ओ तँ सरिता जकाँ डोह-डावरकेँ पानिसँ भरैत चलैए।

आचार्यजी बेरूपहरमे भाँग पीबै छैथ। जेकरा अपने पीसए पड़ै छैन। लोढ़ी तँ हमहूँ चला सकै छी, कहबैन जे लोढ़ी हम चला दइ छी,

अपने देखा-देखा दिअ। जखने मनोहरक मनमे उठल कि सम्बन्धक ताक भेट गेलइ। जखन आचार्यजी सिलौट-लोढ़ीक ओरियान करए लगता तहीकाल पहुँच जाएब। मनोहरकेँ से सुतरल।

भाँग पीसैक ओरियानमे जखने आचार्यजी बैसला कि सिलौटपर सँ आचार्यजीक बाँहि पकैड़ उठबैत मनोहर बाजल-

"चाचाजी, सिलौट-लोढ़ीक काज हम कऽ दइ छी आ अहाँ आगूमे बैस देखा-देखा दिअ।"

ओना, अखन तक आचार्यजी मनोहरकेँ बाल-बोध बच्चा जकाँ बुझै छला मुदा ओही बालपनमे जीबठपनो तँ छीपले अछि। भाँग पीसबक प्रक्रियामे सभसँ भारी–मेहनतक हिसाबसँ–काज भेल शिलापर शिला रगड़ब। शिलापर लकड़ी पड़ने जखन चानन बनैए तखन शिला तँ शिला भेल। शिलपनो तँ बनियेँ सकैए। मनोहरक जीबठपन देखि आचार्यजी जिनगीकेँ हिया कऽ देखलैन जे एहेन शील, माने जीबठपनक उपयोग जिनगीमे केतए-केतए भऽ सकैए। ई तँ भेल एक जीवनक विचार, माने आचार्यजीक जीवनक, मुदा दोसर जीवन तँ सेहो लगले ठाढ़ अछि। जेकर जीवनी-शक्तिक उपयोग अपन जीवनमे लेब, तेकरा जीवनमे अपने कि जीवनी-शक्ति दए पौलिऐ, ईहो तँ प्रश्न अछिए। मुदा आचार्यजीक सोझराएल जीवन आ सोच तँए मन हूबगरसँ विचार देलकैन जे जखन कियो बैंकसँ ट्रेक्टर उधार लए चलबैले एकटा ड्राइवर रखि, नोकरदार परिवार बनि सकैए तखन जीवन भरियाएल केतए अछि। मुदा से तँ नहि, जीवन तँ जीवन छी, जीवन-शक्ति जीवनशीलसँ अबैए। मनुक्खक जीवन-यात्रामे अपन की गति अछि, ई मूल प्रश्न भेल। दुनियासँ केते लेलिऐ आ केते देलिऐ, एकरे ने धुरी बनाएब। यएह ने भेल देव-दानवक बीच मथन।

जहिना आचार्यजी मनोहर पेब मने-मन गद-गद होइत रहैथ जे विद्यापति जकाँ उगना भेट गेल। आब भवानीपुर ठेकनबैक अछि।

तहिना दोसर दिस मनोहर सिलौटपर लोढ़ी रगड़बक सुधि बिसैर गेल आ ओटोमेटिक मशीन जकाँ बुध-विचरण करए लगल।

मनोहरकेँ बेसुधि भेल सिलौटपर लोढ़ी रगड़ैत देखि आचार्यजी मने-मन आँकि लेलैन जे माए-बाप नामक चुनाव, माने मनोहर नाम, सोचि-विचारि रखने छथिन। जीवनक अनेको ढलानमे कोन जीवनकेँ कोन ढलान उपयोगी हएत, अही बीच ने सामंजसक जगह अछि। एकर माने ई नहि बुझब जे समत्व योग दुनियाँक जोड़-घटाव छी। मनोहरपर मनमुग्ध भऽ आचार्यजी बजला-

"मनोहर, मन-मनक बात लोक बिसैर जाइए मुदा लिखि कऽ सिखौलहा नइ बिसरैए। काल्हिसँ आबह। सभसँ पहिने तोरा अक्षर बोध करा दइ छिअ। पछाइत अपने जिनगी भरि पढ़ैत-गुणैत रहिहह।"

आचार्यजीक बात सुनि मनोहर ठेकनौलक जे भरि छाती पानि तक लोक नइ डुमैए, बेसीसँ बेसी पिछैड़ कऽ खसि सकैए। मुदा अगममे तँ डुमबे करैए। कोनो स्थानपर पहुँचैले जेना किछु दूर देखलो रहल आ किछु दूर नहियोँ देखल रहल जइसँ रस्ता चलनिहार दू-बटिया भऽ जाइए। माने, जहिना किछु गोरे अनुभुआर रस्तासँ डरि चलबे छोड़ि दइ छैथ आ किछु बुर्ड़ाक भऽ नहि चलै छैथ, सेहो बात तँ नहियेँ अछि। एक तँ नव उमेरक बचपन मन मनोहरक, तइमे आचार्यजी ओहन भार उठा लेलखिन जे दुनियाँक सीख छी। खुशीसँ मनोहरक मन माति संकल्पित भेल जे काल्हिसँ आचार्यजी कक्काक जारनो फारि देबैन। मनोहर बाजल-

"काकाजी, अखने हम सिलेट-पिलसीन कीनने अबै छी।"

कहि मनोहर चलि गेल। तैबीच आचार्यजी भाँग पीब नेने छेला। धार-पोखैरमे पूर्वा वा पछबा हवाक सिहकीमे असथिरो पानि जहिना सिहकए लगैए तहिना आचार्यजीक मन सिहकए लगलैन। जइसँ मथन कऽ रहल छला जे ऋषि-मुनि सभ सेहो भाँगक बर्जित नहि केलैन, आ

साए-साए बर्ख जीबै छला..। केना जीबै छला आ भाँगक वर्जित नहि केलैन, मुदा से तँ ओ सभ आब छैथ नहि जे पुछबैन, तहिना देखै छी जे तमाकुल खेनिहार लोक साए-सबा-साए बर्ख जीबै छलाहो आ जीवितो छैथ आ अखन लोअर प्राइमरी स्कूलक बच्चाकेँ केंसर होइ छै तइमे तमाकुलक दोख केतए अछि? कियो सुखाएल तमाकुल पातकेँ चुन मिला उपयोग करै छैथ तँ कि एसिडयुक्त तमाकुलक उपयोग नहि करैए सेहो तँ नहियेँ कहल जा सकैए...। तैबीच सिलेट-पेन्सिल नेने मनोहर पहुँच गेल। आचार्यजीक मन सेहो चलए लगल छेलैन। मनोहरक हाथमे सिलेट-पेन्सिल देखि आचार्यजी बजला-

"बौआ, पहिने अक्षर की छी से बुझि लएह।"

बजैक क्रममे आचार्यजीक मुहसँ निकैल गेलैन। मुदा लगले मन चेतौनी देलकैन जे अखन जइ क्रममे अपने विचरण कऽ रहल छी तइ क्रममे मनोहर थोड़े अछि। एहने ठाम ने लोक बजैए जे 'बौक गुरु बहिर चेला', अखन जे मनोहरकेँ अक्षरक ब्रह्मस्वरूपमे विचरण कराएब से उचित नहि। अखन उचित ओतबे हएत जे मनोहरकेँ 'अ' माने अमरूद आ अन्तिम 'ज्ञ' माने ज्ञानी बना सिखा दिऐ...।

अपन जे विचारक क्रम आचार्यजीक छेलैन ओ अपने लचैक निच्चाँ मुहेँ झुकि गेलैन। झुकिते मनमे एलैन जे पहिने अक्षर (अ-आ) सिखबैसँ नीक हएत जे मनोहरकेँ जे सभ बुझल छै, पहिने से पुछि लिऐ। जाबे मुहाँ-मुहीं दुनू गोरे पहिने नहि हएब ताबे पढ़ैक जिज्ञासा मनमे ओते नहि जगतै जेते जगैक जरूरत अछि...।

आचार्यजी बजला-

"बौआ मनोहर, कहुना भेलह तँ तोहूँ बच्चासँ चफलगरे भेलह। बारह टा जे महीना होइए से भरिसक तोरा नइ बुझल हेतह।"

मुड़ी डोलबैत मनोहर बाजल- "केते मास होइ छै, से तँ नइ बुझल

अछि मुदा चैतमे रामनमी आ आसीनमे दुर्गापूजा आ अगहनमे धनकटनी होइए, से बुझल अछि।”

एक तँ विचारमे मगन आचार्यजी ओहिना रहिते छैथ, किए तँ सदिकाल मनकेँ मनन बीच रगैड़ते रहै छैथ जे नीकसँ नीकतर केना बनब। तइ बीच दोसर विचार मनोहरक तीनू मास सुनि मन आरो महमहा गेलैन। महमहा ई गेलैन जे चैतमे रामनवमी, आसीनक दुर्गापूजा आ अगहनक धनकटनी जँ बुझले छै तखन जीवनमे बाँकी की रहल जे अनेरे लोक जीवन भरि रोडपर वौआइत रहत। वौआएत आकि चलत, अखन से नहि, अखन बस एतबे जे तीनू मासक दर्शन। आचार्यजी बजला-

“बौआ मनोहर, तूँ ते तीनियेँटा मास कहलह, मुदा होइए बारहटा। आइ पहिल दिन छिअ तँए बेसी केते बुझबह। नइ तँ सुना दैतियह जे बारहो मासक बारहमासा केहेन-केहेन अछि।”

बजैत-बजैत आचार्यजीकेँ मनमे जेना झाँउ एलैन तहिना चुप भऽ गेला। राजस्थानक मयूर जकाँ जे जहिना पाइनिक ताकमे अँगने-अँगने वौआइए तहिना बारहो मासक दिन-बेरागन, फूल-फल, तीमन-तरकारी, अन्न-पाइनिक ताकमे मनोहर वौआए लगल। तइ बीचमे आचार्यजीक बकार बन्न भेल छेलैन। आचार्यजीकेँ चुप-चाप देखि मनोहरक मनमे भेल जे भरिसक चाचाजी अगुलका बात बिसैर गेल छैथ, तँए चुप भेल छैथ। किए तँ मनोहरकेँ बुझल अछि मामा गाममे एकटा बिसरभोर मामा सेहो छैथ। ई बात मनोहर माइक मुहेँ केता दिन सुनने छल तँए मोन छै। सुनने ई अछि जे बिसरभोर मामा इलाकामे सभसँ टपल खिस्सकर छैथ, मुदा कहैत-कहैत बीचमे केतए बिसैर जाइ छैथ तेकर ठेकाने ने रहै छैन जे केतए तक बजलौं आ केतएसँ छुटि गेलौं। तइले सुननिहारो के तँ एते भार लिअ पड़त ने जे रस्तामे, माने सिस्साक बीच जे केतौ छुट-छाट भऽ जाए तँ मोन पाड़ैत चली। तखन ने बिसरभोरो खिस्सकर रहता तैयो ताजा-तजी चलैत रहता। यएह सोचि मनोहर बाजल- “चाचाजी, जखन बारह

मासक चर्चा कइये देलिऐ तखन एकटा बारहमासा, तेकर दूटा छहमासा आ तीनटा चौमासा भेल, सेहो कइये देबइ।"

विचारसँ भरल आचार्यजीक मन गदगदाएल रहबे करैन, तैपर ओहन सुननिहार जे सुनैले तैयार भऽ गेल अछि, तखन जँ ओकरा श्रवणशक्तिसँ जीवन शक्ति नहि भेटए से अनुचित। आचार्यजी बजला-

"मनोहर, मन ने ते थाकल बुझि पड़ै छह?"

मनोहर बाजल- "एतबेमे थकि जाएब..!"

आचार्यजी बजला-

"पहिने एकबेर चाहक ओरियान करह।"

चाह पीबैत-पीबैत आचार्यजीक मनक चाह आरो बढ़ि गेलैन। बजला-

"मनोहर बौआ, जखन तूँ सुनैले तैयार छह तखन अपन पीठ देखाएब उचित नइ बुझै छी, चाह पीबिये लेलौं, पान खुआबह आ ललिआएल मुँहक बात सुनिहह।"

ओना, पहिने मनोहर अकबकाएल जे छिऐन हिनका ऐठाम, माने आचार्यजीक ऐठाम आ कहै छैथ हमरा। जँ उगना जकाँ नोकरियो करैत रहितौं तैयो दोकान-दौरीसँ चीज-वौस कीनि-कीनि आनितौं, मुदा सेहो तँ नहियेँ अछि। किछु भेला तँ पड़ोसिये ने भेला। मुदा जहिना आचार्यजीक आढ़ैत होइ छेलैन तहिना आचारी काकी हरे-हरे-के मुस्ताइज रहिते छैथ। मनोहर केतएसँ कोन वस्तु आनैत, तँए सोझे आचार्यजीक आँगन दिस विदा भेल। दुरुखेपर बैसल आचारी काकी, जे अपन कानसँ सुनि पहिनहिसँ सचेत रहिते छैथ। हुनका देखिते मनोहर बाजल- "चाची, पानक ओरियान कऽ दिअ।"

आचार्यजी लग आबि मनोहर बाजल- "चाचाजी, बीचसँ पढ़ाएब शुरू करब आकि जड़िसँ?"

दुनू गोरेक विचारमे दूरी रहने भिन्नता छेलैन, किए तँ बाल-बोध मनोहर 'अ-आ' सीखबकेँ जड़ि बुझैत अछि आ आचार्यजी एक्केबेर बड़क गाछ जकाँ निच्चाँ-ऊपर सगतैर सिर छोड़बकेँ जड़ि बुझै छैथ। मनोहरक टोकबकेँ आचार्यजी अधला नहि बुझलैन, तेकर कारण मनमे उठि गेल छेलैन जे यएह धरती छी जैठाम पेटक बच्चा सेहो टोक-टाक सभ दिनसँ करैत आबि रहल अछि, तखन जँ मनोहर टोकलक तँ नीके केलक। आचार्यजी बजला-

"बौआ, जड़िये छुटि गेलह। आब जड़ियाएल बात सुनह।"

ओना, मनोहर 'जड़ि' आ 'जड़ियाएल बात' सुनि कनी सकसकाएल जरूर, मुदा लगले मन कहलकै जे जड़ि की आ जड़ियाएल की से तँ जखने चाचाजी बाजब शुरू करता तखन अपनौं गुणए लगब जे गुन्ना जकाँ गुणा बैइसैए की नहि...।

मनोहर बाजल-

"चाचाजी, जखने जागी तखने परात।"

अपना विचारे मनोहर बाजल छल, मुदा आचार्यजीकेँ क्रोधक लहैर उठलैन। कहू जे सदिकाल सभ पर्यावरणक चर्च करैए मुदा समयानुसार जिनगी चलै दिससँ नजैरिये ससैर जाइ छै..! मुदा लगले आचार्यजीक मन अपन विचारक धरती पकैड़ लेलकैन। बजला-

"बौआ, महिना आ बारहमासाक जे विचार उठल ओ आगूसँ उठि गेल, तँए सदिकाल छीपा-पनार होइक सम्भावना बनल रहत। तँए जड़ियेसँ कहै छिअ।"

जहिना दुनू कान तहिना दुनू आँखिसँ चकोना-चौकन्ना होइत मनोहर बाजल-

"चाचाजी, अहाँ कि हमरा कोनो अधला पाठ पढ़ाएब, जे नीक बुझि पड़ए से पढ़ा दिअ।"

आचार्यजी बजला- “कारोबारमे भूल-चूक लेनी-देनी कनी-मनी भइये जाइए, मुदा तेकरा लोक सुधारैत चलैए। मासक जे चर्चा शुरू केने छेलियह से अखन ओहिना छोड़ि दहक। किए तँ बारहमासा सुनैक कानेटा नहि ओइमे बारह मासक जीवनो ने छीपल रहैए, तेकरो ने देखैक अछि। तँए ओइसँ पहिने मासक दू अर्द्ध, मास माने दू पक्ष- कृष्ण आ शुक्ल, तेकर दू पक्ष, माने सप्ताह, जइमे सात दिन होइए, एक दिन माने चौबीस घन्टामे सेहो होइए। ओना, राति-दिन दुनू मिला चौबीस घन्टा होइए। जे बारह-बारह घन्टाक नहि, कम-बेसी होइए। सालमे मात्र दुइये दिन एहेन होइए जे बरबैर होइए। बाँकी समय कोनोमे दिन नहमर होइए आ राति छोट होइए आ कोनोमे राति नमहर आ दिन छोट होइए। तहूमे कोनो समयक खाली रातिमे शीत खसैए तँ कोनो समयक दिन-राति शीत खसैए।”

बिच्चेमे मनोहर हाफी केलक। मनोहरक हाफी देखि आचार्यजीक मनमे भेलैन जे भरिसक मनोहरकेँ ओंघी आबि रहल छै। फेर लगले भेलैन जे जँ ओंघीसँ नीनक आवाहन रहैत तँ ओ नैनक माध्यमसँ रहैत, से तँ नहि भेल, मुहसँ हाफी भेल। हाफी हेबाक अनेको कारण अछि। तइमे एकटा कारण नीनोक आगमन होइए। जैठाम अनेको कारण अछि तँठाम एककेँ मुख्य प्रश्रय, माने एक नम्बरमे राखब उचित नहि। जखन जेहेन परिवेश रहत तखन तेकर महत अपने हएत। आचार्यजीक मन मानि गेलैन जे मनोहरक हाफीक माने ई नहि भेल जे (मनोहर) ओ नीनसँ सुतै दिस बढ़ि रहल अछि। फेर अपने मन कहलकैन जे किए ने मनोहरेसँ पुछि लिऐ। बजला-

“मनोहर, एलह पढ़ैले आ लिखैसँ पहिनहि हफुआए लगलह।”

बाल-बोध मनोहर, किए कोनो बातकेँ छिपबैत। सुहरदे मुहेँ बाजल- “चाचाजी, हाफियोकेँ की कोनो सीमा-नाँगैर अछि। केकरो मन चढ़ने हाफी होइए तँ केकरो मन उतरने सेहो होइते अछि। मुदा हमरा से

सभ नहि अछि, अहाँ जेतेकाल पढ़बए चाहब, तेतेकाल पढ़ैले हमहूँ तैयार छी।"

मनोहरक उत्सपूर्ण बात सुनि आचार्यजीक मन तृप्ति (तिरपित) भेलैन। तिरपित होइक कारण भेलैन जे जँ एकोटा मनुखकेँ अपन मन मुताबिक, माने अपन ज्ञानानुकूल, विचार ग्रहण करा दिऐ तँ ओ पूर्ण जीवनक सार्थकता भेल। फेर अपने मनमे भेलैन जे अनेरे ने मनोहरक समय दुरि करै छिऐ। जखन ओ सिलेट-पेन्सिल आनि पढ़ैले तैयार अछि तखन जँ एको अक्षर नहि सिखा देब सेहो केते उचित हएत। अपने जँ कोनो विचारक मन-मथन करैक अछि तइले अपन समय ने बनाएब आकि अखन मनोहरक समय दुरि करबै...।

आचार्यजी बजला-

"बौआ, अखन जे काज दुनू गोरेक बीच अछि, ओ तँ सझिया भेल किने?"

मनोहर बाजल-

"हँ, से तँ भेबे कएल।"

आचार्यजी बजला-

"केना भेल?"

मनोहर बाजल-

"जे बुझै छी आ जे पुछलौं, से तँ कहिये देलौं। जे नहि कहलौं से बुझू जे नइ बुझल अछि।"

आचार्यजी बजला-

"अपन अन्दाजोसँ किछु कहह।"

मनोहर बाजल-

"चाचाजी, कियो कोनो काज केला-पछाइत अन्दाज करैए आ हम

पहिनहि केना कऽ लेब।"

मनोहरक बात सुनि आचार्यजी मने-मन सहमला। सहमला ई जे जखने बाल-बोधमे तार्किक जागरण, माने तर्क करैक बोध, होइए तखने ओकर बौद्धिक शक्ति संचरित हुअ लगैए। बजला-

"बौआ, तूँ पढ़ए चाहै छह आ हम पढ़बए चाहै छिअ। दुनू गोरेक बीचक काज भेल, पढ़ाएब आ पढ़ब।"

आगू बजैक विचार आचार्यजीक पेटेमे रहैन तइ बीचमे मनोहर बाजल-

"से तँ भेबे कएल।"

अपन आ मनोहरक विचारक बीच सीमांकन करैत आचार्यजी बजला-

"तोरा हम पहिने 'अ, आ' लिखब सिखेबह?"

मनोहर बाजल-

"बड़बढ़ियाँ।"

आचार्यजी बजला-

"तोरा तँ एको अक्षर सीखल नहि छह, तँए पहिने सिलेटपर लिखि दइ छिअ। जेकर सरूप बना तूँ पेन्सिलसँ ओकर अभ्यास करबह। तूँ ते अपन काजमे लगबह आ हम तँ बैसारी भऽ जाएब किने?"

विचारक दाँव-पेंच मनोहर बुझैत तखन ने, से तँ बुझैत अछि नहि। बाजल-

"हँ, से तँ अहाँ भइये जाएब।"

आचार्यजी बजला-

"तखन तोंही कहह जे ई उचित भेल?"

सोझगर विचार देखि मनोहर बाजल- "से तँ नहियेँ भेल, मुदा फेर

चलत केना?"

आचार्यजी बजला- "चलैक यएह ने नीक हएत जे तोरा हम सिलेटपर लिखि दइ छिअ। जेकरा तूँ अपना ऐठाम अभ्यास करिहह आ ऐठाम जेते काल दुनू गोरे एकठाम छी, तेते काल आरो-आरो विषय चर्च करबह।"

आचार्यजीक विचार मनोहर बुझि गेल। बाजल- "चाचाजी, अहाँ ते घीबोसँ चिक्कन बात कहलिऐ।"

ओना, बजैक क्रममे मनोहर बाजि गेल, मुदा ई बुझबे ने केलक जे केते पाठ एक दिनमे पढ़ौल जा सकैए आ पढ़लो जा सकैए। इच्छा केकरा ने होइ छै, तहूमे बेगरता पड़लापर तँ आरो बेसी होइ छै जे आइ जँ डॉक्टरीक बोध रहैत तँ माघक बारह बजे रातिमे लहेरियासरायक सड़कपर टपला खइतौं। तहिना जँ इंजिनीयरिंगक लूरि रहैत तँ पानि बेतरे खेतकेँ परती बनल रहए दैतिऐ। जामवन्त समस्या जीवनमे अछिए। मुदा से बात आचार्यजीक मनमे ठहैक गेलैन। ठहकलैन ई जे नान्हिटा काँच माटिक दिआरी, जइमे तेल मखौल बाती बाड़ि ब्रह्मबाबाक स्थानमे दुनू हाथ जोड़ि कहबे करै छिऐन ने जे हे ब्रह्मबाबा धन दिअ, समांग दिअ, विद्या दिअ इत्यादि-इत्यादि। मुदा ई थोड़े बुझै छिऐ जे जखन कोनो वस्तु, धन हुअ कि समांग आकि बुधि-ज्ञान, ओकर पन्ना, पोथीक पन्ना जकाँ पकैड़ आगू बढ़ब तखन ने बुझब जे कोन वस्तु केते असानीसँ प्राप्त होइए आकि केते मेहनतसँ होइए। ई तँ भेल जिनगीक अध्ययन-अध्यापनक बात, असल जड़ि तँ छुटले अछि। ओ छी पूर्ण जीवन। केहेन जिनगी बनि वा बना दुनियाँमे, माने समाजमे, भ्रमण करैत भ्रमित भऽ रहल छी, ई तँ अपन अपने ने बुझब। जहिना सीताक खोजमे राम बोने-बोन वौएला तहिना आचार्यजी मनोहर-ले विचारक बोनमे वौआ लगला। पहाड़पर चढ़ल जकाँ तराइ दिस ताकि आचार्यजीक मन जड़ी-बुटी खोजए लगलैन। आकक गाछ लग जखन पहुँच पात देखए लगला कि

जड़िमे ओंघराएल साँप देखलैन। साँपपर नजैर पड़िते मन मुस्किएलैन। मुस्कीक कारण भेलैन जे मूसे जकाँ एकटा बील भेटलैन। बिल ई भेटलैन जे मनोहरकेँ किए ने खिस्सा जकाँ सुना दिऐ जे साँपक बीखक माने भेल विषैला साँपक जे बीख शरीरक रक्तक नलीसँ विष वृद्धि तेना करैए जे शरीर विषाक्त भऽ मृत्युक कगारपर पहुँच जाइए। तेकरा अखन तक कोन रूपेँ प्रतिकार होइत आबि रहल अछि। मुदा लगले अपन मन कहलकैन जे एहेन बातक विचार करैबला मनोहर अखन नइ भेल अछि तँए अनेरे मनकेँ भारी नहियेँ बनाएब नीक हएत। फेर अपने मन दोसरकेँ देखि गवाही देलकैन जे देखै छी जे मनोहर एते-एते धिया-पुता सभ भरि-भरि राति रानी-सरंगाक खिस्सा सुनबो करैए आ आधासँ बेसी मनो पाड़ने रहिते अछि, तखन मनोहर किए ने रखि सकैए।

ओना, विचारक बीच आचार्यजीक मन कने ठमकलैन। ठमकैक कारण भेलैन जे ईहो बात तँ सत्य अछिये जे बच्चाकेँ 'अ, आ'क खाँत सिखैमे छअ दिनसँ बेसीए समय लगैए तहिना दोसर दिस कोनो खिस्सा-पिहानी ओइसँ केते गुणा नमहर ओइसँ कम समयमे मनमे बैस जाइए। मुदा लगले अपन मन, माने आचार्यजीक मन वर्तमानकेँ आगूमे रखि बजला-

"बौआ मनोहर, पहिने अपन पैछला काज सम्हारि लेब नीक हएत, तँए पहिने 'अ, आ'क खाँत लिखि दइ छिअ तूँ गामपर (घरपर) अभ्यास करिहह। आ एकटा खिस्सा गामक सेहो सुना दइ छिअ।"

मनोहर बाजल- "चाचाजी, बड़ी कालसँ गप-सप्प भेल अछि तँए पहिने दुनू गोरे एक-एक गिलास पानि पीब लिअ।"

आचार्यजी बजला-

"बड़बढ़ियाँ।"

मुदा तरे-तर आचार्यजीक मन तरियाइत ओइठाम पहुँच गेलैन

जैठाम यएह एक गिलास पानि लाखो कोसक दूरी समाजमे बनौने रहल अछि। आ अखनो अछि। जेकरा समाजक बीच पानिकेँ, समगम बनेबा लेल अनोको योद्धा अपन जीवन बलिवेदीपर चढ़ा देलैन, मुदा समस्या अखनो समाजक बीच नहि अछि सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। बजैक क्रममे बजनिहार जेते तियाग-तपस्याक बात करैथ मुदा सच्चाइ जे अछि ओहो तँ जीवित अछिए। भलेँ ओकरा नइ देखिऐ वा देखि कऽ अनदेखि बनि जाइ वा देखैक साहसे नहि करी ईहो तँ उचित नहियेँ अछि। रोग-रोग छी जाधैर शरीरमे लगल रहत ताधैर रोगाएले शरीर कहौत नहि की निरोग। अखनो समाजक बीच जेतबो समगमता पुरुख-पात्रक बीच भेल अछि कि तहिना नारियो जगतक बीच पाइनिक समगमता आएल अछि। तइ बीच मनोहर पाइनिक गिलास आचार्यजीक आगूमे बढ़ौलक। हाथमे गिलास लैत आचार्यजी बजला-

"बौआ, तूँ पानि पीलह?"

मनोहर बाजल-

"चाचाजी पहिने अपने पीबै तखन ने..!"

ओना, विचारकेँ टारैत आचार्यजी बजला-

"जाबे हम पीबै छी ताबे तोहूँ पीब लएह।"

मुदा मन नाचि गेलैन। नाचि ई गेलैन जे जइ बच्चाकेँ 'अ-आ'क बोध नहि भेल अछि तइ बच्चाकेँ नैतिक बोध केना भेल?

तइ बीच मनोहर सेहो पानि पीब आबि गेल। खाली गिलास रखि एक हाथसँ सिलेट आ दोसर हाथसँ पेन्सिल उठा 'अ' लिखैत आचार्यजी बजला-

"बौआ, जहिना हाथसँ लिखै छी, तहिना मुहसँ सेहो कहै छिअ। दुनूकेँ अभ्यास करैत देखबो करह आ बजबो करह।"

'अ-आ'क खाँत पुरबैत आचार्यजी बजला- "मनोहर, आरो लिखि

दिअ आकि एतबे रखबह?”

मनोहर बाजल-

“चाचाजी, सुकला काका बेसीकाल बजै छैथ जे हर सिखए जाइ तँ पहिने पेना पकड़ब सीखी। आइ तँ सिलेटे-पेन्सिल पकड़ैमे समय चलि जाएत, तखन केते सीख सकब।”

मनोहरक बात सुनि आचार्यजी चौंकला। चौंकैक कारण भेलैन जे जैठाम हरवाह हाथक पेनाक कलासँ अबोध पशुकेँ सेहो क्रियागत कए सकैए, तैठाम मनुख तँ मनुख छी। किछु छी तँ बनमानुससँ बेसी भेबे कएल। बानर नचा लोक भारी-भारी सर्कस-थियेटर चला लइए, तैठाम जँ अपने केतबो नँगरकट किए ने होइ मुदा छी तँ बिनु नाँगरियेक जीव...।

आचार्यजी बजला- “मनोहर, सुकल भाइक बात हम नहि बुझि पेलियह। आरो की सभ सुकल भाय बजै छैथ?”

मनोहर बाजल- “पौरुकाँखिन एके घूर लग बैस दुनू गोरे आगि तपैत रही। अपने फुरने सुकल काका बजला- बौआ, जखन हम तोरे एतेटा रही, तखने सुरजा काका कहलैन जे रे सुकला, लूरिये जिनगी छी आ जिनगीए लूरि छी। तँए चल तोरा हर सिखा दइ छियौ। एक लोढी अन्न कमाइक लूरि भऽ जेतौ किने।”

आचार्यजी बजला- “बौआ मनोहर, आब मन अकछाए लगलह। आब काल्हिले रहअ दहक।”

मनोहर बाजल- “जाइ छी चाचा, गोड़ लगै छी।”

आचार्यजी बजला- “अच्छा जो, असीरवाद काल्हि देबौ।”

❑

शब्द संख्या : 3339, तिथि : 03 अक्टुबर 2020

केलहा सभ पानिमे गेल

विजयादशमी बीतना आइ पाँचम दिन छी, आइये कोजगरा सेहो छी। काल्हिसँ कातिक चढ़त। खेतीक दशो दुआरि दशमीए-मे खुजैए से मानि उचितलाल भाय घरसँ हटल, माने अपना घरसँ दू बीघाक दूरीपर अपन चौमास देखैक विचार केलैन। कहब जे किसान दुर्गेपूजासँ जओ-गहुम, रबी-राइ आ तीमनो-तरकारीक खेती करए लगै छैथ तैठाम कोजगरा दिन उचितलाल भाय चौमास खेत देखैले जेता, ई उचित भेल?

..की उचित की अनुचित ई तँ समय पुरबैए, अपन साध सोल्होअना थोड़े अछि। अपन सोलहअनाक साध हुअए वा नइ हुअए मुदा चौदहअना तँ जरूर अछिए, दूअना असाध जरूर अछि। मुदा की साध की असाध से तँ अपने ने बुझब आकि केकरो शाती केकरो बुझलासँ होइ छै।

आठ बजे भिनसुरका समय, आसीन-कातिक मासक बीच सीमापर ठाढ़ उचितलाल भाय चाह पीब खेत देखए विदा भेला। घरसँ निकैलते मन कड़ुआए लगलैन। कड़ुआइक कारण भेलैन जे यएह चौमास छी जइसँ परिवार चलैत छल..! मोन पड़लैन पाँच साल पैछला समय। यएह चौमास छी जइमे राजेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय- पूसासँ आलूक बीआ आनि खेती केने रही, चारू कट्ठामे साठि मन, माने चौबीस क्वीन्टल आलू भेल छल जइसँ घर भरि गेल रहए, आ यएह चौमास छी जे आसीन अन्त भऽ रहल अछि मुदा अखनो खेत तैयार करै-जोकर नहि भेल अछि। मुदा

उपाये की? उपाय तँ यएह ने जे जखन जेहेन समय हुअए तखन तेहेन बनि अपनाकेँ अँटावेश करी, तखने ने जीबैक सम्भावना बनैए।

खेतक आड़िपर, माने चौमास खेतक आड़िपर पहुँचते उचितलाल भाइक मन साइबेरियाक ओइ किसानपर पहुँच गेलैन जिनकर खेतमे छह-छह, अठ-अठ मास बर्फ जमल रहैए आ सालक जेतबे समय खेतीले भेटैए तेकरे तेते जतनसँ करै छैथ जइसँ सालो भरि गुजर सेहो करबे करै छैथ, तैठाम तँ अपन मात्र मौसम पछुआएल अछि। चौमास मौसम पछुआएब भेल बिलमसँ काज शुरू करब। जखने समय पेबब तखनेसँ लगि जाएब...।

आड़िपर बैसल उचितलाल भाय मने-मन विचारिये रहल छला कि बिच्चेमे हल्लाक उझूक उठल- 'गणपति मरि गेल.! गणपति मरि गेल.!!'

झौहैरिक बसातमे उचितलाल भाय नीक जकाँ नहि सुनि-बुझि पेब रहल छला जे कथीक अनघोल छी। कहब जे दुइये बीघापर उचितलाल भाय छला आ हल्लाक उझूक उठल मुदा तैयो ओ सुनि-बुझि नहि पेलैन?

..हल्लाक उझूको-उझूकमे अन्तर होइए। कोनो असामयिक घटनाक हल्लाक उझूक उठैए आ कोनो सामयिक घटनाक उझूक उठैए। दुनू दू रंगक होइते अछि। सामयिक घटनाक उझूकक प्रभाव गम्भीर होइए। 'मरि जाएब' सामयिक भेल। मुदा मरबोमे गणपतिक मृत्यु, सामयिक-असामयिक दुनू भेल, किए तँ उचितलाल भायसँ दश बर्खसँ ऊपरे उमेरक छोट गणपति छैथ।

घर दिस दसो डेग उचितलाल भाय नहि बढ़ल छला कि सुमित्रा भौजीकेँ दुनू हाथ छिड़ियबैत बजैत अबैत देखलैन। मनमे शंका भेलैन जे लगले एहेन की भेल जे क्षणेमे क्षणाक भऽ गेल। तैबीच सुमित्रा भौजी सेहो दस डेग आगू आबि गेलखिन। उचितलाल भाय बजला- "की बात छी, जे एना परेशान छी?"

ओना, भौजीक परेशानीक कारण टोलक स्त्रीगण समाजक बीच जे गणपतिक सम्बन्धमे हवामे उड़ि रहल छल, से छेलैन। जे बात सुमित्रा भौजी अपने नहि बुझैत रहैथ। जँ से बुझैत रहितैथ तँ ढोल केकरो, बजौनिहार कोइ आ तबाह सुननिहार किए हएत। सुमित्रा भौजी बजली-

“गणपति मरि गेल.!”

‘गणपति मरि गेल’ सुनि उचितलाल भाइक मनमे ने कोनो झाँट-बिहाड़ि लगलैन आ ने कोनो पानिये-पाथर खसलैन। सभ मरैए। सभ मरत। सभकेँ बुझले अछि। एक दिस सामाजिक काजक रूप तँ दोसर दिस अपन जीवनक रूप। जखन खेतक आड़िपर आबि गेलौं तखन खेतक ताक बिनु बुझने घुमि जाइ, ईहो तँ जिनगीकेँ छोड़बे ने भेल। पकड़ब, माने जिनगीकेँ पकड़ब तँ ई भेल जे जीवनक अनिवार्य जे खगता अछि पहिने तेकरा देखैक अछि, तेकरा माने तइ काजकेँ पकैड़ ओइमे कम-सँ-कम कोदारिसँ एको छअ खुनि हाथ जरूर लगा ली। जखने काजक सलामी लेब, जेना अखड़ाहापर पहलवान सभ अखड़ाहा-माटिक सलामी लइ छैथ, तहिना जँ ओइ काजकेँ पकैड़ ससारैत चलब तँ एक दिन एहेन एबे करत जे पूर्णता नेने औत, मुदा तइ बिच्चेमे जीवनानुकूल परिस्थिति निरमित हेबे करैए।

उचितलाल भाय पत्नीकेँ कहलखिन-

“जँ स्त्रीगणक बीचक जिज्ञासा रहैत तँ अहीं चलि जइतौं, मुदा से तँ छी नहि। पुरुखक छी, जइ जिज्ञासामे दसटा पुरुख-पात गणपतिकेँ देखए आएले हेता तँए हम जाइ छी। अहाँ अपन अँगनाक काज देखियौ।”

सुमित्रा भौजी अपन मनक बात जकाँ बुझली, तँए खढ़-पातक पसाही जकाँ जे मनमे लगि चुकल छेलैन ओ एकाएक मिझा झोली जकाँ हवामे उड़ि गेलैन।

बिनु 'हँ-हूँ' किछु बजने सुमित्रा भौजी घर दिस विदा भेली आ उचितलाल भाय चौमास दिस घुमि गेला।

खेतमे पैस उचितलाल भाय हियासए लगला जे जखन खेतक आड़िपर आबि गेलौं तखन खेतीमे हाथ लगाइये देब। नहि किछु तँ चारिटा खढ़ो उखाड़बे करब। चारि कट्ठाक चौमास अछि, तीन फसिल जँ सालमे हएत तँ एक कट्ठाक उपजाक हिसाबसँ परिवारक मासक आमदनी भेल।

कोणे-कानी खेत देखला पछाइत उचितलाल भायकेँ मोन पड़लैन गणपति। गणपति मनमे अबिते गणपतिक साठि बर्खक जिनगी सेहो नजैरमे नाचि उठलैन। नाचि उठलैन ई जे पिताक एकलौता बेटा गणपति। तहू एकलौता बेटामे माता-पिताक उतार अवस्थामे जन्म लेल बेटा। साधारण परिवार, ओना साधारण परिवारक सेहो दू रूप अछि, एक अछि जे निच्चाँसँ ससरैत साधारण अवस्थामे पहुँचल अछि आ दोसर सुभ्यस्त परिवार जे टुटैत निच्चाँ खसल जेकर जीवन-जापन साधारण जीवनक भऽ जाइए, से। गणपतिक परिवार सुभ्यस्तसँ साधारण भेल। गामक दशा सेहो धीरे-धीरे आगू दिस बढ़बे कएल अछि, जइसँ पढ़ै-लिखैक संस्थो बढ़बे कएल अछि। घरोपर सँ कौलेज (साधारण कौलज) धरिक शिक्षाक उपलब्धता भइये गेल अछि। गणपति सेहो मैट्रिक पास केलक, दोसर श्रेणीसँ। ओना, गणपतिक पिता साधारण पढ़ल-लिखल जरूर छेलखिन। नाम-गाम लिखल होइ छेलैन मुदा से पितेटा केँ। बाँकी सभ परिवारक बेमाके छेलखिन।

गणपतिकेँ मैट्रिक पास करैत-करैत माता-पिता बुढ़ापामे पहुँच गेलखिन। तँए परिवारकेँ उपार्जनक खगता आवश्यक भइये गेलैन। एक दिस परिवारक आर्थिक उपार्जन तँ दोसर दिस माता-पिताक बुढ़ाड़ीक सेवा। तँए, गणपतिकेँ गामसँ बेसी दूर जा कऽ नोकरी करब असोकर्ज भइये गेल। रंग-बिरंगक लोक गाम सभमे अछिए। लगक बजारसँ

कारोबार चलिते अछि, अखनो झंझारपुर बजारक अपन महत अछिए। केतबो कमला धारक उपद्रव भेल तैयो अछिए। किछु दिन पूर्व तक दच्छिनमे घनश्यामपुर आ उत्तर- खुटौना तकक बजार छल, अखन रोड-सड़क भेने थोड़ेक सिकुरि गेल। मुदा जीवनमे कारोबार तँ बढ़बे कएल अछि...।

झंझारपुरक एकटा दोकानमे गणपति नोकरी शुरू केलक। परिवारेक सदस्य जकाँ गणपति, परिवारे जकाँ, माने ओइ बेपारीक परिवारक सदस्य जकाँ गणपति बनि गेल। जइसँ खाइ-पीबैक सुविधा, रहैक सुविधा सभ किछु उपलब्ध भइये गेलइ। गणपतिक दरमाहा गामक नोकरीक दरमाहासँ किछु विशेष भेबे कएल। ओना, गाममे मैट्रिक पासक लेल कोनो काजो नहियेँ छल। एकर माने ई नइ बुझब जे गाममे काज अछिए नहि। समय छल जखन अपन इलाकाक लोक पेट चलबैक खियालसँ कोलकाता नोकरी करए जाइ छला। ओइठाम नोकरियो करै छला आ उट्ठो काज करिते छला। उट्ठा काज भेल भरि दिन केकरो समान एकठामसँ दोसरठाम उघब वा कोनो दोसरे भरिदिना काज करब। भरि दिनक मजूरी भेल, महिना दिनक हिसाबसँ काज भेल। वएह कोलकाताक (माने बंगालक) अखन सैंकड़ो आदमी गाम-गाममे काज कऽ समान गामे-गाम बेच रहला अछि। खाएर ई भेल बहरबैयाक, गामक बीच गौंआँ लग चलू। खेतीक उपजाक, जखन नव-नव वस्तुक निर्माण नइ होइ छल तखन पैंतालीस प्रतिशत उद्योग (कारखाना) जेना तेलहनसँ तेलक, पटुआसँ पटुआक इत्यादि-इत्यादि मुदा आजुक परिवेशमे कृषिक जेते पैदावार अछि ओ शत-प्रतिशत उद्योगक वस्तु बनि गेल अछि। आजुक मशीनीकरणक जुगमे अनुमान करियौ जे केते इंजीनियरक खगता गाममे अछि। तहिना खेतीक उपजा, उपजबैले केते कृषि वैज्ञानिकक खगता अछि। जाबे मशीनीक संग मशीनी बुधि गाममे नइ पैदा लेत ताबे ओ मशीनक मोल की। सभ देखिते छी जे गाम-गाममे

तीनटा रोग, ब्लडप्रेशर, डायविटीज आ गैस्टिक नबे प्रतिशत लोककेँ आ पनरहसँ ऊपर रंगक प्रतिदिन दवाइ खाइबला पाँच प्रतिशत लोक सेहो छथिए। बीचक जे छी ओ तँ भँट्टा जकाँ झुलिते छी, तैठाम अंदाज करियौ जे केतेक डॉक्टरक जरूरत गाममे अछि। आब ऐसँ बेसी अखन नहि।

ओना, उचितलाल भाय चौमाससँ घरे दिसक रस्ता धेलैन मुदा घरपर रूकला नहि। दरबज्जासँ आगू बढ़ि जखने सड़कपर चढ़ला कि दच्छिन मुहेँ जाइत एक गोरे बाजल-

"गणपति जीब गेल।"

गणपति जीब गेल!' ई की भेल? उचितलाल भायकेँ कोनो अरथे ने लगलैन। लगले सुनलौं 'मरि गेल!' आ लगले सुनै छी जे 'जीब गेल..!'

छगुन्तामे पड़ल उचितलाल भाइक मनमे उठलैन जे लोक जिनगीकेँ सीम-भाँटाक तरकारी ने तँ बुझैए जे लगले असिद्ध रहब आ लगले गलि कऽ राँग भऽ जाएब। क्षणेमे जीवन आ क्षणेमे मरण, ई की भेल। जीवन-मरण तँ जिनगीक परीक्षाक ओ घड़ी छी जे फलो दइते चलैए।

मने-मन उचितलाल भाय सोचबो करैथ आ डेगे-डेग गणपति ऐठाम सेहो ससरल जाइये रहल छला। कनियेँ आरो आगू बढ़ला कि एकटा स्त्रीगणक मुहेँ सुनला- 'सात बेटा रामकेँ, एको ने काम-के।' ओना, एक्के मुहेँ 'राम-काम' सुनि उचितलाल भाइक मनमे उठलैन जे पुछि दिऐ- 'से की कनियाँ?' मुदा लगले मन रोकलकैन जे सामाजिक रूपमे ओ भावो लगती, तँए टोक देब उचित नहि। मुदा उचितलाल भाइक मनमे प्रश्न तँ ठाढ़ भइये गेलैन जे रामकेँ तँ दुइयेटा बेटा, लव आ कुश छेलैन तखन कोन रामक चर्च केली। गाममे तँ अखन मात्र एकटा चलनपियारा गणपतियेटा अछि जे मरै-जीबैक बीचक झुल्लापर झुलि रहल अछि, तहूमे ओकरो (माने गणपतिकेँ) चारियेटा बेटा अछि, सातटा नहियेँ अछि। भलेँ

ओ काजक नहि हुअए मुदा अकाजक नहि अछि सेहो केना नइ कहल जाएत। ..मने-मन उचितलाल भाय विचारिये रहल छला कि एकटा अधबेसू महिला, जिनका उचितलाल भाय भौजी कहै छथिन, बजली- “सभकें अपने केलहा भोगए पड़ै छै।”

उचितलाल भायकें पेटमे गुदगुदी लगि गेलैन। गुदगुदौलकैन ई जे अपने केलहा भोगए पड़ै छै ई मनमे अखनो छैन्हे। ओना, मनमे ईहो भेलैन जे भौजीकें चाबस्सी दऽ दिऐन। मुदा तइ बीच गणपतिक घर लग पहुँच गेल छला तँए उचितलाल भाइक मनमे भेलैन जे जँ कहीं भौजी गणपतियेक विषयमे बाजल होइथ। घर लग छीहे, जँ कहीं ओहो सभ, माने गणपतिक परिवारक लोक सभ सुनने होथि तखन तँ नाँहक मारि जोलहा खाए, तेकर पइर भऽ जाएत। घरसँ लागल एकचारीबला दरबज्जापर असगरे गणपति अपन मृत्युक दर्दकें झेलैत आत्मचीत भऽ गेल छल, तँए मुहसँ बकार नहि निकैल रहल छेलइ।

दरबज्जापर पहुँचते उचितलाल भाय पहिने गणपतिक नाकपर हाथ देलखिन। कहब जे उचितलाल भाय टोकलखिन किए ने? ..बुझले अछि जे कियो केकरो मुहें जीबैए आ केकरो मुहें मरितो अछिए। यएह तँ मनुखक खेल छी। अही खेलक बीच गणपति अपन जिनगीक झुल्लापर लटकल आत्मभोर छेलए।

नाकपर उचितलाल भाइक आँगुर पड़िते गणपति फुरफुरा कऽ आँखि खोललक। उचितलाल भायकें आगूमे ठाढ़ देखि बाजल-

“भाय साहैब, बड़ बेरपर अहाँ एलौं, नइ तँ अपन मनक बात संगे चलि जाइत।”

गणपतिक बातक भाँज उचितलाल भाय बुझबे ने केलैन जे गणपति की बाजल। बड़ बेरपर एलौं, ई की भेल? जे अपने अन्तिम साँस गनैए ओकर ‘बड़ बेर’ की भेल? ओकर ‘बड़ बेर’ तँ मरबे ने भेल। बड़-बेर

तँ ओकरा ने पड़ैए जेकर जीवन संघर्षमे संघर्शशील अछि। दू बर्खसँ गणपति ओछाइन पकैड़ लेलक तखन 'बड़-बेर' केना कहब..? विचारमे अपनाकेँ ओझराइत देखि उचितलाल भाय बजला-

"से की, से की गणपति?"

मृत्युकाल जखन आगूमे ठाढ़ अछि, तहूमे अपनो ओहन छीहे जे कखनो ढन-दे चलि जाएब, तखन की केलासँ जाएब नीक हएत, से तँ अपने ने बुझब। अपनौं तँ ओइ सीमापर पहुँच गेल छी जे किछु क्षण-पलक मेहमान छी। तखन जँ मृत्युक भय करब तँ काज चलत। ..गणपति निर्भय भऽ बाजल-

"भाय साहैब, मनमे किछु बात रहि गेल अछि, जे ने कियो सुननिहार भेला आ ने अपने किनको सुना सकलयैन। यएह बात कहैक अछि।"

उचितलाल भाइक मन मानि गेलैन जे मृत्युकालमे जीवनक किछु विशेष विचार निचोरल अबिते अछि। तहूमे गणपति ओहन जीवन बितौलक जेहेन समाजक पाँचो-दस प्रतिशत परिवारक नहि अछि। उचितलाल भाय बजला-

"गणपति, जाबेधरि तोहर साँस चलैत रहतह ताबे तक सुनैले हमहूँ तैयार छिअ, मुदा तूँ ते अपने दम तोड़ि रहलह अछि, तँए, तूँ जानह जे अपन सभ बात सुना सकबह की नहि।"

जेना कोनो गुड़-घावक पीज तरसँ टंकार मारैत रहैए तहिना गणपतिक मनक विचार टंकार मारलक-

"भाय साहैब, अहाँ हमरासँ दस बर्खक जेठ छी, मुदा अखनो अहाँ ओहिना हँसुआ-खुरपी हाथमे नेने बाड़ी-झाड़ीमे लागल रहै छी जेना जुआनीमे लागल छेलौं। मुदा ह..म..!"

उचितलाल भाय बजला- "गणपति, गाममे जे जीबैए ओ तँ देखिते अछि आ आगूओ देखत तइले तूँ अपन समय[8] किए नष्ट करै छह।"

गणपतिक मनमे जेना अपन पूर्ण जीवन चक्र, महाभारतक कृष्णक चक्र जकाँ चलि रहल छल। मनक हूबा जगबैत गणपति बाजल-

"भाय साहैब, मनमे जेते बात अछि ओ सभ सुनए वा नहि सुनए, मुदा अहाँकेँ सभटा बात कहने बिना नइ मरब।"

गणपतिक बात सुनि उचितलाल भाइक मनमे उठलैन जे अनेरे केतए वौआइ छी, से नहि तँ गणपतिकेँ अपने मने बाजए दिऐ, किछु अछि तँ मृत्युक करीब अछि तँए मनकेँ विचलित[9] हएब सोभाविके अछि। अपन दोख तँ तखने ने मेटाएत जखन सुनैले तैयार रहब, तइ बीचमे जँ अपने मरि जाइ। यएह ने भेल मृत्युक मुँह तक संग पूरब। उचितलाल भाय बजला-

"गणपति, तोरा लगेमे ओछाइनपर बैस तोहर सभ गप सुनैले तैयार छिअ। बाजह जे बजैक छह।"

जीवन क्रिया आ जीवन जखन आमने-सामने होइए तखन राम-रावणक लड़ाइ होइ आकि कौरब-पाण्डवक, दुनूक बीच दल बनबे करैए आ जखने दुनू आमने-सामने होइए तखने दुनू दिसक दूत-भूत तैयार होइते अछि जइसँ हँसेड़ीक बढ़बाड़ि भइये जाइए। ओहने राम दल वा कृष्ण दल जकाँ गणपतिक मनमे एकसंग अनेको प्रश्न उठि गेल। मुदा अपन मन कहलकै जे जखन उचितलाल भाय सभ बात सुनैले तैयार भेल छैथ तखन जेना-जेना जे घटना मोन पड़त से तेना-तेना बजैत जाएब। उचितलाल भाय अपन विचारानुसार विषयकेँ सेरिया लेता। बजैक परिवेश बनिते गणपति बाजल-

"भाय साहैब, चाह नइ पीआएब। अपन हाथ-मुट्ठी नइ रहल।"

गणपतिक विचार सुनि उचितलाल भाय ठमकला। ठमकैक कारण

भेलैन जे मृत्युक मुँह लग पहुँचला पछातियो गणपतिक विचारमे ओ बीजपन अछिए जे जीवन नीतिक सीख छी। ..उचितलाल भाय आध्यात्मिक दृष्टिकेँ नजैरमे राखि बजला-

"गणपति, आबो ऐ दुनियासँ लोभ-लाभ रखनहि छह, छोड़ह एहेन माया-मोहकेँ। भने सभ किछु हाथसँ चलि गेलह। जेते हल्लुक भऽ मरबह तेते ने चचरीपर उठौनिहारकेँ हल्लुक लगबह, नइ तँ मुइला पछाइत यएह देह लाश बनि भारी भऽ जाइए, जइसँ कियो उठौनिहारो ने तैयार हेतह। बाजह आगू बाजह।"

गणपति बाजल-

"भाय साहैब, अहाँ जहिया हाइ स्कूलमे पढ़ैत रही तहिया हम भट्ठा धेलौं।"

बिच्चेमे उचितलाल भाय बजला-

"उमेरोमे ने दस बर्ख छोट छह, तँए ओते पाछू रहब उचिते भेल किने। तइले चिन्ता किए करै छह।"

उचितलाल भाइक बात सुनैकाल गणपतिकेँ जेना पतालक तरसँ कोनो उड़नछू गोला जगि गेल होइ तहिना बाजल-

"भाय साहैब, दस बर्ख अहाँसँ छोट छी मुदा अहाँ अखनो ओहिना तना-उतार छी आ हम..!"

गणपतिक विचार उचितलाल भायकेँ बंशीक उन्टा घाव जकाँ गलफड़मे लगि गेलैन। तँए अपन जान बँचबैत बजला-

"गणपति, तोरो ठेकान हेतह जे जहियासँ हमरा देखैत एलह तहियासँ हँसुआ, खुरपी आ कोदारि हाथसँ चलबैत देखैत एलह, अखनो चलबै छी, सेहो देखिते छहक। मुदा तूँ सभ दिन वेपारीक तरजू-बटिखाड़ा धेने रहलह तँए तोहर चलान पहिने कटि गेलह आ हमर कुशियारक पुरजी जकाँ, पछुआ गेल अछि। आगू बाजह।"

अखन तक गणपति धारक कछेर कहियौ आकि पोखरिक कछेर कहियौ, कछेरेक काते-कात कच्छर कटैबला जकाँ बाजि रहल छल जइसँ परिवारक जे मुराम जगह अछि से छुटि जाइ छेलै मुदा तेकरा पकैड़ गणपति बाजल-

“भाय साहैब, अपन परिवार-ले घरो नहि बना सकलौं, भलेँ अपने किए ने सभदिन कोठेमे रहल होइ मुदा परिवार..!”

परिवार लग अबिते गणपति थकथका कऽ रूकि गेल। थकथकाइक कारण भेल जे एक दिस परिवारजनक दुरबेवहार आगूमे ठाढ़ भऽ गेलै आ दोसर दिस अपन परिवारक बीच कएल सुबेवहार ठाढ़ सेहो छेलइ।

उचितलाल भाय मने-मन विचारि नेने छला जे जखन समाजक हैसियतसँ गणपतिक जिज्ञासा करए एलौं तखन गणपतिक मनमे जेतेक सोग-पीड़ा छै सबहक निराकरण विचार दैत ओकरा धोइत चल जाएब। धोइत-धोइत अनेरे ने ओहन सीमापर पहुँच जाएब जैठाम जीवन-मृत्युक बीच गणपति ठाढ़ अछि। ..उचितलाल भाय बजला-

“गणपति, तूँ ते अपने होशियार छह, जइसँ सभ बुझिते छह। भऽ सकैए जे अखन दर्द-पीड़ासँ मनमे केतौ विचार दबैक गेल छह, तेकरा पकैड़ बजैत चलह।”

हेराएल वौस भेटने जहिना केकरो मन चंचल भऽ उठैए तहिना गणपतिक मन सेहो चनचना उठल-

“से की भाय साहैब, से की?”

उचितलाल भाय बजला-

“गणपति, लोमस बाबाक नाओं मन छह आकि बिसैर गेलह?”

गणपतिक मनमे जेना धक-दे उठल, तहिना बाजल- “हँ, हँ भाय साहैब, वएह लोमस बाबा ने जे लोहिया कपारपर रखि रौद, बसात, शीत,

पानि सभ बितौलैन?"

गणपतिक उत्सुकता देखि उचितलाल भाय बजला-

"एकटा बात आरो मोन पाड़ि दइ छिअ।"

'मोन पाड़ब' सुनि गणपतिक मन आरो उत्सुक भऽ गेल। बेसी पियासल पथिक जकाँ गणपति बाजल-

"से की, से की भाय साहैब?"

उचितलाल भाय बजला-

"वएह लोमस बाबा रामकेँ घर बन्हैकाल, माने जंगलमे की कहने रहैन से मोन छह कि बिसैर गेलह?"

गणपति बाजल-

"अपनो बाप-पुरुखाकेँ बिसैर सकै छी। वएह ने रामकेँ कहने रहैन जे चौदहे बर्खक बनवास-ले घरक ओरियान करै छी, एहने बनवासी छी।"

गणपतिक सहटैत विचार देब उचितलाल भाय बजला-

"अखन पोथी-पुरानक बात छोड़ह। अखन एतबे बुझह जे लोमस बाबाक छातीक एकटा रूइयाँ झाड़ैमे ब्रह्माकेँ केते दिन लगै छैन? मुदा से गनैक कोन काज छह। अपन घर-परिवारक गप-सप्प कहह।"

उचितलाल भाइक विचार सुनि गणपतिक मन जेना हल्लुक भेल तहिना बाजल-

"भाय साहैब, अनका जकाँ हम कहियो गलत उपार्जन नइ केलौं।"

उचितलाल भाय बजला-

"की गलत उपार्जन?"

उचितलाल भाइक जेना मनक बात गणपति बुझि गेल तहिना बाजल- "भाय साहैब, अहाँ मने-मन बुझैत हएब जे दरमाहाक हिसाबसँ

बहुत बेसी काज गणपति केलक अछि, से केतएसँ आनलक।"

अपन झोरा पटकैत उचितलाल भाय बजला-

"बेसी केलह कि कम केलह से तँ कमा कऽ केलह, आकि केतौ हाथ मारि केलह से ते अपने मुहेँ ने बजबह। दुनियाँ मानए कि नइ मानए ओ ओकर काज छिऐ।"

दुनियाँक मोटा हल्लुक होइते गणपति बाजल-

"भाय साहैब, अहाँ बुझिते हएब जे पाँचटा बेटा-बेटीकेँ एम.ए.,बी.एल., कानूनक डिग्री दिआएब ओहिना भेल हएत। तैसंग घरक बुतातक आ लत्ता-कपड़ा इत्यादि-इत्यादि जे खर्च भेल ओ केतएसँ आएल। किए तँ देखौआ दरमाहा जेते छल तइ हिसाबसँ काज बेसी बुझिये पड़ैत हएत।"

उचितलाल भाय बजला-

"हमरा की बुझि पड़ैए आ की नइ बुझि पड़ैए से बिना बजने तूँ केना बुझबह। सबहक यएह ने दायित्व अछि जे दुनियाँकेँ देलिऐ आकि दुनियाँक लेलिऐ।"

गणपति बाजल-

"इमान-धर्मक परीक्षण-ले सभकेँ अपन-अपन मनमे राम छैन्हे, तिनके आगू कहै छी। अपने जेते दिन नोकरी केलौं तइ बीचमे परिवारो चलेलौं आ धिया-पुताकेँ पढ़ा-लिखा एक सीमापर सेहो पहुँचा देलिऐ। ई तँ भेल जीवनक एक पक्ष। दोसर पक्ष ईहो ने भेल जे अपन चौबीसो घन्टा ओकरे, माने वेपारीकेँ घर परिवारसँ कारोबार धरि अपने जकाँ करबो केलिऐ। तइ बीचक जे जीवन अछि, सएह ने अपन भेल।"

गणपतिक विचार सुनि उचितलाल भाय बजला- "रस्तेक काज भेलह। आगू बाजह।"

गणपति बाजल- “भाय साहैब, झाँपल-तोपल बात नइ बजियौ। किए तँ अपने मन कहैए जे जँ केतौ अपन गलती नइ भेल तँ एहेन दिन देखए किए पड़ि रहल अछि।”

गणपतिक साधल बात सुनि उचितलाल भाय थकमकेला। थकमकाइक कारण भेलैन जे जे बात गणपति आइ बाजि रहल अछि, ओ ओइ दिन किए ने बुझलक जइ दिन एहेन परिस्थितिक बीच जीवन पड़ल। ओना, आजुक डिग्री-डिप्लोमा माता-पितासँ दूरी नहि बना रहल अछि सेहो बात नहियेँ अछि। जाधैर जिनगीक चढ़ाव-उतारक बीच सम्बन्ध नहि बनत ताधैर माता-पिताक बीच जे आक्रोश आइ बढ़ि रहल छैन ओ रस्तापर केना औत। हजारो बर्खक गुलामीक बीच पलल अपन समाज, जे मनुक्खक जिनगीक धार कहियो नहि पकैड़ सकल, मुदा भावात्मक रूपेँ मनमे नहि पोसलक, सेहो बात तँ नहियेँ अछि...।

उचितलाल भाइक मनमे विचारक ओ मोड़ लेलकैन जेना महाभारतमे साए श्लोकक पछाइत एकटा दृष्टिकुटि अछि। मोड़ अबिते अपना दिस तकलैन तँ बुझि पड़लैन जे अपने परिवारक पनचैतीमे पहुँच रहल छी। अखन तँ अपने मात्र गणपतिक विचार सुननिहार छी, वक्ता तँ गणपति अपने अछि। अपनाकेँ सामंजस करैत उचितलाल भाय बजला-

“गणपति, अखन हम सुननिहार मात्र छी, पहिने अपन पेटक सभ बात बाजह।”

गणपति बाजल-

“भाय साहैब, केलहा सभ पानिमे चलि गेल।”

गणपतिक बात सुनि उचितलाल भाय बजला, “मर्र..! ई की भेल..! हम सभ बात बुझबे ने केलौं आ अपन निर्णय गणपति अपने कऽ लेलक।”

उचितलाल भाय बजला- “से की केलहा सभ पानिमे चलि गेलह?”

गणपति बाजल- “भाय साहैब, पहिल बेटा जखन बी.ए. केलक तखन जे खुशी भेल ओ जिनगीमे एते खुशी कहियो ने भेल छल। अपन बाँहि-बलक कमाइसँ बेटाकेँ एम. बी.ए. सेहो करेलौं। ऊँचाइक एक सीमापर पहुँचेलौं। तेकर बादोक जे चारू भाए-बहिन अछि, सभकेँ एम.ए. तक पढ़ेलौं। मुदा... ।”

उचितलाल भाय बजला-

“की मुदा?”

‘मुदा’ सुनि गणपति फेर बाजल-

“भाय साहैब, जाँध केना टुटल से बुझले हएत जे भोरमे फूलक गाछ लग साँढ़ पटैक देलक।”

गणपतिक बात सुनि उचितलाल भाइक मन पुलकलैन, पुलकलैन ई जे अन्हार रातिक चारि बजे भोरमे फूल तोड़ैक कोन खगता भेल। मुदा बजला नहि। एतबे बजला-

“अखन की स्थिति छह?”

‘स्थिति’ सुनिते गणपतिक आँखि नोरसँ ढबढबा गेल, बजला-

“नीक जकाँ इलाज होइत तँ अखन नइ मरितौं। मुदा आब तँ... ।”

❑

शब्द संख्या : 3199, तिथि : 09 अक्टुबर 2020

पएर तरक धरती डोलि गेल

जिनगीक अग्नि परीक्षणक बीच पड़ल रतनलालक मन एक दिस जहिना जरि रहल अछि तहिना दोसर दिस सेहो पकिये रहल अछि। आगिमे माटि पकने पजेबा आ लोहा पकने नीकसँ नीक हथियार बनैए तहिना ने मनुक्ख सेहो तँ मानवता पेबिये सकैए। मुदा..!

दरबज्जापर बैसल रतनलाल मने-मन सोचि रहल अछि जे आब की करब? तहीकाल आगूक रस्ता धेने, माने दरबज्जाक आगू-देने संतोखी भाय कमरसाइर[10] जा रहल छला की रतनलालपर नजैर पड़लैन। ओना, रतनलाल मुड़ी गोड़ि अपन जीवन ताकि रहल छल, मुदा केकरो चाइलिक आगम सुनि आगू तकलक की संतोखी भायकेँ देखलैन। देखिते रतनलाल बाजल-

“भाय साहैब.! आउ-आउ..!”

रतनलालक बोलीक धड़कपनसँ संतोखी भाइक अपन मन कहलकैन जे रतनलाल कोनो बेर-बिपैतमे पड़ल अछि। रतनलालक दरबज्जा दिस बढ़ैत संतोखी भाय बजला-

“कोन जिनगीक जंजालमे पड़ि गेल छी से नहि जाइन। दिन-राति काजक पाछू एकबट्ट केने रही छी तैयो अथाहे भेल जाइए।”

संतोखी भाइक बजैक पाछू विचार छेलैन जे दुखो तँ दुखक एकटा दवाइ छीहे। कहब केना? मानि लिअ अपना कुत्ता काटि नेने अछि आ अपनेकेँ नढ़िया, दुनू इलाजक ‘नो आनसर’ घटना छीहे। भलेँ इलाजो

छइहे आ होइतो छइहे! मुदा इलाज भेलो पछाइत 'नो आनसर' घटना नहि कहबै सेहो बात नहियेँ अछि। अपन तबाही देखबैक कारण संतोखी भाइक एहने छेलैन। ओना, रतनलाल चढ़न्त जिनगीक एक्कैस बर्खक नौजवान, जेकरा मनमे हारि नहि जीबैक अनेको बाट ताकि पकड़ैक शक्ति जगि चुकल अछि मुदा ओ तेना भऽ कऽ सकताएल नहि अछि तँए दलदलीक रंग-रूप अधा-छिधा चढ़ले अछि। रतनलालक साधल चुप्पी देखि संतोखी भाइक मन अपने कहलकैन, एहनो तँ सम्भव भइये सकैए जे रतनलाल अपन व्यथीत विचार ई सोचि नहि बाजए चाहैए जे केकर के बेथा सम्हारै छै, तँए अनेरे मुहोँ दुइर करब नीक नहियेँ भेल। तइ बीच संतोखी भाय रस्तासँ आगू बढ़ि रतनलालक दरबज्जाक चौकीपर आबि बैसला।

बी.ए. पास रतनलाल अपन परिवार चलबैक भार अपना कन्हापर लऽ लेने अछि। ओना, पैछला साल, माने रतनलालकेँ बी.ए. पास केलाक पछाइत पिताक मृत्यु भऽ गेलैन आ माइयो पुरान परम्पराक लोक, जे कोनो बेथा-कथा देखि-सुनि एते बोल-भरोस तँ दइते छैन जे पिता नइ छथुन तँ नइ छथुन मुदा माए बनि खुट्टा जकाँ तँ ठाढ़ आगूमे छिअहे। मुदा लगले कोनो बेर एलापर सेहो कहिते छैन जे 'हम किछु छी मुदा छी तँ महिले ने। आ तूँ केतबो बच्चा छअ तैयो तँ पुरुखे भेलह किने।'

बच्चेसँ रतनलालक झुकाव वैचारिक रूपमे सुविचार दिस बढ़ए लगल। जहिना जिनगीक शुरू अक्षर, माने पढ़ै-लिखैक, 'अ' होइए तहिना ने ओ माने वएह 'अ' मृत्युक सीमा धरि जीवित रहिते अछि। भलेँ पछातिक सीखल-पढ़ल अबैत-जाइत किए ने चलैत रहउ। बच्चेमे रतनलाल सीख चुकल छल जे माता-पिता पहिल गुरु ओहिना नहि होइ छैथ, हृदयक दलदलीसँ दलमलित करैबला सेहो होइते छैथ। बिनु हृदयक गुरुक कमी थोड़े धरतीपर अछि। तहूमे ओहन जे पहिने दीक्षे परसैए। माता-पिताक सिखौल विचार जे 'बौआ, झूठ नइ बाजी, चोरी-छिनरपन

नइ करी, केकरो नीक नइ कएल हुअए तँ अधलो नइ करिऐ। जहाँ धरि हुअए तहाँ धरि अपनासँ खसल-पड़ल, भूखल-दुखलकेँ एक कौर अन्न आ एकटा नीक बोलक संग बाँहि पकैड़ उठबैक कोशिश करी।

मिडिल स्कूल तक अबैत-अबैत रतनलाल गुरुक (शिक्षक) मुहेँ अनेको कुरीति जे समाजमे कोढ़ बनि कोढ़-करेजकेँ खखोरि-खखोरि खा रहल अछि ओइमे सुधारक जरूरत अछि, से बुझि मानि चुकल अछि। ओ तँ ताधैर नहि हएत जाधैर सुधारनिहार नहि हएत। कौलेज तक अबैत-अबैत रतनलालक मन मानि चुकल छल जे जाबे समाज नहि सुधरत ताबे ने देश सुधरत, ने दुनियाँ आ ने बेकती।

कौलेज छोड़ला पछाइत, माने बी.ए. पास केलाक किछुए दिनक पछाइत पिता, गोविन्द बीमार पड़ि गेलखिन। पिताक पूर्वजक देल सम्पैत, माने बपौती सम्पैत रतनलालकेँ पाँच बीघा जमीन अछि, जइमे बीघा भरि गाछी-बिरछी, खढ़-खड़होरिक संग बाँकी चारू बीघा जोतसीम अछि। सालभरिक इलाजमे, माने गोविन्दक बेमारीक इलाजमे रतनलाल अपन खुट्टा परक जोड़ो भरि बरदो आ गाछीक कटैबला गाछो बेच लगा चुकल। मुदा बेमारी नहि छुटलैन, गोविन्द मरि गेला।

अखन तक, माने 1990-95 इस्वी तक देशक स्वतंत्रताक घटनाक चर्च वातावरणमे पूर्ण रूपेँण जीवित छल, जइसँ देशभक्तिक जिज्ञासा नव पीढ़ीमे सेहो पनैपिये रहल छेलइ। रतनलालमे सेहो समाज-सेवाक विचार नीक जकाँ जागि चुकल छल। सामाजिक परिवेशमे जहिना स्वतंत्रता संग्रामक गाथाक संग कथाक सेहो गुणगान चलिये रहल छल...।

पिताक मृत्युक पछाइत रतनलाल अपन सम्पैत देखि मनमे रोपि लेलक जे घरसँ बाहर नोकरीमे जेतेक कमाएब तइसँ बेसी अपन सम्पैतसँ उपार्जन कऽ सकै छी। तहूमे अपन संगी-साथीक संग पूसा, ढोली, सबौरक कृषि मेला सेहो देखि चुकल छल। जइसँ कृषिक गुण बुझि

आकर्षित सेहो भइये चुकल छल। अपन जीवनकेँ कृषि (खेती) आधारित बना रतनलाल परिवारक जिनगी शुरू केलक। ओना, जिनगी तँ रतनलाल कृषिपर आधारित बनौलक मुदा मनमे कौलेजक विचार सेहो औढ़ मारिये रहल छल। औढ़ ई मारि रहल छल जे ओ जीवन कोन जीवन भेल जे सोझे खाइत-पीबैत बीता लेलौं मुदा केलौं किछु ने।

पढ़ल-लिखल रतनलाल समाजमे पसरल अनेको तरहक, माने सामाजिक, आर्थिक, वौद्धिक इत्यादि-इत्यादि कुरीतिक संग कुसंस्कारोकेँ नीक जकाँ देखि रहल छल। जखन-जखन कौलेजक पोथी उनटा-उनटा रतनलाल पढ़ै छल तखन-तखन समाजक बीच पसरल नव-नव रीति-कुरीति सभ आगूमे अबैत रहल। ओना, पोथीक विचार आ समाजक बीचक जे वैचारिक वातावरण अछि ओइमे ओते विषाक्तता नहि बुझि पड़ि रहल छेलै, जेते वास्तविक रूपमे अछि। किए, तँ बेटी बिआहक लेन-देन–दहेज–केँ सभ अधला कहिते छैथ मुदा बेवहारिक रूप की अछि सेहो नहि जानि रहला अछि, ईहो बात नहियेँ अछि। खुदरा-खानिक, खुदरा-खानि भेल कम-आँट पेटक लोक, कोन गप जे पचास बीघा जमीनबला एहनो परिवार तँ अछिए जे खेत बेच बेटीक बिआह करै छैथ।

रतनलाल जखन कौलेजमे पढ़िते छल तखने पिताक विचार मानि बिआह कऽ नेने छल। एकटा सन्तानो भइये गेल छै। ओना, पिताक विचार, माने बिआह करैक विचार अपन विचारानुकूल बनौला पछाइत रतनलाल बिआह केलक। माने ई जे समाजक बीच जे दहेजक कारोबार अछि, तइसँ अलग भऽ जँ अपन कारोबार–माने बिआहक–रहत, तखने बिआह करब। ओना, अखन तक बालो-बिआहक चलैन अछिए, तँए कोनो आपैत नहि। बालो-बिआहक चलैन अखन तक समाजमे पसरले छल। जइसँ बिआहक की उम्र हेबा चाही, माने केते उमेरमे बिआह हेबा चाही, से हेराएले छल। खाएर जे छल मुदा समाजक एकटा प्रमुख काजो तँ ओही चलैनमे ने चलिये रहल अछि।

समाजक बीच झूठ बाजब सेहो एकटा कुरीति अछिए। झूठ बजनिहारोक कलाकारी रंग-रंगक संग कुरंग-सुरंग बेदरंग सेहो अछिए। कहब से की, कियो कहता जे अहींटा एहेन बेकती समाजमे छी जैठाम हम झूठ नहि बजै छी। बाँकी ठाम बजबो करै छी आ नहियोँ बजै छी। कियो कहता जे कोट-कचहरीमे झूठ बजै छी मुदा आनठाम झूठ नहि बजै छी। मूल प्रश्न अछि झूठ आ सत्यक। वैचारिक रूपमे झूठो अछि आ सत्यो अछि। एकरे बेवहारिक रूप अधला काज आ नीक काज सेहो अछिए। सबहक बीच दुनू अछि, माने अधला विचारक अधला फल हएत आ नीक विचारक नीक फल हएत। तहिना अधला काज केने अधला हएत आ नीक केने नीक हएत। मुदा समाजक बीच जखन ठाढ़ भऽ देखब तँ बुझि पड़त जे नीक काजक संग अधला काजक चलैन समाजमे बेसी अछि आ सत्यक (बजैक) संग नीक काजक चलैन कम अछि। अपने केलहा लोक भोगैए, एहनो माने ईहो विचार कण्ठ-कण्ठमे समाएल अछिए। सभ किछु सोझामे रहितो सोझासँ परोछ केना भऽ जाइए, अद्भुत लीला अछिए।

समाजक बीच सेवाकेँ, माने समाज-सेवाकेँ अपना रतनलाल पहिने तीनटा संगी, जे संगे-संग कौलेजमे पढ़ने छल, केँ समाजमे (गाममे) पसरल झूठ सत्यक मुद्दा बना वैचारिक एकरूपता बनौलक। चारू गोरे मिलि निर्णय केलक जे समाजमे पसरल झूठो अछि आ अधला काजो अछिए जइसँ समाज आगू मुहेँ नहि बढ़ि अपनेमे तेना ओझराएल अछि जे आपसी मतभेद जे अछि से तँ अछिए जे एक-दोसराक बीच दुश्मनीक कनाइर सेहो काना-कानी अछिए जइसँ सदिकाल केतौ-ने-केतौ झगड़ो-झंझट होइते अछि। झगड़ो-झंझट कि कोनो एकेरंगक अछि, केतौ गारि-गरौवैल तँ केतौ मारि-पीट, केतौ केश-केशौवैल सेहो होइते अछि। जइसँ समाजमे संगठनक जगह विघटन लइये लेने अछि। ओना, एहनो होइते अछि जे झगड़ा-झंझटक पछाइत जखन मन शान्त होइए

तखन अपन कएल काजक पछतावा सेहो होइते अछि, मुदा से होइए समय बीतला पछाइत, जखन बँचैक सम्भावना समाप्त भऽ गेल रहैए।

चारू गोरे, माने रतनलाल, धीरजलाल, सोहनलाल आ मनमोहन एकठाम बैस विचार केलक जे जाबे तक समाज नहि सुधरत, माने समाजक लोक सही रस्तापर नहि औत, ताबे तक गाम समृद्धिक रस्तापर नहि औत, माने ताबे तक गाम समृद्धिक रस्ता नहि पकड़त। नव उमेरक चारू गोरे, जे तीन साल पहिने कौलेज छोड़ने छल, बच्चेक स्कूलसँ शिक्षको मुहसँ आ अपनो विद्यार्थीक जीवनोसँ, माने बेवहारिक रूपमे सत्यक महत्व बुझियो रहल छल आ निमाहितो तँ आबिये रहल छल, ओना झूठ बजैक जाल आकि अधला काज करैक जालकेँ गहराइसँ बुझि नहि पेब रहल छल। मुदा तैयो नीक-अधलाक विचार तँ मनमे छेलैहिये। नीक आकि अधला बुझियो केना पबैत? भूगोलमे ई बात तँ जरूर पढ़ने छल जे धरतीक भीतर, माने नीचाँ सतहमे पानि अछि, मुदा आँखिक सोझामे थोड़े देखैए। ओ तँ तखन भेटैए जखन इनार वा पोखैर खुनाइए। अहाँक गबाह जँ अनुभवी विद्वानक लिखल किताब (पोथी) अछि, तँ ओकरो, माने नइ माननिहारकेँ सुनल-सुनाएल विचार सेहो अछिए। तहूमे जेकरा ओइ किताबसँ भेँट नहि छै आ ने ओहन भूगोलक शिक्षकेसँ भेँट छै तखन ओ अहाँक विचारकेँ किए मानत। तहूमे गामक जे समाज अछि ओ रंग-बिरंगक बातो बजनिहार आ ओहने काजो केनिहार अछिए। जैठाम अन्धबिसवासक जाल समाढ़ जकाँ पसरल अछि आ मनुक्खक जिनगीकेँ पशुवत जिनगीक रूपमे परिणत केने अछि, तैठाम मानवीय विचारकेँ स्थापित करब धिया-पुताक खेल नइ ने छी।

अखन तक चारू गोरे- रतनलाल, धीरजलाल, सोहनलाल आ मनमोहन, समाजकेँ ओहने देखि रहल छल जेहेन समाज ठाढ़ अछि। ओकरा भीतर की अछि आ की नहि अछि, से नहि बुझै छल।

अखन तक चारू गोरे, माने रतनलाल, धीरजलाल, सोहनलाल आ

मनमोहन वैचारिक रूपमे समाजक बीच छल मुदा एकाएक पहिने रतनलालक मनमे उतरल, पछाइत सबहक मनमे उतरलै जे सिर्फ वैचारिके रूपसँ काज नहि चलत। ओकरा बेवहारिक रूपमे उतारए पड़त। देखिते छी जे जहिना कहल जाइ छै जे शिकारी आएत, जाल बिछाएत, दाना छीटत, तइ लोभमे नइ पड़ी। मुदा पड़ितो सभ अछि आ कहितो तँ सभ अछिए। रामायणिक राम-लक्ष्मणक भैयारीक सम्बन्धक चर्च सभ करितो अछि, बुझितो अछि मुदा समाजक बीच जे भैयारीक सम्बन्ध बनि गेल अछि ओ तँ एहेन बनियेँ गेल अछि जे भैयारीक सम्बन्ध दियादीमे बदैल गेल अछि आ दियादक विषयमे कहल जाइए जे राहड़िक दालि आ दियाद जेते गलैए तेते स्वादिष्ट बनैए। ओना एकर सोल्होअना माने ई नहि भेल जे राम-लक्ष्मणक भैयारी जकाँ समाजमे भैयारी नहि अछि, तेहनो अछिए मुदा अछि दूधक डारही जकाँ, जइसँ देखमे अबिते ने अछि जे एहनो अछि।

संजोग बनल, एकटा घटना भेल। ओना एकरा घटना नहि, काजक चलैन कहब बेसी नीक हएत। भेल ई जे रूपलाल पाँच कट्ठा खेत[11] जीतनसँ बेचनामा लइक गप-सप्प रतनलाल आ धीरजलालक बीच केलैन, पचास हजार रुपैये कट्ठा। गप-सप्प भेला पछाइत रूपलाल पचास हजार रुपैआ तत्काल बेना गनि, बाँकी समय जमीन रजिष्ट्री दिनक बना लेलैन। जमीनक गप-सप्प उठिते काने-कान सौंसे गाम बीआ-बान भऽ गेल। खेतक शिकारी सबहक माने खेत लेन-देन करैक शिकारीक बीच शिकार उठल। जमीनपर डाक शुरू भेल। डाकक माने भेल जेते दाम जमीनक तय भेल तइसँ बढ़ा कऽ दाम देब। पचास हजार कट्ठा जमीनक दाम साठि हजार रुपैये कट्ठापर पहुँच गेल। जीतन रतनलाल काकाकेँ कहलैन जे भाय साहैब, साठि हजार भेने पाँचो कट्ठा मिला पचास हजारक लाभ हएत तइमे पाँच हजार अहूँकेँ देब। रतनलालक भार अहाँ लिअ जे ओ एतबे बाजे जे हमरा सोझामे गप-सप्प–लेन-देनक–नइ भेल

छल। मकशूदन–रतनलालक चाचा–गामक खेलाड़ी लोक। भरि दिनमे केते झूठ बजै छी आ केते सत्य बजै छी, तेकर ठेकान नहि। जइसँ झूठ-सत्यक बोली बेवहारिक बनियेँ गेल छैन। पाँच हजारक लोभ आकि दिन-दिनक कमाइ बुझि मकशूदन जीतनक भार उठबैत कहलैन-

"जीतन, तोरा-हमरा बीच की कोनो आइयेक सम्बन्ध अछि, तोहर नीक हम नहि करियह, हमर तूँ नहि करह तखन एहेन सम्बन्ध लऽ कऽ की गौड़ पूजब।"

अपन लोभक लाभ देखि जीतन बाजल-

"भाय साहैब, अहाँ किछु भेलिऐ तँ गामक[12] खुट्टे ने भेलिऐ, अहीं सभ बले ने समाज ठाढ़ो अछि आ चलियो रहल अछि।"

अपन सुढ़ियाइत काज देखि जीतन मकशूदन ऐठामसँ सोझे बेचनलाल ऐठाम पहुँचला। बेचनलाल धीरजलालक जेठ भाए। गामक चटसारक लोक बेचनलाल। जहिना राजनीतिक पार्टीक सिद्धान्त नेताक (कार्यकर्ताक) नेताकट-कुर्ताक तरका-ऊपरका जेबीमे रहैए तहिना समाजक विधि-बेवहार बेचनलालक जेबीमे सेहो अछिए। बेचनलाल लग पहुँच जीतन बाजल-

"बेचन, तोरेसँ भेँट करए एलौं अछि।"

बेचनलाल बाजल-

"हम कोन जोकरक छी जे हमर जरूरत अहाँकेँ पड़ल।"

चपाड़ा दैत जीतन बाजल-

"बेचन, जखन धानक खखरियोक काज एक-ने-एक दिन होइते अछि तखन तूँ ते साढ़े तीन हाथक दूटंगा ओहन मनुक्ख छह जेकरा बोल-बाणि माथमे बुधिक संग बुधि-बिचरी सेहो होइते छै तैठाम एहेन बोल-बाणि अपना नीक लगै छह। खाएर जे हुअ, एकटा काजे आएल छी।"

बेचनलाल बाजल-

"केहेन काजे?"

जीतन बाजल-

"कोनो तेहेन मरखाह काज थोड़े अछि, जेहेन काज सदैत चलैए तेहने काजे।"

बेचन बाजल-

"जँ मरखाहे काज रहत तँ की नइ हएत। किछु छी तँ समाज समाज छी किने, समुद्रोसँ गहींर अछि। जे अपना पेटमे हीरो-रत्न रखने अछि आ शंख-डपोरशंख सेहो रखनहि अछि।"

जीतन बाजल-

"कने धीरजकेँ बुझा दहक जे जमीन-जत्थाक गप-सप्पमे नहि पड़त।"

ओना, बेचनलालक चरित्र कमीशन खाइबला सभ दिनसँ अछि मुदा कमीशनक फरिछौठ (तय) नहि भेने काजकेँ भरियबैत बाजल-

"जीतन भाय, अहूँ देखिते छी जे धीरज केहेन जिद्दी अछि, जे पकैड़ लेत से पकड़नहि रहत। कहबो करबै ते ओ मानत कि नहि मानत। जँ नहि मानत तरखन तँ अहाँक काज बिथुत हएत।"

'खग जानए खगक बोल' जीतन बुझि गेल जे पाइक कारोबार छी, जे काज चलत से पाइयेसँ चलत। पाइकेँ अगुअबैत जीतन बाजल-

"तीन हजार रुपैआपर मकशूदन भाय रतनलालक भार लेलैन अछि, तोरा ओते दऽ देबह।"

बेचनलाल बाजल- "बड़बढ़ियाँ।"

मकशूदन, रतनलालक माए लग, माने अपन पितिऔत भौजी लग

पहुँच रतनलालकेँ चेतौनीक शब्दमे कहलखिन- गामक विषयमे माने गामक काजक विषयमे, रतनलाल अनेरे किए पड़ैए। बी.ए. पास केने अछि केतौ नोकरी-चाकरी करह, अपन परिवार चलावह।

रतनलालक माए, मीडिया जकाँ (मध्यस्त जकाँ) हँ-हूँ तँ तत्काल नहि बजली, मुदा टेप रेकार्ड जकाँ सभ बात (मकशूदनक) सुनि ओहिना मनमे अंकित कऽ लेली। दुनू गोरे दुनू दिस भेला। माने मकशूदन सेहो चलि गेला आ सुचित्रा (रतनलालक माए) परिवारक काज बुझि रतनलालकेँ ओहिना हू-ब-हू कहली जेना मकशूदनक मुहसँ सुनने छेली।

माइक मुँहक सभ बात सुनि रतनलाल चुपचाप अपन कोठरीमे आबि, चौकीपर ओंघरा चाचाक (मकशूदनक) एक-एक शब्दकेँ गूथलक। गूथब भेल जहिना रोटीक आँटा गूथल जाइए, मनमे अनेको प्रश्न एकसंग रतनलालकेँ उठि गेल। (1.) की समाजो खास लोकक हाथमे अछि?, (2.) अखन तकक जे जीवन रहल, तइमे हुनकर की योगदान छैन?, जखन पढ़ै छेलौं तखन पिताजी जेना-तेना उपाय केलैन आ जखन ओ बीमार पड़ला तखन अपने गाछ-बिरीछ, बरद बेच इलाज करौलयैन। तइ कालमे ओ अपन कियो ने छला, मुदा..?

अन्तिम विचार रूपमे रतनलालक मनमे प्रश्न उठल जे जँ बेवहार रूपमे हम नइ केकरो प्रेम करब तँ दुनियाँक कोन प्रेमक आशा अपने करब।

संतोखी भाय बजला-

“रतनलाल, मनमे जँ कोनो तरहक अवघात हुअ तँ ओकरा मनमे दाबि कऽ नहि राखी।”

रतनलाल अपन कानक सुनल माइयक मुँहक बात ओहिना बजए लगल जहिना सुनने छल।

रतनलालक सभ बात सुनि संतोखी बजली-

"बौआ रतन, बहुत प्रेम भेने लोक बिआह करैए आ बहुत दुश्मनी भेने खून करैए। यएह दुनू सीमा जीवनक छी, तँए बीचो-बीच चलैक अछि।"

❑

शब्द संख्या : 2346, तिथि : 15 अक्टुबर 2020

❑❑❑

❑❑

❑

दू वर्ष (2019-2020)क कथा लेखन-

606. खिलतोड़ भूमि- शब्द संख्या : 2590, तिथि : 17 जनवरी 2019

607. बैगनक बगान बनरा गेल, तूँ मुँह तकै छह- श. 2590, ति. 22 जनवरी 2019

608 मटरक अजोह दाना- शब्द संख्या : 3473, तिथि : 03 फरवरी 2019

609. फुइसिक रग्गड़- शब्द संख्या : 2225, तिथि : 07 फरवरी 2019

610. उखमज- शब्द संख्या : 3964, तिथि : 16 फरवरी 2019

611. एकभग्गू बेटा- शब्द संख्या : 2286, तिथि : 19 फरवरी 2019

612. अगुताइ भेल : शब्द संख्या : 1054, तिथि : 22 फरवरी 2019

613. थैंक्यू पापा : शब्द संख्या : 965, तिथि : 24 फरवरी 2019

614. किसुनपुराक हाट : शब्द संख्या : 995, तिथि : 25 फरवरी 2019

615. धनखेतीक बैगन : शब्द संख्या : 1051, तिथि : 28 फरवरी 2019

616. चितवनक शिकार : शब्द संख्या : 1071, तिथि : 02 मार्च 2019

617. बुढ़ भेलौं तँ दुइर गेलौं : शब्द संख्या : 1086 , तिथि : 04 मार्च 2019

618. धुआ साड़ी : शब्द संख्या : 1132, तिथि : 06 मार्च 2019

619. राजरोग : शब्द संख्या : 1274, तिथि : 10 मार्च 2019

620. संकल्प : शब्द संख्या : 1520, तिथि : 12 मार्च 2019

621. एकटा नमहर दुख मेटा गेल : शब्द संख्या : 1349 , तिथि : 15 मार्च 2019

622. काजक मोल : शब्द संख्या : 1090, तिथि : 16 मार्च 2019

623. एतए बसव कठिन अछि : शब्द संख्या : 1010, तिथि : 19 मार्च 2019

624. स्वनिर्मित जिनगी : शब्द संख्या : 1091, तिथि : 22 मार्च 2019

625. कपटलालक मृत्यु : शब्द संख्या : 987, तिथि : 25 मार्च 2019

626. गामक ढहल समाज : शब्द संख्या : 966, तिथि : 27 मार्च 2019

627. लजगर लोक : शब्द संख्या : 1003, तिथि : 29 मार्च 2019

628. खरिहाँन उपैट गेल : शब्द संख्या : 1218, तिथि : 02 अप्रैल 2019

629. पगलपन : शब्द संख्या : 1113, तिथि : 04 अप्रैल 2019

630. छलाननक सराध : शब्द संख्या : 996, तिथि : 06 अप्रैल 2019

631. छाती बज्जर केलौं : शब्द संख्या : 1402 , तिथि : 08 अप्रैल 2019

632. नाँहकमे दोख : शब्द संख्या : 1463, तिथि : 16 अप्रैल 2019

633. सग्गा पिऔज : शब्द संख्या : 1530, तिथि : 20 अप्रैल 2019

634. गाछसँ नमहर फड़ : शब्द संख्या : 1003, तिथि : 22 अप्रैल 2019

635. जिनगीमे जान आएल : शब्द संख्या : 1198, तिथि : 25 अप्रैल 2019

636. जे संग नइ औत ओकरा संग नइ जेबै : श. सं.: 1080, ति. : 26 अप्रैल 2019

637. चौरस खेतक चौरस उपज : शब्द संख्या : 998, तिथि : 29 अप्रैल 2019

638. सिकिया नेता : शब्द संख्या : 1023, तिथि : मजदूर दिवस , 2019

639. मुँह खुजिते नाक कटि गेल : शब्द संख्या : 1475, तिथि : 04 मई 2019

640. जेकरे भर तेकरे डर : शब्द संख्या : 1214, तिथि : 06 मई 2019

641. ललियाएल चेहरा करियाएल मन : शब्द संख्या : 1194, तिथि : 09 मई 2019

642. पुरुखक भर : शब्द संख्या : 1109, तिथि : 12 मई 2019

643. भकमोड़मे पड़ि गेलौं : शब्द संख्या : 1411 , तिथि : 15 मई 2019

644. अपन इमान मरि गेल : शब्द संख्या : 1071, तिथि : 17 मई 2019

645. गामक रूप बदैल देब : शब्द संख्या : 1004, तिथि : 19 मई 2019

646. कुभेला : शब्द संख्या : 992, तिथि : 21 मई 2019

647. देखौंस : शब्द संख्या : 945 , तिथि : 23 मई 2019

648. समयसँ पहिने चेत किसान : शब्द संख्या : 1326, तिथि : 25 मई 2019

649. काजक मेहपन : शब्द संख्या : 947, तिथि : 27 मई 2019

650. पनरह किलोक कदीमा : शब्द संख्या : 941, तिथि : 29 मई 2019

651. फेर नढ़रो बेल तर जेती : शब्द संख्या : 1553, तिथि : 01 जून 2019

652. काजक धुनि : शब्द संख्या : 1065, तिथि : 03 जून 2019

653 सोरहामे सुर्रा लगि गेल : शब्द संख्या : 1618, तिथि : 06 जून 2019

654. अगराही : शब्द संख्या : 944, तिथि : 08 जून 2019

655. जेकरे-ले चोरि केलौं सएह कहैए चोरा : श . सं.: 1556, तिथि : 11 जून 2019

656. भौक- शब्द संख्या : 1403, तिथि : 14 जून 2019

657. मनतरक पावर- शब्द संख्या : 1598, तिथि : 17 जून 2019

658. हाल-चाल- शब्द संख्या : 1519, तिथि : 20 जून 2019

659. अधमरु साँपक डँस- शब्द संख्या : 1525, तिथि : 23 जून 2019

660. के मानत?- शब्द संख्या : 1721, तिथि : 29 जून 2019

661. दियादीक फेड़- शब्द संख्या : 1412, तिथि : 03 जुलाई 2019

662. वाह रे आदत- शब्द संख्या : 1455, तिथि : 06 जुलाई 2019

663. कटबी सुइद- शब्द संख्या : 1435, तिथि : 09 जुलाई 2019

664. तिलकौआ छत्ता- शब्द संख्या : 1948, तिथि : 13 जुलाई 2019

665. अपने जिनगी भार बनि गेल- शब्द संख्या : 1539, तिथि : 16 जुलाई 2019

666. कलेश- शब्द संख्या : 1509, तिथि : 20 जुलाई 2019

667. गामक आशा टुटि गेल- शब्द संख्या : 2338, तिथि : 24 जुलाई 2019

668. आब इज्जत नइ बँचत- शब्द संख्या : 2046, तिथि : 28 जुलाई 2019

669. अँगनाक बीरार- शब्द संख्या : 1856, तिथि : 31 जुलाई 2019

670. भेँट-घाँट- शब्द संख्या : 1884, तिथि : 03 अगस्त 2019

671. कोसा- शब्द संख्या : 1999, तिथि : 07 अगस्त 2019

672. दहेजक गाए- शब्द संख्या : 2076, तिथि : 15 अगस्त 2019

673. चलती- शब्द संख्या : 1770, तिथि : 18 अगस्त 2019

674. तीन बुड़िवान- शब्द संख्या : 1901, तिथि : 21 अगस्त 2019

675. एकाधिकारी जाति- शब्द संख्या : 2198, तिथि : 24 अगस्त 2019

676. अपन करखन्ना- शब्द संख्या : 1704, तिथि : 28 अगस्त 2019

677. लड़कपन- शब्द संख्या : 2150, तिथि : 03 अक्टुबर 2019

678. कुदृष्टि- शब्द संख्या : 2435, तिथि : 08 अक्टुबर 2019

679. हकार- शब्द संख्या : 2012, तिथि : 16 अक्टुबर 2019

680. दलखिच्चड़मे घी- शब्द संख्या : 2286, तिथि : 25 अक्टुबर 2019

681. दोहरी दहार- शब्द संख्या : 2154, तिथि : 02 नवम्बर 2019

682. पसेनाक मोल- शब्द संख्या : 1748, तिथि : 06 नवम्बर 2019

683. बुढ़ापा- शब्द संख्या : 2122, तिथि : 10 नवम्बर 2019

684. पुरना घराड़ी- शब्द संख्या : 2092, तिथि : 14 नवम्बर 2019

685. जगरनथिया भोज- शब्द संख्या : 2416, तिथि : 18 नवम्बर 2019

686. कृषियोग- शब्द संख्या- शब्द संख्या : 2010, तिथि : 22 नवम्बर 2019

687. काजक रोप- शब्द संख्या : 2679, तिथि : 21 दिसम्बर 2019

688. खटसमाद- शब्द संख्या : 2909, तिथि : 27 दिसम्बर 2019

689. जीबठपन- शब्द संख्या : 2577, तिथि : 02 जनवरी 2020

690. गोटी लाल- शब्द संख्या : 2364, तिथि : 06 जनवरी 2020

691. अपनाकेँ चिन्हैत चलिहह- शब्द संख्या : 2361, तिथि : 11 जनवरी 2020

692. दहेज- शब्द संख्या : 2431, तिथि : 15 जनवरी 2020

693. जेहेन मति तेहेन गति- शब्द संख्या : 2630, तिथि : 21 जनवरी 2020

694. केते लग केते दूर - शब्द संख्या : 2660, तिथि : 31 जनवरी 2020

695. अपन कर्तव्य आकि उपकार- शब्द संख्या : 2410, तिथि : 05 फरवरी 2020

696. जिनगी भौर भेलह हेन- शब्द संख्या : 2789, तिथि : 10 फरवरी 2020

697. वसन्त पंचमी- शब्द संख्या : 2767, तिथि : 16 फरवरी 2020

698. चुटका सुतरल- शब्द संख्या : 2445, तिथि : 21 फरवरी 2020

699. हारल चेहरा जीतल रूप- शब्द संख्या : 2255, तिथि : 25 फरवरी 2020

700. अग्नि परीछा- शब्द संख्या : 3097, तिथि : 01 मार्च 2020

701. आसीरवचन- शब्द संख्या : 2564, तिथि : 06 मार्च 2020

702. दहिबरी- शब्द संख्या : 2560, तिथि : 12 मार्च 2020

703. सघन बन- शब्द संख्या : 2697, तिथि : 17 मार्च 2020

704. हुसैत लोक- शब्द संख्या : 2602, तिथि : 23 मार्च 2020

705. हुसि गेलौं - शब्द संख्या : 2574, तिथि : 28 मार्च 2020

706. झूठक झालि- शब्द संख्या : 2352, तिथि : 01 अप्रैल 2020

707. दुष्टपन- शब्द संख्या : 2317, तिथि : 06 अप्रैल 2020

708. रहै जोकर परिवार- शब्द संख्या : 2297, तिथि : 15 अप्रैल 2020

709. परिपक्क निरलज- शब्द संख्या : 2232, तिथि : 20 अप्रैल 2020

710. अप्पन काज अपने चिन्हू - शब्द संख्या : 2278, तिथि : 24 अप्रैल 2020

711. लजाउ काज- शब्द संख्या : 2394, तिथि : 02 मई 2020

712. सीमावद्ध जीवन- शब्द संख्या : 2420, तिथि : 01 अगस्त 2020

713. कर्ताक रंग कर्मक संग- शब्द संख्या : 2757, तिथि : 06 अगस्त 2020

714. जिनगीक हिसाब- शब्द संख्या : 2711, तिथि : 11 अगस्त 2020

715. अपना जनैत- शब्द संख्या : 2881, तिथि : 16 अगस्त 2020

716. सुदृढ़ जिनगी- शब्द संख्या : 3460, तिथि : 23 अगस्त 2020

717. मुराम जगह- शब्द संख्या : 3575, तिथि : 31 अगस्त 2020

718. गामक सूरत बदैल गेल : शब्द संख्या : 3340, तिथि : 07 सितम्बर 2020

719. दोसर रस्ता नहि : शब्द संख्या : 2808, तिथि : 13 सितम्बर 2020

720. विचारधाराक भथान : शब्द संख्या : 2659, तिथि : 19 सितम्बर 2020

721. परिवार बिलैट गेल : शब्द संख्या : 3132, तिथि : 26 सितम्बर 2020

722. अनचोकक इजोत : शब्द संख्या : 3339, तिथि : 03 अक्टुबर 2020

723. केलहा सभ पानिमे गेल : शब्द संख्या : 3199, तिथि : 09 अक्टुबर 2020

724. पएर तरक धरती डोलि गेल : शब्द संख्या : 2346, तिथि : 15 अक्टुबर 2020

725. जबुरिया कागज : शब्द संख्या : 3366, तिथि : 22 अक्टुबर 2020

726. बेटाक बिआह : शब्द संख्या : 3734, तिथि : 30 अक्टुबर 2020

727. जीवनमे जान आएल : शब्द संख्या : 3325, तिथि : 06 नवम्बर 2020

728. पोसलाक फल : शब्द संख्या : 3039, तिथि : 12 नवम्बर 2020

728. अन्तिम परीक्षा : शब्द संख्या : 2933, तिथि : 18 नवम्बर 2020

729. गाम आब ओ गाम रहल : शब्द संख्या : 3038, तिथि : 24 नवम्बर 2020

730. जिनकर जीत तिनकर माला : शब्द संख्या : 3025, तिथि : 30 नवम्बर 2020

731. नवका लोक : शब्द संख्या : 3215, तिथि : 06 दिसम्बर 2020

732. काजक उत्तर काज : शब्द संख्या : 3366, तिथि : 12 दिसम्बर 2020

733. घरक खर्च : शब्द संख्या : 3731, तिथि : 19 दिसम्बर 2020

734. समाजक भागे : शब्द संख्या : 3338, तिथि : 25 दिसम्बर 2020

❑❑❑

Endnote

[1] दायित्व

[2] एक बेकतीक

[3] शंख माने भेल गिनतीमे जे पद्मक पछाइत शंख अबैए

[4] अंगरेजक विरोध

[5] विचार

[6] उपासक

[7] ससुर

[8] मृत्युकालक समय

[9] विचलन माने घुसुक-फुसुक

[10] बरहीक कारोबारक जगह

[11] जमीन

[12] समाजक